तुलसी के दल

रचयिता

तुलसीराम वैश्य 'भास्कर'

बी० एस्-सी० एल्० टी०, एल्-एल्० बी०

वाइस-प्रिंसिपल, नेशनल इंटर कॉलेज, लखनऊ

प्राप्ति-स्थान

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ

श्रीचंद्रभानुजी गुप्त
मुख्य-मंत्री, उ० प्र०
को
सादर, साभार

सम्मति

काव्य जीवन का परिष्कृत एवं सुसंस्कृत रूप है। युगों से कविता को परिभाषा के पाश में बाँधने का प्रयास हो रहा है, परन्तु उसे शब्दों के बंधन में सीमित कर देने की शक्ति और सामर्थ्य किसमें है ? इस दिशा में कौन सफलीभूत हुआ है ? कविता आज भी वायु की भाँति स्वच्छन्द और मन्दाकिनी की भाँति चिरकाल से अबाध गति के साथ साहित्य की भूमि पर जन-कल्याणार्थ बहती चली जा रही है। कविता की शक्ति बड़ी विचित्र और दिव्य है। कविता की सजीव शक्ति नीरस पदार्थ को सरस बनाकर वस्तु-विशेष में परिवर्तन कर देती है। फिर भी सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट बौद्धिक प्राणी कब संतोष करने लगा ? सागर की अतुल जल-राशि से रत्नों को खोज लानेवाला प्राणी, सहस्रों मील प्रति घंटे के हिसाब से आकाश में उड़नेवाला मानव और माउन्ट एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने की अद्भुत शक्ति रखनेवाला मानव शान्त होकर कब बैठना जानता है। कविता मानव-हृदय के समान ही रहस्य-पूर्ण है। कविता की अनेक परिभाषायें हैं। पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने अपनी-अपनी इच्छानुसार कविता का रूप निर्धारित करने का प्रयत्न किया है। अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध विद्वान् मैथ्यूआर्नाल्ड के मत से "कविता मूल में जीवन की आलोचना है," कवि कालरिज के शब्दों में "कविता उत्तमोत्तम शब्दों का उत्तमोत्तम क्रम-विधान है।" कोमल भावनाओं के चतुर चितेरे मिल्टन ने कविता को सरल, प्रत्यक्ष मूलक और रागात्मक माना है। आलोचक प्रवर जॉनसन के मतानुसार "कविता सत्य एवं प्रसन्नता के मिश्रण की कला है, जिसमें बुद्धि की सहायता के लिये कल्पना का प्रयोग किया जाता है।" प्रकृति-कुशल चित्रकार वर्ड्सवर्थ का अभिमत है कि "कविता शांति के क्षणों में स्मरण की हुई उत्कट भावनाओं का सहजोद्रेक है।"

अब भारतीय दृष्टिकोण के प्रति ध्यान दीजिए। 'साहित्य-दर्पण' के यशस्वी प्रणेता आचार्य विश्वनाथ ने रस को काव्य की आत्मा निर्धारित करते हुए रस-युक्त वाक्य को काव्य माना है। "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।" पण्डितराज जगन्नाथ ने 'रसगंगाधर' में रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करनेवाला शब्द-काव्य माना है। "रमणीयार्थः प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।" 'काव्य-प्रकाश' के सुयोग्य रचयिता आचार्य मम्मट ने दोष-रहित गुणवाली एवं कभी अनलंकृत भी शब्द और अर्थमयी रचना को काव्य कहा है। "तद्दोषौ शब्दार्थौ सुगुणा अनलंकृती क्वापि।"

इन उपर्युक्त परिभाषाओं पर विचार करने के अनन्तर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि काव्य उत्तमोत्तम शब्दों, अभिव्यक्त कोमल भावनाओं की कलात्मक रचना है। 'भास्कर' जी के काव्य को ध्यान में रखकर जब हम काव्य की परिभाषा निर्धारित करते हैं, तो प्रतीत होता है कि वास्तव में काव्य कोमल भावनाओं का सजीव रूप तथा कलात्मक अभिव्यक्ति है। 'भास्कर' जी का काव्य आद्योपांत कोमल भावनाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति हो उनके काव्य में जीवन का वह पक्ष व्यक्त हुआ है, जिसका संबंध मधुर अनुभूतियों से है। उनकी कला का प्रयोजन है आनन्द और उल्लासमयी भावनाओं का चित्रण। उनके लिये कला सृजन की आवश्यकता-पूर्ति के लिये है। कला आत्मानुभूति के अर्थ में भी उपयोगी मानी गई है। इस दृष्टि से भी 'भास्कर'जी का काव्य महत्त्व-पूर्ण है।

काव्य की परिभाषा और 'भास्कर'जी के काव्यादर्श का अध्ययन कर लेने के अनन्तर अब हम अपने आलोच्य कवि की सत्यानुभूति एवं कोमल कल्पनाओं के आधार पर प्रसूत काव्य के वर्ण्य विषय पर आते हैं। यह सत्य है कि कवि स्वकाव्य में कोमल भावनाओं की कलात्मक अभिव्यंजना करता है। वह वर्ण्य विषय जिसका आधार सत्य है, यथार्थ है तथा अनुभूति-सम्पन्न है, निश्चय हो प्रभावशाली और हृदय-स्पर्श करने की अद्भुत क्षमता रखता है। 'भास्कर'जी का काव्य-विषय या वर्ण्य विषय कोमल भावनाओं एवं अनुभूतियों से सुसम्पन्न है। हमारा कवि प्रेमानुभूति, विरहानुभूति, स्पष्टोक्तियों, निरुक्तियों तथा हृदय की उदात्त भावनाओं, जिसे हम भक्ति कह सकते हैं, का गायक है। वर्ण्य विषय में सर्वप्रथम प्रेम को लीजिए। 'भास्कर'जी का सम्पूर्ण ग़ज़ल-साहित्य प्रेममयी ऊर्मियों से ओत-प्रोत है। यह प्रेम उभय पक्षों में समान रूप से व्यग्रता उत्पन्न करता रहता है। कवि ने स्वयं कहा है—

> यह मेरा प्रेम जो चंचल किये रहता है मन मेरा,
> सुना है, अब उन्हें भी चैन से सोने नहीं देता। (ग़ज़ल ९)

इस प्रेम के प्रवेग में कवि अश्रु से प्रेयसि के चरणों की रज धोने का आकांक्षी न होकर उसकी चरण-रज का चुम्बन करने का अभिलाषी है—

> अश्रु से धो के बहाते नहीं मिट्टी में हम ;
> गर्द उस पाँव की हम चूम लिया करते हैं। (ग़ज़ल ११०)

कहना न होगा कि 'भास्कर'जी की प्रेम-विषयक ग़ज़लों की अभिव्यंजना-शैली पर उर्दू शायरी का व्यापक प्रभाव है। प्रेम के पथ पर कवि ने आँख लड़ने, उसाँसें भरने (ग़ज़ल ११८), दिल का रौंदा जाना (ग़ज़ल १०९), सौंदर्य-सागर में डूब

जाना, (ग़ज़ल १०८) आँसू की धारा में घुलता जाना (ग़ज़ल १०६), आदि का अनुभव है। उर्दू शायरी में प्रेम के मार्ग पर अग्रसर प्रेमी की जो व्यग्रता, बेचैनी और बेबसी की अभिव्यक्ति बारम्बार हुई है, वह 'भास्कर'जी की ग़ज़लों में बड़ी सरसता के साथ व्यक्त हुई है। देखिए—

धीरे-धीरे यह हृदय रौंदा निकट आते हुये,
और प्राणों पर बना दी लौट कर जाते हुये। (ग़ज़ल ८९)

तथा—

अंत में परिणाम जो होगा, सो होगा आज ही ;
प्राण खैंचे ले जा रहे हैं ध्यान में आते हुये। ग़ज़ल (८९)

प्रेम-पथ, इच्छाओं का दमन भारतीय परम्पराओं के सर्वथा अनुरूप और अनुकूल रहा है। कवि ने परम्पराओं का परिपालन करते हुए कहा है—

चलो प्रेम-पथ पर तो इच्छायें मारो;
न प्रहरी रहेंगे न पहरा पड़ेगा। ग़ज़ल (९०)

संसार के समस्त जीवों में कवि सर्वाधिक संवेदन प्राणी होता है। वह व्यापक सृष्टि के अनेक तत्त्वों से अनुप्राणित होकर काव्य के कोमल पथ पर सँभाल-सँभालकर पग आगे रखता हुआ अग्रसर होता है। परंतु इस सबके बावजूद काव्य-विषयक या काव्यगत उसकी व्यक्त मान्यताएँ होती हैं, जिनको ग्रहण कर वह काव्य-कुसुम की अंजलि साहित्य-देवता के चरणों पर समर्पित करता है। विश्व-कवि तुलसीदास ने "स्वांत: सुखाय" काव्य की रचना करते हुए "कवि न होंहुँ, नहिं चतुर कहावौं" को दुहराते हुए भी रघुनाथ-गाथा को कलात्मक शब्दों में प्रस्तुत किया। संतों का काव्यादर्श दरिया साहब की निम्न-लिखित साखी में प्रतिबिंबित होता है। सफल कविता का अर्थ है सफल "बात की बात।" "दरिया सुमिरन राम का कर लीजै दिन-रात।" इसी प्रकार प्रत्येक कवि का अपना काव्यादर्श होता है। प्रसंग को बिना विस्तार दिए हुए, यहाँ पर अब हम 'भास्कर'जी के काव्यादर्श का अध्ययन करेंगे। 'भास्कर'जी की निम्न-लिखित ग़ज़लों में उनके काव्यादर्श की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है—

१. किसने कहा कि मेरी कविता अमर बना दें ;
मेरी तो प्रार्थना है कुछ पढ़ के बस सुना दें। (ग़ज़ल १३२)
२. शब्द तारों के समान, अर्थ हिमालय से बड़ा ;
हम कलाकारों में कविता इसी को कहते हैं। (ग़ज़ल १३३)

३. हर कला की आत्मा सौंदर्य आराधना में है। (ग़ज़ल १३७)

इन उदाहरणों से कवि का काव्यादर्श तथा कलादर्श प्रतिभासित होते हैं। कला का सौंदर्य से अभिन्न सम्बन्ध है। कवि ने सत्य ही कहा है कि कला की आत्मा सौंदर्याराधना में रमती है। कवि ने "शब्द तारों के समान अर्थ हिमालय से बड़ा" कहकर अर्थ-गांभीर्य की आवश्यकता की ओर संकेत किया है। काव्य की रमणीयता में यह तत्त्व बहुत सहायक होता है।

सम्भाव्य सत्य को व्यक्त करनेवाला ही सच्चा कवि होता है। सच बात यह है कि साहित्यकार को जनता के हृदय के स्पन्दन के साथ रहना ही उचित है। व्यक्तिगत अनुभूति को उसे समष्टिगत अनुभूति के साँचे में ढालना आवश्यक है। इस दृष्टि से 'भास्कर'जी को ग़ज़लों की रचना करने में सफलता सम्प्राप्त हुई है। उनकी ग़ज़लों में सम्भाव्य सत्य तो व्यक्त हुआ ही है, साथ ही वे व्यक्तिगत अनुभूति को समष्टिगत अनुभूति के साँचे में भी प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं। उनके ग़ज़ल-साहित्य में अनुभवों की विविधता के कारण सत्य दो प्रकार के उपलब्ध होते हैं। प्रथम वह सत्य जो पहले से विद्यमान है और दूसरा वह, जिसकी कल्पना या सम्भावना की जा सकती है। इन दोनो प्रकार के मनोहर तथा आकर्षक तत्त्वों के कारण 'भास्कर'जी की ग़ज़लें सुन्दर प्रतीत होती हैं। उदाहरणार्थ निम्न-लिखित ग़ज़लें उद्धृत की जाती हैं—

१. भय की उपज भयावनी होगी मधुर नहीं,
यह झूठ है कि प्रेम का संचार भय में है। (७ प्रारंभिक)

२. अपना स्वयं ही होता हो हे मित्र कुछ न था,
संसार-भर का दर्द हमारे हृदय में है। (वही)

३. इस प्रेम-क्षेत्र की जो पराजय में स्वाद है,
वह स्वाद 'भास्कर'जी कहाँ दिग्विजय में है। (वही)

४. आपके प्रेम ने संसृति को जिला रक्खा है,
आधुनिक काल में संसार में क्या रक्खा है। (६ प्रारंभिक)

५. गिर जाता है जो आँसू मोती उसे भी समझो,
लेकिन जो ठहरता है उसका खरा पानी है। (१५ ग़ज़ल)

इनमें काव्य का उक्त गुण समुपलब्ध होता है।

कवि की सबसे बड़ी बिशेषता यह है कि वह पाठक के हृदय का स्पर्श कर ले। इतना ही नहीं, कवि पाठक को इतना प्रभावित कर दे कि वह वारंवार उसकी मर्म-

स्पर्शी पंक्तियों को दुहराता रहे, गुनगुनाता रहे, या उसके रसामृत में आद्यंत अवगाहन करता रहे। बहुत कम ऐसे यशस्वी कवि होते हैं, जिनका सम्पूर्ण काव्य इस कोटि का होता है। परंतु साधना में सतत अनुरक्त कवियों में यह शक्ति निश्चयपूर्वक विकास को सम्प्राप्त होती है। यह काव्य का बड़ा भारी गुण है। मेरी दृष्टि में यह गुण प्रत्येक कवि के काव्य में अनिवार्य तथा किसी-न-किसी अंश में विद्यमान होना चाहिए। 'भास्कर'जी के काव्य में अनेक ऐसी ग़ज़लें हैं, जो पाठकों के हृदय और मस्तिष्क को स्पर्श करने में सफल प्रतीत होती हैं। देखिये उदाहरणार्थ निम्नलिखित ग़ज़लें—

१. प्रेम का न्याय निराला है सभी न्यायों से,
झूठ भी बोल के हम आपको सच्चा कर दें। (ग़ज़ल १३४)

२. आज तो बाण लचकदार भी हैं, तीखे भी,
दृष्टि के सामने कहिए तो कलेजा कर दें। (वही)

३. संतोष अपनी त्रुटि पर होगा उसी समय अब,
जब वह क्षमा के बदले कुछ आज ताड़ना दें। (ग़ज़ल १३२)

४. रँगा प्रेम - रंग में जो लोहे का बन्धन,
वह भी धीरे-धीरे सुनहरा पड़ेगा। (ग़ज़ल ९०)

५. अपना घर अपने ही हाथों से जलाकर पागल,
चीख़ के कहता है अब आग लगाये कोई। (ग़ज़ल ८७)

६. हम जहाँ बैठ गये, बैठ गये, बैठ गये,
अब हृदय से ही लगाले तो उठाये कोई। (ग़ज़ल ८७)

७. निरादर हुआ किस जगह यह न पूछो,
वहीं फिर भी जाने को जी चाहता है। (ग़ज़ल २९)

'पल्लव' के प्रवेश में कविवर सुमित्रानंदन पंत ने लिखा है कि "भाषा का और मुख्यतः कविता की भाषा का प्राण राग है।... राग का अर्थ आकर्षण है, यह वह शक्ति है, जिसके विद्युत्स्पर्श से खिचकर हम शब्दों की आत्मा तक पहुँचते हैं, हमारा हृदय उनके हृदय में प्रवेश कर एकभाव हो जाता है।... भाव और भाषा का सामंजस्य, उनके स्वर का ही चित्रराग है। जहाँ भाव और भाषा में मैत्री अथवा ऐक्य नहीं रहता, वहाँ स्वरों के पावस में केवल शब्दों के बटु समुदाय ही दादुरों की तरह, इधर-उधर कूदते, फुदकते तथा साम-ध्वनि करते सुनाई देते हैं।" महाकवि के प्रस्तुत कथन की अंतिम पंक्तियाँ विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं। उसके मत से भाव और भाषा में मैत्री आवश्यक तत्त्व है। काव्य-शक्तियों का अभिमत है

कि भाषा को भावानुगामिनी होना चाहिए। भावों के साथ उचित भाषा का संयोग उसी प्रकार शोभा देता है, यथा मणि कांचन-संयोग। 'भास्कर'जी की कविता का विषय कोमल भावनाओं से संबंधित है। जीवन की वे मधुर अनुभूतियाँ, जिनका संबंध प्रेम से है, विभिन्न रूपों में कवि के काव्य के विषय बने हैं। इस दृष्टि से उसकी भाषा विषय के सर्वथा अनुरूप है।

त्रिलोकी नारायण दीक्षित
असि० प्रोफ़ेसर, हिन्दी-विभाग
लखनऊ-विश्वविद्यालय

आमुख

श्रीतुलसीराम वैश्य को कविता का असाध्य रोग है। वे हिंदी, उर्दू, अँग्रेज़ी सबमें—कविता करते हैं। कविता करना उनका नित्य-नैमित्तिक कर्म-सा बन गया है और वे कवि-कर्म को बड़ा गंभीर और उत्तरदायित्व का काम समझते हैं। उन्होंने नियम-पूर्वक सनेहीजी को हिंदी-काव्य का और श्री जाफ़र हुसैन साहब 'मंज़र' को उर्दू शायरी का उस्ताद बनाया तथा उनसे विधिवत् काव्य कर्म सीखा। उन्होंने जीवन में जितनी कविता लिखी है, यदि वह प्रकाशित की जाय, तो बड़े-बड़े बीस से अधिक खण्डों में छप सकेगी। ऐसे महावीर हैं काव्य-कौशल में श्रीतुलसीरामजी।

प्रस्तुत संग्रह 'तुलसी के दल' में उनकी हिंदी-ग़ज़लें हैं। जिनको वे प्रारम्भिक कविताएँ कहते हैं। मैं उन ग़ज़लों से भी बहुत प्रभावित हुआ, क्योंकि बाहर की दृष्टि से ये निर्दोष हैं और इनमें प्रांजल हिंदी का प्रयोग किया गया है। हिंदी में जो लोग ग़ज़लें लिखते हैं, वे बहुधा उर्दू के शब्दों का प्रचुर प्रयोग करते हैं ; क्योंकि वे समझते हैं कि इस छंद की गठन में हिंदी-शब्दों की अपेक्षा उर्दू शब्द अधिक अच्छी तरह खप सकते हैं। किंतु श्रीतुलसीरामजी ने अपने इस संग्रह में इस धारणा को ग़लत साबित कर दिया है। कहीं से भी ले लीजिए, इन ग़ज़लों में आपको प्रांजल हिंदी ही के दर्शन होंगे। यथा—

सुधा में शरों को डिबोना न अपने,
कहीं खानेवाला अमर हो न जाये।

समन्वय बिना ही उभरते सुखानन्द,
दुखों की तड़प भी प्रखर हो न जाये।

रौंदकर लज्जा - भरी कुलकान के,
प्रीति ठट्ठा मार के सिर चढ़ गयी।

बात जल्दी में नहीं हे मित्रवर,
धीरे - धीरे बढ़ते-बढ़ते बढ़ गयी।

चूनरी ऐसी ही होनी चाहिए,
नाम कढ़ने का लिया, औ कढ़ गयी।

मैं कैसे कहूँ अनजान थे वह जब उनसे आँखें चार हुईं ,
मुख फेर के रोष किया क्षण-भर फिर हँस भी दिये, सकुचा भी गये ।

यह मौनव्रती, ढोंगी, कपटी, यह होंठ ही शत्रु हमारे हैं ,
बोरे न खुले उनके आगे, हम काँपे भी थर्रा भी गये ।

जब फूल रहा था इच्छा वन, तब तुमको न आयी नेक दया ,
अब क्या जो यहाँ तक आये भी, सब फूल गिरे मुरझा भी गये ।

जो प्रेम में होता है वह हुआ, वह बहके भी बहका भी गये ,
वह ही थे जो धोखा दे भी गये, हम ही थे जो धोखा खा भी गये ।

एक बात और ध्यान देने योग्य है । उर्दू-ग़ज़लों में भाषा के प्रवाह. शब्दों के चयन और मुहावरों पर विशेष ध्यान दिया जाता है । भाषा का यह निखार ग़ज़लों की विशेषता है । साथ ही ग़ज़लों में प्रसाद-गुण भी आवश्यक है कि उन्हें सुनते ही श्रोता आशय को तुरंत समझ लें और झूमने लगें । तुलसीरामजी इन हिंदी-ग़ज़लों में उर्दू-ग़ज़लों की यह विशेषता लाने में बहुत सफल हुए हैं ।

इस संग्रह की ग़ज़लों में विषयों की विविधता है, किंतु आदिरस तो प्रमुख होना ही चाहिए । किंतु इश्क़ हक़ीकी अधिक, और इश्क़ मजाज़ी कम मिलेगा । तुलसीरामजी के कहने का ढंग बड़ा आकर्षक है, और वे बात को इस ढब से कहते हैं कि श्रोता रस-विभोर हो जाता है । ये ग़ज़लें हिंदी-काव्य-साहित्य में निश्चय ही अपना विशिष्ट स्थान बना लेंगी—ऐसी मुझे आशा है । मैं इस सफल प्रयोग के लिए उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ ।

श्रीनारायण चतुर्वेदी

दो शब्द

इस पुस्तक के लेखक मास्टर तुलसीराम वैश्य 'भास्कर' एक उच्च शिक्षा-प्राप्त और बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। अँगरेज़ी में आप बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी० हैं। आपने ३५ वर्ष शिक्षा-विभाग में व्यतीत किये हैं। अभी इसी १९६२ में नेशनल इंटर कॉलेज के वाइस-प्रिंसिपल के पद से अवसर ग्रहण किया है। उर्दू में आप हज़रत मंज़र लखनवी के शागिर्द हैं और 'नाज़' तख़ल्लुस करते हैं। 'बहरे-इश्क़'-नामक विशाल ग्रंथ की रचना की है। इस संग्रह में लखनऊ की शायरी का भरपूर आनंद आता है। भाषा तो लखनऊ की सनदी है ही। हिंदी में दो सतसई दोहों में रक्खी हैं और एक सतसई घनाक्षरी की है। प्रस्तुत पुस्तक हिंदी में पहला और नया प्रयास है। यों तो ग़ज़लों की सर्वप्रियता ने हिंदीवालों का ध्यान आर्कषित किया है, और उन्होंने अपने प्रिय विषय को लेकर एक-आध ग़ज़ल लिखी है, पर भास्करजी ने ख़ास ग़ज़ल के रंग में हिंदी में ग़ज़लें सफलता-पूर्वक लिखी हैं। नमूने के लिए नीचे कुछ शेर दिये जाते हैं—

मैं कैसे कहूँ अनजान थे वह जब उनसे आँखें चार हुईं ;
मुँह करके रोष किया क्षण-भर फिर हँस भी दिये सकुचा भी गये।
जब फूल रहा था इच्छावन तब तुमको न आई नेक दया ;
अब क्या जो यहाँ तक आये भी सब फूल गिरे मुरझा भी गये।

× × ×

हठीली चितवनो ! उतरो हृदय में तो तनिक ठहरो,
मना तो मैं नहीं करता हृदय के पार हो जाना।
धरा समतल मिले तो वाटिका लगना असंभव क्या,
हृदय सम हों तो क्या दुर्लभ परस्पर प्यार हो जाना।
जो कुछ लेने को जी चाहे, तो उनसे माँगना उनको,
जो कुछ देने को जी चाहे, स्वयं उपहार हो जाना।

इसी प्रकार के सैकड़ों मार्मिक शेर इस संग्रह में भरे पड़े हैं। कुल १८० ग़ज़लें हैं। ग़ज़ल के प्रारंभ में उसकी धुन भी बता दी गई है।

काव्य-कला के अतिरिक्त चित्रकारी और मूर्तिकला में भी आप प्रवीण हैं। इसीलिये मैंने आपको बहुमुखी प्रतिभा का धनी कहा है।

मानव की हैसियत से आप एक सहृदय, उदार और लखनऊ के पुराने रईसों के योग्य वंशधर हैं। आपके पिता शिक्षा-विभाग में इंसपेक्टर थे। पितामह नवाबी दरबार में सम्मानित थे। आपने अपनी प्रसिद्धि का कभी प्रयत्न नहीं किया। यह पहली पुस्तक है, जो मित्रों के प्रबल अनुरोध से प्रकाशित हुई है। मुझे आशा और विश्वास है कि यह 'तुलसी के दल' पाठकों को रुचेंगे।

—सनेही

सम्मति

श्रीतुलसीराम वैश्य 'भास्कर' रिटायर्ड वाइस-प्रिंसिपल, नेशनल इंटर कॉलेज, लखनऊ द्वारा लिखित 'तुलसी के दल'-नामक पुस्तक को मैंने पढ़ा। इस पुस्तक में फ़ारसी-उर्दू बहरों के वज़न पर आधुनिक हिंदी में लिखी हुई ग़ज़लें हैं। हिंदी-साहित्य में विविध छंदों में मुक्तक काव्य लिखने की परम्परा बहुत प्राचीन है, परंतु इस पुस्तक में एक विशिष्ट नवीनता है। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने खड़ी बोली की मिश्रित शैली में ग़ज़लें लिखी हैं, परन्तु श्रीभास्करजी ने ठेठ हिन्दी में अपना यह काव्य प्रस्तुत किया है, और कहीं पर भी उन्होंने फ़ारसी, अरबी का मिश्रण नहीं होने दिया। उनकी ग़ज़लों की भाषा सरल हिंदी है और उनके छंदों का (बहरों का) प्रवाह सरस है।

'ग़ज़ल'-शब्द अरबी भाषा का है, जिसका सामान्य अर्थ स्त्री से वार्तालाप करना होता है। उर्दू-साहित्य में जो ग़ज़लें मिलती हैं, उनमें से अधिकांश लौकिक शृंगार तथा प्रेम से ही संबंधित हैं। वैसे देश-प्रेम तथा दार्शनिक संकेतों से युक्त ईश्वरीय प्रेम आदि विषयों पर भी उर्दू-साहित्य में ग़ज़लें मिलती हैं, किंतु इस प्रकार का साहित्य उर्दू में अत्यंत न्यून है। उर्दू की ग़ज़लों में इश्क़ हक़ीकी (अलौकिक प्रेम) अपेक्षाकृत कम मिलता है। इश्क़-मजाजी (लौकिक प्रेम) पर विशेष बल दिया गया है। उर्दू की प्रायः सारी कविताएँ संसारी प्रेम और विरह के रंग में रँगी हुई हैं। उसमें काव्यानन्द है, विनोद है और मन को रमानेवाली चमत्कारोक्तियाँ हैं। लेकिन है वह इसी दुनिया का।

प्रस्तुत ग्रंथ में कवि ने पूर्ववर्ती उर्दू कवियों की परम्परा को छोड़कर नवीन शैली को अपनाया है। हिंदी-काव्य-क्षेत्र में भी यह कवि का मौलिक प्रयास है। श्रीभास्करजी की इन रचनाओं में उनकी भावना लौकिक प्रेम से अलौकिक प्रेम की ओर उन्मुख हुई है, वैसे कवि की इन ग़ज़लों की अभिव्यंजना-शैली पर उर्दू शायरी का शैलीगत प्रभाव है। लौकिक प्रेमियों को चेतावनी देते हुए त्रैलोक्य के प्राण-स्वरूप प्रेम के स्वरूप को पहचानने के लिये कवि किस प्रकार प्रेरित करता है, यह नीचे लिखी पंक्तियों में द्रष्टव्य है—

प्रेम भौतिक जो हो तो है विकार मानते हैं,
किंतु सँभलो प्रवंचको कि आगे अंधकप है।

सौंदर्य चमत्कार का विदेह वासुदेव,
प्रेम प्राण है त्रयलोक्य का न रंग है न रूप है।

पूरी रचना को पढ़ने के पश्चात् यह विदित होता है कि भास्करजी की ग़ज़लों में भाव की अभिव्यक्ति सुंदर है और प्रेमानुभूति सूक्ष्म भावनाओं के विभिन्न रूपों में आकर्षक ढंग से व्यक्त हुई है। इस कृति में प्रेम का बहुधा आदर्शवादी स्वरूप ही चित्रित है। कवि के प्रेम का आलम्बन अलौकिक है, किंतु भाव का आवरण और भाव के विविध चित्र लौकिक हैं।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हिंदी-काव्य-क्षेत्र में भास्करजी का यह अपना प्रथम मौलिक प्रयास है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि वे अपने लक्ष्य में सफल हुए हैं। आशा है, हिंदी-साहित्य-संसार उनकी इस कृति का समुचित आदर करेगा, और वे निरंतर हिंदी-सेवा-कार्य में इसी प्रकार रत रहेंगे। भास्करजी ने और भी अनेक पुस्तकें लिखी हैं और लिख रहे हैं। हमें विश्वास है, उनकी लेखनी से भविष्य में इससे बढ़कर अन्य ग्रंथ प्रकाश में आएंगे। मैं उनकी मंगल-कामना करता हूँ।

दीनदयालु गुप्त
एम्० ए०, एल्-एल्० बी; डी० लिट्०
प्रोफ़ेसर तथा अध्यक्ष
हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा-विभाग
लखनऊ-विश्वविद्यालय

प्रारंभिक रचनाएँ

ग़ज़ल : १

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता।

उर्दू का वज़न : फ़ऊलुन फ़ऊलन फ़ऊलुन फ़ऊलुन।

यह आँखें हैं मेरी, यह उनका भवन है;
प्रतीक्षा कहाँ है, मिलन ही मिलन है।

पहुँच की परिधि में तेरा हर भवन है,
बड़ी दौड़वाली हमारी लगन है।

हृदय का है बिसतार जितना उसी के
बराबर सविस्तार उसका भवन है।

न उनके सभा है, न उनके सदन है,
वरन भास्कर जी महान् उनका मन है।

बड़े नेत्र वालों में वक्रोक्ति देखो,
सरलता में सबसे अधिक बाँकपन है।

वचन द्वारा चितवन का आनन्द घटना,
न हमको सहन है, न उनको सहन है।

घने वृक्ष, पतझर में नैराश्य कैसा,
खुली डालियों ही कि छाया सघन है।

रुँधा कंठ खुलने लगा था कि तत्क्षण,
तो फिर पूछ बैठे कि किसकी लगन है।

यह आँसू की वर्षा, यह सुमिरन की विद्युत् ,
विरह-मेघ कुछ आज महना मथन है।

हृदय को न ठुकराव सौंदर्यवालो ,
यही हम ग़रीबों की संपति है, धन है।

व्यथा-ही-व्यथा में रहस हो रहा है ,
जिधर देखिये मेरा उनका मिलन है।

न मुझसा हठीला कहीं पर है काँटा ,
न तुमसा छबीला कहीं पर सुमन है।

हृदय मेरा पारस का है मेरे मित्रो ,
यहाँ पर खरे-खोटे सबका चलन है।

सुबेरे सुबेरे गुलाबी चढ़ा ली ,
तुम्हें भास्करजी हमारा नमन है।

☆

ग़ज़ल : २

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाता मातारा ताराज यमाता मातारा।

उर्दू का वज़न : मफ़उल फ़ऊलन मुफ़तैलुन मफ़ऊल फ़ऊलुन मुफ़तैलुन।

इस प्रेम डगर में जितना भी जो कोई लाकर खोता है,
उसको प्रतिफल जो मिलता है वह उससे अधिक ही होता है।

यह प्रेम धरा है बोंता जा चिंता मत कर क्या बोता है,
इसमें काँटा भी बो जाये तो फल ही पैदा होता है।

इक बाढ़ दृगों में होती है तूफ़ान हृदय में होता है,
हम ठंडी आहें भरते हैं और रक्त कलेजा रोता है।

कर्म और भाग्य से चकराकर संसार को अपने बहला लो,
हमसे तो बस इतना कह दो जो हम करते हैं, होता है।

कल गर्म रुधिर के धारे थे, कल रक्त के आँसू बहते थे,
और आज प्रेम की महिमा से इक ठंढे जल का सोता है।

संसार का हो कोई प्रेमी या आपका हो कोई अनुचर,
इस युग में सुख से कोई नहीं जिसको देखो वह रोता है।

रोना सुनकर मुझ विरही का कुछ आके निकट पूछा हँसकर,
यह कौन हमारे सागर पर पापों की गठरी धोता है।

पीड़ा की खड़कन यदि कुछ है तो सारी तपस्या भंग हुई,
आनन्द न आया पीड़ा का तो हँसने से क्या होता है।

जो बे माँगे ही देता है उससे भिक्षा रे मूर्ख हृदय
अपनी और उसकी दोनो की मर्यादा वृथा क्यों खोता है।

तू पागल है, मतवाला है ऐ 'नाज़' तेरा कुछ ठीक नहीं,
कब रोते - रोते हँसता है कब हँसते - हँसते रोता है।

★

ग़ज़ल : ३

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता।

उर्दू का वज़न : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन।

उजाड़े हृदय फिर बसाये गये हैं,
बुझे दीप फिर से जलाये गये हैं।

मिलाकर नयन भी सताये गये हैं,
हँसाकर भी प्रायः रुलाये गये हैं।

दृगांचल से तेवर दिखाये गये हैं,
नहीं पीते थे हम पिलाये गये हैं।

वह बैठे हैं इस भाँति अपने सदन में
कि मेहमान जैसे बुलाये गये हैं,

बड़े भाग्यवाले हैं राहों में जिनकी—
सुमन कहके काँटे बिछाये गये हैं।

हमें अब उसी घर का वर्जित नमन है,
जहाँ बिन बुलाये भी आये गये हैं।

हृदय और दृग की तो चरचा ही छोड़ो
कि मन पर भी पलरे बिठाये गये हैं।

चिता में जलाकर हमें मित्र देखो,
दिये तर के ऊपर जलाये गये हैं।

कथानक हमारी व्यथा के जगत को,
हमीं से कहाये सुनाये गये हैं।

हमारे भी आँसू किसी ने हैं चूमे,
जो रूठे तो हम भी मनाये गये हैं।

यही जो हुये आज रति-प्रेम-वर्धक,
यही दोष गिन-गिन के गाये गये हैं।

मिटे हम नहीं 'भास्कर' प्रेम जग में,
सुकोमल करों से मिटाये गये हैं।

✤

ग़ज़ल : ४

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता।

उर्दू का वज़न : मफाइल मफाइल मफाइल मफाइल।

उन्हें प्रेम अमृत गरल हो रहा है,
हमैं विष भी पीना सरल हो रहा है।

तेरा प्रेम जिसको गरल हो रहा है,
उसी का मनोरथ विफल हो रहा है।

मरण-जन्म की ग्रंथियों के सहारे,
मेरा उनका बंधन अचल हो रहा है।

हरी है अभी चोट ऊधव न बोलो,
हृदय जल रहा है अनल हो रहा है।

यह रोना नहीं है तुम्हारी हँसी पर,
मेरा नेत्र रखना सुफल हो रहा है।

लड़ाई जो चितवन तो ऐसे लजाये,
कि जैसे यह पहिले पहल हो रहा है।

पड़ी जब से जीवन-प्रभा दृष्टि उनकी,
हृदय मानो मुकुलित कमल हो रहा है।

उधर आत्म गौरव का अब क्या ठिकाना,
जिधर आपका मुख - कमल हो रहा है।

हमें ज्ञात क्या था कि यह दृष्टि बंधन,
क्षणिक - सा नहीं है अचल हो रहा है।

तुम्हारी कनखियों का लेकर सहारा,
हृदय धीरे - धीरे सबल हो रहा है।

सुधा - सम यह जीवन सुनो भास्करजी,
बिना उनके हमको गरल हो रहा है।

☆

ग़ज़ल : ५

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फ़ायलुन फ़ायलुन मफ़ऊल फ़ऊलुन फ़ेलुन।

डुबकियाँ खाती हुई पार हुई जाती है,
मन की तरणी बड़ी हुशियार हुई जाती है।

हाथ में तेरे बिना भार हुई जाती है,
इक छड़ी फूलों की तलवार हुई जाती है।

पुष्प - वर्षा - सी लगातार हुई जाती है,
आज तो छींटों की बौछार हुई जाती है।

आत्मा मेरी अखिल रूप को क्या पायेगी,
उसके प्रतिबिंब पै बलिहार हुई जाती है।

मेरी दुर्गति जो वह करते थे वह खलती थी कभी,
अब वहाँ प्रेम का उपहार हुई जाती है।

होंठ हिलने लगे संकेत दृगों में नाचें,
देखिये कामना साकार हुई जाती है।

आप क्यों रूठ के मन अपना मलिन करते हैं,
आत्मा मेरी निराधार हुई जाती है।

रूठ के मुझसे कृपा-दृष्टि सजन की मेरे,
सारे संसार का आधार हुई जाती है।

प्रेम भस्मी जो चिता पर से उड़ी क्या कहना,
क्रूर संसार का शृंगार हुई जाती है।

देखके देखके छवि ज्योति की आभा क्रीड़ा,
नैन ही नैन में तक़रार हुई जाती है।

लाज से आँख वह झुकने के लिये बेबस हैं,
देखनेवालों से लाचार हुई जाती हैं।

कामना आपके आंचल की शरण पाया कर,
हँसते फूलों का चंदनहार हुई जाती हैं।

'भास्कर' आज से निशिराज की पदवी ले लो,
रात पर रात लगातार हुई जाती है।

★

ग़ज़ल : ६

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं ।

उर्दू का वज़न : फ़ायलुन फ़ायलुन मफ़ऊल फ़ऊलुन फ़ेलुन ।

आपके प्रेम ने संसृति को जिला रक्खा है,
आधुनिक काल में संसार में क्या रक्खा है !

मन दुखा रक्खा है नेत्रों को रुला रक्खा है,
कौन उतपात भला तुमने उठा रक्खा है ।

तन को इस विश्व के ठनगन पै लुटा रक्खा है,
मन तो सरकार के चरणों में लगा रक्खा है ।

नेत्र और नेत्र का है भेद नहीं तो साजन,
आपका विश्व तो गुलदस्ता बना रक्खा है ।

काल का ग्रास बनाने को रचा जग तुमने,
हमको तो अपना बनाने को जिला रक्खा है ।

प्रेम का कोई उलट-फेर है अथवा उनमाद,
काल का कवियों ने उपनाम कला रक्खा है ।

नेह में अपना तुम्हें साझी बनाकर इक दिन—
हम दिखा देंगे तुम्हें प्रेम में क्या रक्खा है ।

जब से मुँह मोड़ लिया मैंने सुरा-सौरभ से,
यह चषक ख़ाली नहीं तब से भरा रक्खा है ।

मेरे साहस के हृत उत्साह का कारण तुम हो,
कोरे शब्दों पै मुझे तुमने लगा रक्खा है।

धूम्र की हलकी-सी लहराती हुई एक लकीर,
बस यही शेष है और दीप बुझा रक्खा है।

जिनके बस में हो हृदय जाओ, उन्हीं को घेरो,
हम ग़रीबों को बिना काज सता रक्खा है।

'भास्कर' जाओ किसी और पै डोरे डालो,
रूप की राह में क्या दीप जला रक्खा है,

ग़ज़ल : ७

हिंदी की ध्वनि : सलगं ल राजभाल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : फ़ेलुन मफ़ायलात मफ़ाईल फायलुन।

अमरत्व मृत्यु में है तो सायुज्य क्षय में है,
अवलंब यदि है प्रेम तो अस्तित्व लय में है,

दृग रूप मय में जिसके हृदय प्रेम मय में है,
वह जीव दुख से दूर अलौकिक प्रणय में है।

रोते हुये दृगों में न टूटे हृदय में है,
जो कुछ भी है प्रभाव मेरी विनय में है।

घूँघट हटा हटा के मैं प्रत्येक चाँद का,
वह रूप ढूँढता हूँ मैं जो तेरे हृदय में है।

भय की उपज भयावनी होगी मधुर नहीं,
यह झूठ है कि प्रेम का संचार भय में है।

हे नागरी ! वसुंधरा पुष्पों से पाट दे,
इक बाढ़ कंटकों की तेरे अभ्युदय में है।

दर्पण तो तुमने देखा अब इस ओर भी देखो,
उससे भी अच्छा रूप हमारे हृदय में है।

ए रे वसंत उनको छिपा ले, मगर बता—
किसकी लटों की गंध यह तेरे मलय में है,

अपना स्वयं ही होता तो हे मित्र कुछ न था,
संसार - भर का दर्द हमारे हृदय में है।

सुधि में सुधा का प्रेम में अमृत का स्वाद है,
ऊर्धव तुम्हारा ध्यान तो नीरस विषय में है।

गोधूल उजड़े काल में क्या प्रेम क्या प्रणय,
मेरी रहन तो देखिये कैसे समय में है।

इस प्रेम-क्षेत्र की जो पराजय में स्वाद है,
वह स्वाद भास्करजी कहाँ दिग्विजय में है।

★

ग़ज़ल : ८

हिंदी की ध्वनि : सलगं सलगं सलगं सलगं सलगं सलगं सलगं अलगं ।
उर्दू का वज़न : फेलुन फेलुन फेलुन फेलुन फेलुन फेलुन फेलुन फेलुन ।

दृग में चंचल विद्युत कैसी चितवन में दल-बादल कैसा,
मुझसे यदि प्रेम नहीं, न सही, लेकिन नेत्रों में जल कैसा ?

सूने दृग सब कुछ लूट लिया अब नेत्रों में काजल कैसा,
हम फिर भी आशिष देते हैं हमसे छलिया छल-बल कैसा ?

जब नेत्र मिलाना भी तुमसे दूभर तो क्या संभव ही नहीं,
तब क्यों चितवन आतंक भला जब कर्म नहीं तो फल कैसा ?

यह अश्रु जलधि जड़ जो ठहरा मर्यादा में सम हो तो हो,
चैतन्य भाव का रंगमंच यह प्रेम-उदधि निश्चल कैसा ?

कण-कण में प्रेम पयोनिधि था कनकी कनकी श्रद्धांजलि थी,
वरना विश्वंभर के आगे इक चुटकी-भर चावल कैसा ?

आँसू का मिश्रण तज बाले ! अधरामृत मिश्रित ढाल तनिक,
जलती मदिरा भर चुल्लू में सुमुखे ! यह गंगाजल कैसा ?

इक तो दृग से दृग उलझे हैं दूजे सबकी सब गोपी हैं,
तीजे तन मन धन शेष हुये अब घूँघट क्या अंचल कैसा ?

यदि दीठि न होती वस्तु कोई तो श्रीपति काले क्यों होते,
झूठा ही तिलधर लो मुख पर, सौंदर्य भला निर्मल कैसा ?

प्रेमाश्रित मन ध्रुवतारा है पथिकों का सबल सहारा है,
इस निश्चल रवि को हे मित्रो उदयाचल-अस्ताचल कैसा ?

अब, आज, अभी, इस दम, चट पट रसना पर तेरी रहते हैं,
तेरा इक प्रेम भिखारी को हर बार यह उत्तर कल कैसा ?

धो डालो प्रेम प्रभाकर की निर्मल किरणों से शंकित मन,
अमिताभ 'भास्कर' के होते चंद्रानन पर यह मल कैसा ?

ग़ज़ल : ९

हिंदी की ध्वनि : राजभागुर राजभागुर राजभागुर राजभा ।
उर्दू का वज़न : फायलातुन फायलातुन फायलातुन फायलुन ।

जिसको कड़ुवा जानिये वह सबसे मीठा भाग है,
त्याग जिसको प्रेम में कहिये वही अनुराग है ।

प्रेम कैसा गान है क्या जाने कैसा राग है,
इसके पहिले ही चरण का अर्थ देह - त्याग है ।

रागिनियाँ हैं जो सब बाजों से निकलीं आज तक,
प्रेम-वीणा से जो निकले बस वही इक राग है ।

तेरा आकर्षण हुआ दुखिया हृदय खिंचने लगा,
अब कोई पूछे तो इसमें क्या हमारी लाग है ।

इक प्रयोगिक क्षेत्र में कुछ कर तो लेने दो प्रयोग,
तब तुम्हें बतलाऊँगा यह प्रेम कैसा राग है ।

मैं हृदय दूँगा उन्हें या वे हृदय देंगे मुझे,
और सब सोचा करें क्या त्याग क्या अनुराग है।

ध्यान में आने लगी है ऐक्य की धुँधली छटा,
इसलिये कुछ आजकल एकांत से अनुराग है।

मेरी आँखों में जो पानी है उसे मत पोछिये,
उँगलियाँ जल जायँगी मैं कह रहा हूँ आग है।

त्याग कर लज्जा-यवनिका तुम प्रकट हो जाओगे–
क्या छिपोगे उससे जिसकी दृष्टि में अनुराग है।

मन की गति जो हो अधोगामी उसे कह लो विकार,
ऊर्ध्वगामी प्रगति श्रद्धा भक्ति और अनुराग है।

श्रेष्ठ है सौंदर्य किसका यह नहीं है बात कुछ,
पूछना ही है तो पूछो किसके प्रति अनुराग है।

प्रेम से परिपूर्ण मैं हूँ रूप से परिपूर्ण तुम,
दोनो ही संपूर्ण भगवन् कौन किसका भाग है।

रंग नौ रस चलता है उड़ता है भावों का गुलाल,
'भास्कर' कवि कल्पना क्या है निरंतर फाग है।

प्रौढ़ रचनाएँ

ग़ज़ल : १

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर ।
उर्दू का वज़न : मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन ।

कभी उपहास करते हैं कभी अपमान करते हैं,
यही क्या प्रेमियों का अपने कम सम्मान करते हैं ।

चरण पर प्राण देते हैं पदों का ध्यान करते हैं,
रसिक जन पाँव से सौंदर्य का अनुमान करते हैं ।

मिटा दे रूप - मधुशाला जला दे प्यास की ज्वाला,
अरे हम रूप - मतवाले कहीं मद - पान करते हैं ।

वह कैसे व्यक्ति होते हैं निवेदन जिनका सुनते हो,
रुदन वे कैसे करते हैं वे कैसे गान करते हैं ।

वह इक प्रतिबिंब है फिर भी महा छबि को लजाता है,
वह तुमसे भी अधिक है हम ही उसका ध्यान करते हैं ।

हमीं पत्थर हृदय में धारके हीरा बनाते हैं,
हमीं खोटे-खरे की वास्तविक पहिचान करते हैं ।

उन्हीं पर क्या है ऊधव वे निराले तो नहीं जग से,
जिन्हें सौंदर्य मिलता है, वही अभिमान करते हैं ।

कभी हे मृत्यु, फिर आना तो कुछ रस लूट लें तेरा,
अभी कुछ व्यस्तता है हम किसी का ध्यान करते हैं ।

हमीं हैं जो हृदय - धन भी लुटाते हैं विना समझे,
वो क्या दानी हैं जो मन तौल करके दान करते हैं ।

यही है रूप - यौवन के दुधारी मार के झोंके ,
हमीं से दृग लड़ाते हैं, हमीं से मान करते हैं ।

उन्हें है धुन कि भिक्षुकवृंद का द्वारे रहे मेला ,
न जायें माँगने तब भी तो वह अपमान करते हैं ।

हमें है प्रेम का गौरव उन्हें है रूप का गौरव ,
न वे अभिमान करते हैं न हम अभिमान करते हैं ।

बचे उनसे कोई कैसे समस्या भास्कर यह है ,
हम - ऐसों से भी अब वह छेड़कर पहिचान करते हैं ।

★

ग़ज़ल : २

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर ।
उर्दू का वज़न : मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन ।

हृदय पर वज्र गिरता है कि उलकापात होता है,
हँसी यह किसको आई है जो यह उतपात होता है ।

हृदय की लूट का व्यवसाय आकसमात होता है ,
न हम को ज्ञात होता है, न उनको ज्ञात होता है ।

दृगों का बाण लगते ही बड़ा सुख ज्ञात होता है ,
हृदय में दर्द तो उसके बहुत पश्चात होता है ।

गरल के घूँट पीता है, जो उसके नाम पर हँसकर,
वही जीवन समझता है, वही विख्यात होता है ।

निकट आ - आ के हट जाते हैं जलते दीप धारा में,
यही मिलना - बिछुड़ना प्रेम में दिन-रात होता है।

हृदय में रहनेवाले को न देखे दृष्टि - भर कोई,
कि ऐसे व्यक्ति का फूलों से कोमल गात होता है।

तुम्हारा प्रेम दुर्लभ से भी दुर्लभ कृत्य है जग में,
मगर जब होने को होता है रातोरात होता है।

कृपा-घन कुछ उमड़ते आ रहे हैं उनकी आँखों में,
बुझा ले प्यास प्यासे मन, सुअवसर ज्ञात होता है।

तुम्हारे दान के सदृश मेरा प्रेम भी मनहर,
कभी कह कर नहीं होता, सदा अज्ञात होता है।

न अब अँगड़ाइयाँ लो नैन खोलो दृष्य अनुपम है,
सोनहरी रात बीती है सोनहरा प्रात होता है।

जगत में 'भास्कर' घातक अनेकों नेत्र हैं फिर भी,
बड़े नेत्रों का क्या कहना बड़ा आघात होता है।

ग़ज़ल : ३

हिंदी की ध्वनि : जभान गुर जभान गुर जभान गुर जभान गुर।
उर्दू का वज़न : मफ़ायलुन मफ़ायलुन मफ़ायलुन मफ़ायलुन।

विषाद यदि बहुत बढ़े तो हम बतायें क्या करें,
किसी से नैन मूँद के सनेह साधना करें।

स्वयं ही खैंच-तान अपने बस में कर लिया करैं,
हृदय की बाग़डोर दूसरे को देके क्या करैं ।

हृदय को सौंपकर किसी को चैन से रहा करैं,
दुखों की खान पास अपने रख के कोई क्या करैं ।

गरल पिलाये हमको जो सुरा मिला लिया करैं,
मरैंगे और चैन से तनिक जो हँस दिया करैं ।

चरण पै शीश धर के उस स्वरूपवान् के कभी,
बहुत नहीं तो थोड़ा-सा ही किन्तु रो लिया करैं ।

हृदय चुरा जो ले गया वह आके एक दिन कभी,
मुझे भी मुझसे छीन ले तो फिर बड़ी कृपा करैं ।

उमड़ पड़ैं जो नेत्र से समुद्र मन को बोर दे,
गिरैं जो अश्रु बुंद - बुंद तो बताओ क्या करैं ।

तुम्हारी दृष्टि में हृदय का प्राण भी है मृत्यु भी,
तुम्हीं बताओ तुमसे कोई हाँ करैं कि ना करैं ।

बड़े दुलार से हृदय - निकुंज को सँवारा है,
तनिक कृपा किया करो कभी जो बन पड़ा करैं ।

हरएक दिशि में चितवनों की भारी छेड़-छाड़ है,
बचैं जो इनसे कोई तो कहाँ पै मर रहा करैं ।

करैं न 'भास्कर' किसी से कोई, याचना कभी,
करैं तो फिर उसी से और उसी की याचना करैं ।

★

ग़ज़ल : ४

हिंदी की ध्वनि : जभान सलगं जभान सलगं जभान सलगं जभान सलगं ।
उर्दू का वज़न : फ़ऊल फेलुन फ़ऊल फेलुन फ़ऊल फेलुन फ़ऊल फेलुन ।

गुलाल भावों का हम इधर से उन्हीं को तक के उड़ा रहे हैं,
उधर से वह भी हमीं को लखकर सुदृष्टि कुमकुम चला रहे हैं ।

जला के दीपक बुझा रहे हैं बुझा के दीपक जला रहे हैं,
दिवालियाँ क्या मना रहे हैं स्वभाव अपना जता रहे हैं ।

हमीं से आँखें मिला रहे हैं हमीं से आँखें चुरा रहे हैं,
कि जैसे सारे जगत को तजकर हमीं को अपना बना रहे हैं ।

बहक रहे थे पथिक जो पहिले सँभल के पग अब बढ़ा रहे हैं,
दृगों की पगडंडियों को तजकर हृदय-महापथ पर आ रहे हैं ।

लगाने को तो लगा ली ज्वाला बुझाये बुझती नहीं अब उनसे,
परंतु शैशव प्रवृत्ति देखो खड़े - खड़े मुसकुरा रहे हैं ।

सफल मनोरथ नहीं हुये मद पिलानेवाले पिला के मुझको,
उन्हीं का जादू चला उन्हीं पर बिना पिये लड़खड़ा रहे हैं ।

परा प्रगति का उदाहरण है परम मधुरता की याचना है,
हमारे अंधे हृदय के आगे लजानेवाले लजा रहे हैं ।

अनर्थ जाने कि अर्थ समझे जो विश्व चाहे विचार करते,
परंतु मुझको वह देख करके सभा के भीतर लजा रहे हैं ।

अखंड यौवन अखंड गरिमा अखंड ज्योती अखंड महिमा,
उन्हीं के तोड़े हृदय तम्हारी अखंड गाथा सुना रहे हैं ।

जहाँ सुनैनों के वाण छूटें जहाँ हृदय पर सुवज्र टूटें,
चलो भास्कर वहीं चलें अब स्वरूपवाले बुला रहे हैं।

★

ग़ज़ल : ५

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन।

हृदय अत्यंत दुखता है तभी आलाप करते हैं,
भला बतला तो दे कोई कि हम क्या पाप करते हैं!

न कोई ध्यान करते हैं न कोई जाप करते हैं,
तुम्हारी सुधि भी कर लेते हैं जब हम पाप करते हैं।

वह कोई और होते हैं जो पश्चाताप करते हैं,
रसिक उनको नहीं कहते जो त्रुटि का जाप करते हैं।

हम उनसे रोष भी करने में मन तक वार देते हैं,
वह हमसे प्रेम करते हैं तो जैसे पाप करते हैं।

हमारा नाम ले - लेकर हमारे दोष दोहराकर,
उँगलियों पर वह यों गिनते हैं जैसे जाप करते हैं।

कभी नेत्रों से भी पीने को मिल पाती नहीं जी भर,
तो हम बेजा नहीं करते जो पश्चाताप करते हैं।

सुरा सुधि में मिलाना प्रेम की यदि पाप है मित्रो,
तो फिर ऊँचे स्वरों में कहते हैं हम पाप करते हैं।

हमैं दोषी बनाने में उन्हैं कुछ सुख-सा मिलता है,
नहीं तो प्रेम जितना है वह अपने आप करते हैं।

पिपासा जिनकी मध्यम कोटि की ही बुझ भी सकती है,
वही पी लेने के पश्चात पश्चाताप करते हैं।

चलो जी 'भास्कर' मानो उन्हीं की बात बढ़ने दो,
हम अपने प्रेम का निर्माण अपने आप करते हैं।

ग़ज़ल : ६

हिन्दी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

कठिन है इसका यौवन में सफल व्यवहार हो जाना,
बड़ी टेढ़ी समस्या है दृगों का चार हो जाना।

दृगों की ज्योति बनना और हृदय के तार हो जाना,
गलें पड़ना नहीं यह है गले का हार हो जाना।

हठीली चितवनों उतरो हृदय में तो तनिक ठहरो,
मना तो मैं नहीं करता हृदय के पार हो जाना।

धरा समतल मिलै तो वाटिका लगना असंभव क्या,
हृदय सम हो, तो क्या दुर्लभ परस्पर प्यार हो जाना।

जो कुछ लेने का जी चाहे तो उनसे माँगना उनको,
जो कुछ देने का जी चाहे स्वयं उपहार हो जाना।

हमैं तो माँझिया मँझधार में ही ग़ोते खाने दे,
कि इस आनन्द पर बलिहार है उस पार हो जाना।

अरे सौंदर्यवालो ! यदि तुम्हैं बदला चुकाना है,
हमारे प्रेम पर तुम भी कभी बलिहार हो जाना।

वह चाहे बाण हो नैनों का या मुस्कान अधरों की,
हृदयवालों का तो कुछ चाहिये आधार हो जाना।

वही दृग दृग हैं जिनके खुलने-भर की देर रहती है,
कि बस आरंभ हो जाये हृदय संहार हो जाये।

पतिंगे की चिता को भास्कर आँसू से ठंढा कर,
परम पुरुषार्थ है जल-भुनके लौ में क्षार हो जाना।

ग़ज़ल : ७

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन।

तुम्हारा ही सुयश बढ़ता जो मेरा काम हो जाता,
भला कुछ बात भी है, और किसका नाम हो जाता।

लजाती यदि न वह आँखें न सकुचाती जो यह चितवन,
वहीं पर द्वंद के बदले महासंग्राम हो जाता।

मलिन गृह को जो तुम पावन करो अपनी चरण-रज से,
तो कण-कण नाचने लगता यहीं व्रजधाम हो जाता।

हमारे दृग में काले मेघ मन में आँधियाँ काली,
तुम्हीं क्या, जो भी आ बसता वही घनश्याम हो जाता ।

कहीं दर्शन जो तुम देते तो हम हँसकर मरे होते,
हमैं स्वीकार था जैसा, वही परिणाम हो जाता ।

हृदय मेरे करों से लेके अपने हाथ में कर लो,
तो इन पापी करों से भी कोई शुभ काम हो जाता ।

हमैं बदनाम करते हैं प्रयोजन बिन झगड़ते हैं,
बड़ा संतोष होता यदि उन्हीं का नाम हो जाता ।

बिधाता यदि हमैं बिपदा पै हँसते देख - भर लेता,
तो सच कहता हूँ बुड्ढा और थोड़ा बाम हो जाता ।

मदन यदि आपकी निरमोह चितवन में पड़ा होता,
तो जलकर भर न जाता वह वहीं निष्काम हो जाता ।

सिखाते हम न उनको 'भास्कर' यदि प्रेम का साधन,
तो उनको ध्यान में भी आना दुष्कर काम हो जाता ।

ग़ज़ल : ८

हिन्दी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर ।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन ।

हृदय थामों ! कि हम उनके चलन का हाल कहते हैं,
मचल जायेगा कहके हाय ! इसको चाल कहते हैं ।

तुझी ने प्रेम करके मरना सिखलाया हमैं सौंदर्य,
किसे था ज्ञात, क्या है मृत्यु, किसको काल कहते हैं।

झपकती है पलक जितने समय में आपकी इकबार,
उसी को हम अब अपनी आयु के सौ साल कहते हैं।

यही सौंदर्यवाले जब हृदय - धन छीन लेते हैं,
तो हमको और हमारे मुँह पै सब कंगाल कहते हैं।

न पूछो हम तुम्हारे रूप, यौवन, दृष्टि, तीनों में,
किसे भ्रमजाल कहते हैं किसे जंजाल कहते हैं।

सिला मुँह और बहे दृग को देखकर मेरे कहा उसने,
जो तुम हो मूक तो बोलो किसे बाचाल कहते हैं।

जो अपने शांति-संदेशों से जग का दिग्विजय कर ले,
उसे मानव नहीं कहते जवाहिर लाल कहते हैं।

शपथ है तुझको यौवन की पिलादे आज थोड़ी - सी,
नहीं तो अपना तेरा हम अभी सब हाल कहते हैं।

तुम्हारे भृकुटि-कंपन से, हृदय के मेरे हिलने से,
जगत में जो भी होता है उसे भूचाल कहते हैं।

जिसे वह 'भास्कर' कहते थे, उसका अब हृदय लेकर,
कभी पागल, कभी झूठा, कभी कंगाल कहते हैं।

★

ग़ज़ल : ९

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर ।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन ।

हमें जो अपने सपनों से विलग होने नहीं देता,
वही जगने नहीं देता वही सोने नहीं देता ।

मैं खोना चाहता हूँ, किंतु वह खोने नहीं देता,
मुझे सपनों में भी अपने सजग होने नहीं देता ।

यह मेरा प्रेम जो चंचल कि ये रहता है मन मेरा,
सुना है अब उन्हें भी चैन से सोने नहीं देता ।

हृदय में रोके उसके दुख पै मैं उसको हँसाता हूँ,
यथ सामर्थ मैं भी और को रोने नहीं देता ।

पकड़ कर हाथ लज्जा त्याग के रस्ता बताया है,
उसे जो ढूँढ़ता है उसको वह खोने नहीं देता ।

गिरा दूँ आँसुओं के उसके अंबर पर सितारे कुछ,
मगर घबराता है जैसे, मुझे रोने नहीं देता ।

इधर हम बावले होने के हित हैरान बैठे हैं,
उधर वह दृष्टि का इंगित सफल होने नहीं देता ।

जिसे देखो, उन्हीं का रूप धरकर मुस्कुराता है,
बिरह को और भड़काता है कम होने नहीं देता ।

हमारा नेत्र जल आँचल से अपने पोंछनेवाले,
उसी ने कालिमा पोती है जो रोने नहीं देता ।

मुझी को 'भास्कर' क्यों प्रेम का संदेश देते हो,
जगत का प्राण क्या मैं हूँ जो रति होने नहीं देता ।

★

ग़ज़ल : १०

हिंदी की ध्वनि : राजभा गुर लराजभा सलगं ।
उर्दू का वज़न : फ़ायलातुन मफ़ायलुन फ़ेलुन ।

बोझ भारी हो तब तो तरना है,
हलके-फुलके तो डूब मरना है ।

प्रेम में डूबना उबरना है,
कार्य दुष्कर है फिर भी करना है ।

प्रेम ही साक्षात करना है,
प्रेम ही सत्य से न डरना है ।

कल को जीना है और मरना है,
आज कर डाल जो भी करना है ।

मौन रहकर लड़ाइये आँखें,
बोलना आबरू उतरना है ।

तेज उनका दिशाओं में छिटका,
जाने कितनों को आज मरना है ।

माँझिया अब दिखा दे वह तट भी,
जिससे टकरा के हमको मरना है ।

चलते रहना तो है सजीवन मूल,
मृत्यु रीत पंथ पर ठहरना है।

चोट खाता जा उसकी चितवन की,
चोट खाना ही घाव भरना है।

मेरी बोली गरल की; वर्षा है,
उनकी बोली सुधा का झरना है।

प्रेम यदि है सुधार का साधन,
'भास्कर' हम को भी सुधरना है।

★

ग़ज़ल : ११

हिन्दी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

किसी को बात ने मारा किसी को घात ने मारा,
हमें तो 'भास्कर' दोनों के उत्पात ने मारा।

हमारे प्राण का ग्राहक है यौवन चाहे जैसा हो,
कभी तो प्रौढ़ ने मारा कभी नवजात ने मारा।

हृदय के रहते-सहते भस्म हो जा कामना जलकर,
वही पत्नी सुपत्नी है जिसे अहिवात ने मारा।

उन्हीं के सामने मुँह में हमारे अश्रु भरने थे,
बड़े कुसमय में हमको नेत्र की बरसात ने मारा।

जिसे देखो हृदय थाम उसाँसें भर के कहता है,
अरे मारा ! कनखियों के क्षणिक आघात ने मारा ।

दिवाकर को दिवस ने जिन कुकर्मों का दिया प्रतिफल,
उन्हीं पापों के कारण चन्द्रमा को रात ने मारा ।

हमारी दृष्टि रघु के बाण के ऐसे सदाचारी,
इसे भी मारा तो फूलों के कोमल गात ने मारा ।

मिलन विश्वास तो जीवित है अब भी ज्यों का त्यों प्यारे,
मगर दुखियारी श्रद्धा को अकेली रात ने मारा ।

हज़ारों रातें जिसने हँसते - हँसते झेल डाली हों,
उसे आश्चर्य देखो इक सुनहरे प्रात ने मारा ।

क्षणिक से नेत्र लड़ने को न निर्बल 'भास्कर' जानो,
सुना है विश्व-भर को इस तनिक-सी बात ने मारा ।

☆

ग़ज़ल : १२

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाता मातारा ताराज यमाता मातारा ।
उर्दू का वज़न : मफ़ऊल फ़ऊलुन मुफ़ाईलुन मफ़ऊल फ़ऊलुन मुफ़ाईलुन ।

जो प्रेम में होता है वह हुआ, वह बहके भी बहका भी गये,
वह ही थे जो धोखा दे भी गये, हम ही थे जो धोखा खा भी गये ।

दृग मूँदे भी मुसका भी दिये, दृग खोले भी सकुचा भी गये,
इस भोलेपन की बलिहारी, बरजा भी, प्रेम सिखा भी गये ।

जब फूल रहा था इच्छा बन, तब तुमको न आई नेक दया,
अब क्या जो यहाँ तक आये भी, सब फूल गिरे मुरझा भी गये ।

मैं ध्यान में संज्ञा-हीन हुआ ऐसा किन ज्ञात हुआ कुछ भी,
तुम सूरत से मन में समाये भी आशा इच्छा पर छा भी गये ।

क्या जानिये मन में क्या आया जो आ गये मेरी अर्थी तक,
फिर जग के दिखाने की धुन में दो-चार परग पहुँचा भी गये ।

मैं कैसे कहूँ अनजान थे वह जब उनसे आँखें चार हुईं,
मुख फेर के रोष किया क्षण-भर फिर हँस भी दिये, सकुचा भी गये ।

यह मौन-व्रती, ढोंगी, कपटी, यह होंठ ही शत्रु हमारे हैं,
बौरे न खुले उनके आगे हम काँपे भी थर्रा भी गये ।

यह रीति भला जग क्या समझे यह नीति भला जग-क्या जाने,
हम प्रीति में उनसे उलझे तो कुछ दे भी दिया, कुछ पा भी गये ।

आदान-प्रदान का जग ठहरा फिर रोष अकारण क्यों आया,
तुमने ही बल पर बल भी दिया तुम ही बल पर बल खा भी गये ।

हम वज्र के सहनेवाले हैं बेकार नहीं रो सकते हैं,
तुमको जो अचानक देख लिया दो आँसू दृग में आ भी गये ।

'भास्कर' शब्द इस गति में मेरे बैठाये नहीं बैठा इस कारण से अंतिम छंद अर्थात् अल्ल् वाला छंद नहीं हो पाया ।

★

ग़ज़ल : १३

हिंदी की ध्वनि : सलगं ल राजभा ल यमाता ल राजभा ।
उर्दू का वज़न : फेलुन मफइलात मफाईल फायलुन ।

चौंका था तेरे प्रेम का मारा अभी - अभी,
जैसे तुझी ने उसको पुकारा अभी - अभी ।

तिनके का, डूबते को, सहारा अभी - अभी,
चमका था, एक दूर पे, तारा अभी - अभी ।

बोले हृदय को थाम के सहला के, शुभ्र माथ,
इस धृष्टता से, किसने, पुकारा अभी - अभी ।

लहरों के, पाँव चूमते खिसिया रहा था जो,
जल-मग्न हो गया वह किनारा अभी - अभी ।

कब का तो प्रश्न ही नहीं उठता है मित्रवर,
उसने तो मेरी ओर निहारा अभी - अभी ।

नौका को जल में खींच न लेता जो माँझिया,
ऊपर ही फट पड़ा था कगारा अभी - अभी ।

कुछ देर हो गई तुम्हें आने में वैद्यजी,
रोगी तुम्हारा जग से सिधारा अभी - अभी ।

मेरे हृदय के हेत जगत को तो छोड़िये,
सौंदर्य ने भी, हाथ पसारा अभी - अभी ।

मन चाहिये किसी का, तो माँगो मिलाके नेत्र,
संकल्प सिद्ध होगा तुम्हारा अभी - अभी ।

वह तो कहो सुना नहीं उसने नहीं तो मित्र,
बातों का बन गया था पँवारा अभी - अभी।

दृग-जल से अपने मेरा बदन धो रहे हो अब,
किसने हृदय को मेरे बिदारा अभी - अभी।

क्षण-भर न आते 'भास्कर' तुम, तो लड़ी थी आँख,
मरने का हो गया था सहारा अभी - अभी।

☆

ग़ज़ल : १४

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन।

वही चितवन का पतला-सा सोनहरा तार होता है,
हमारे प्रेम का पूछो तो क्या आधार होता है।

यहाँ तो प्राण जाते हैं वहाँ शृंगार होता है,
उन्हें क्या ज्ञात यह भी दास पर उपकार होता है।

रसिक को अपने मन पर सर्वदा अधिकार होता है;
वही सौंदर्य के आगे मगर लाचार होता है।

वही हम होते हैं फिर-फिर वही मझधार होता है,
वही फिर डुबकियाँ ले - ले के बेड़ा पार होता है।

इन्हीं गलियों में मन लुटते हैं यौवन रूप के हाथों,
इसी बाज़ार में सबसे खरा व्यवहार होता है।

बतायें क्या हुआ करता है रातों में अँधेरे में,
परसपर दोनों में चुन - चुन के शिष्टाचार होता है।

निपट जातीं हैं दैहिक शक्तियाँ सारी बुढ़ापे में,
मगर सौंदर्य - रंजन का बड़ा अधिकार होता है।

यही जो आँख में आते नहीं हैं मान करते हैं,
इन्हीं दो मोतियों से विश्व का शृंगार होता है।

मिलाते हैं कभी आँखें चुराते हैं कभी आँखें,
हर इक तेवर हृदय पर मेरे लेकिन वार होता है।

न यदि हम प्रेम दें उनको तो क्षति की पूर्ति हो कैसे,
हमारा प्रेम ही तो उनको अंगीकार होता है।

तो क्या है 'भास्कर' अब वह भी तुमसे प्रेम करते हैं,
तुम्हारा उनको हर अनुरोध अस्वीकार होता है।

★

ग़ज़ल : १५

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाता गुर ताराज यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफऊल मफाईलुन मफऊल मफाईलुन।

आँखों में भी पानी है और मुँह में भी पानी है,
डूबे हुये से पूछो छवि कैसी सोहानी है।

चितवन कहीं बिखरी है चूनर कहीं तानी है,
सौंदर्य नहीं है, यह यौवन है, जवानी है।

कहने को जवानी है, पर रात की रानी है,
गोरी भी सोहानी है काली भी सोहानी है।

गिर जाता है जो आँसू मोती उसे भी समझो,
लेकिन जो ठहरता है उसका खरा पानी है।

सौंदर्य प्रेम - लीला नव यौवना को जिसने,
आँखों नहीं देखा है, वह कहले पुरानी है।

वह दृष्टि जो भटकती फिरती है कोने - कोने,
मन टीस के कहता पहिचानी है, जानी है।

दर्पण में उनको देखो बेंदी में रँग भरते,
फिर सबसे कहते फिरना क्या वस्तु जवानी है।

ध्यानों में भी जवानी आ जाय तो अपना लो,
सौंदर्य की प्रेयसि है अर्धांगना रानी है।

सौंदर्य को सुनते थे दातार है, दानी है,
लेकिन हृदय सँभल जा कुछ और कहानी है।

क्या पूछता है दर्गति सौंदय ! 'भास्कर' की,
इक आँख में अंगार है इक आँख में पानी है।

☆

ग़ज़ल : १६

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर ।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन ।

मृदुलता का जो है आगार वह बिन प्राण क्या होगा ,
हृदय - सौंदर्य का ऐसा भी अब पाषाण क्या होगा ।

हृदय तोड़ा, बहुत अच्छा किया अब दुःख है इसका ,
तुम्हारी चितवनों का यह अलक्षा वाण क्या होगा ।

हृदय-खंडों का वितरण हो चुका, कुछ खो चुके होंगे ,
पुनः निर्माण करिये भी तो अब निर्माण क्या होगा ।

यहाँ काँटों का भरिये पेट तो कुछ स्वाद आता है ,
पियादे पाँव चलना है यहाँ पदत्राण क्या होगा ।

यहाँ हम तुम हैं आँखें लड़ती हैं, आनन्द आता है ,
यही निर्वाण है, इससे प्रथक निर्वाण क्या होगा ।

विना शंका के अपना प्रेम रसिकों में करो वितरण ,
भला इससे बड़ा संसार का कल्याण क्या होगा ।

अमर-पद-प्राप्त की साँसें वृथा कर से परखते हो ,
तुम्हारे नेत्र के मारे हुये में प्राण क्या होगा ।

हम ऐसे बावलों का प्राण हर लेती है इक चितवन ,
सुघर सौंदर्य तेरे कर में यह पाषाण क्या होगा ।

उसी ज्योतिर्मई छवि से किसी दिन 'भास्कर' पूछो ,
तुम्हारी ज्योति-सेवन का उचित परिमाण क्या होगा ।

★

ग़ज़ल : १७

हिंदी की ध्वनि : राजभा गुर राजभा गुर राजभा ।
उर्दू का वज़न : फायलातुन फायलातुन फायलुन ।

बाँकपन तो दूर बनवट तक नहीं,
उन दृगों में छल की अनवट तक नहीं।

लाँघने का किन्तु साहस थक गया,
हम गये कै बार चौखट तक नहीं।

रूप ने लाखों ही लीं अँगड़ाइयाँ,
प्रेम ने बदली है करवट तक नहीं।

नित पिलाकर मद का व्यवहारी किया,
अब मगर देते हैं तलछट तक नहीं।

किन्तु हठ करके पिला दे तो पिलाय,
हम कहेंगे आज पनघट तक नहीं।

झाँझनै सुनते थे तब प्रेमी न थे,
अब तो मिलती उनकी आहट तक नहीं।

मेरे भगुवा वस्त्र पर भी लाख धब्बे और फटास,
अपना अंचल देख सिलवट तक नहीं।

उस सरल चितवन का चुप्पा वार है,
ऐसी चलती है कि आहट तक नहीं।

हम पृथक हैं, वे पृथक हैं, मन पृथक,
प्रेम कैसा अब तो खटपट तक नहीं।

नेत्र भी हँसते थे उनके जब हृदय पाया न था,
अब अधर पर मुस्कुराहट तक नहीं।

सुख तो दुर्लभ वस्तु है हे 'भास्कर',
माँगने से मिलता संकट तक नहीं।

★

ग़ज़ल : १८

हिंदी की ध्वनि : राजभा सलगं यमाता राजभा गुर राजभा।
उर्दू का वजन : फायलुन फेलुन फऊलुन फायलातुन फायलुन।

ध्यान में आने लगे तो मन से टल जाने लगे,
सुख तो क्या देने लगे अब और खल जाने लगे।

आँसुओं ने जब से देखा दृग में जल जाने लगे;
तब से बेचारे हृदय के मध्य ढल जाने लगे।

तुम सहारा दे रहे हो तुम सँभल जाओ तो है,
हम तो बेसुधि चलते हैं हम क्यों सँभल जाने लगे।

करके वज्राघात मुझ पर हँसके पूछा रूप ने;
तेरी ही चितवन से अब पत्थर पिघल जाने लगे।

मन किया संकल्प बुद्धी साध्यता अब चैन है,
दोनों अपनी राह सीधे आजकल जाने लगे।

सांत्वना का कष्ट भी बेकार सहने आये तुम,
हम तो अब अपने ही रोने से बहल जाने लगे।

रस्सी बटनेवाले ! भवतिक्ता के तेवर मत समझ,
अब बटन खुलने लगी रस्सी के बल जाने लगे।

अब कदाचित उनपै आविर्भाव यौवन का हुआ,
उनके घूँघर उनके छूने से मचल जाने लगे।

शब्द तेरे मार्मिक हैं हँस के चंचल ने कहा,
अब तो कुछ-कुछ भाव के साँचे में ढल जाने लगे।

जब जलाये से नहीं जलते थे वह दिन लद गये,
अब तो तुमको देखकर गृह - दीप जल जाने लगे।

हम तो पीने ही लगे थे उनसे छिपकर 'भास्कर',
हमको पीते देखकर अब वह भी टल जाने लगे।

*

ग़ज़ल : १६

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

क्षणिक - सी बात यह प्रियवर कई युग की कमाई है,
बड़े पुरुषाथ का फल है जो आँख उनसे लड़ाई है।

छिछिलती दृष्टि वह भी स्वप्न में उनसे मिलाई है,
इसी पर यह प्रलय कर दी दोहाई है दोहाई है।

यहीं पर मन की ऐसी वस्तु भी हमने गँवाई है,
यहीं पर प्राण भी दे दें इसी में अब भलाई है।

कोई ठट्ठा नहीं है आंच सह जाना धरातल की,
हृदय की ज्योति से सौंदर्य ने ज्वाला जगाई है।

यहाँ जो सबसे अपनी वस्तु है अर्थात् मन अपना,
वह भी अपनी नहीं मित्रो ! पराई थी पराई है।

बड़े दानी बने फिरते हो, तुम संसार देते हो,
किसी के रूप पर हमने अभी संसृत लुटाई है।

लड़ाई आँख फिर संसार-भर के अश्रु रो डाले,
बड़ी मधुराइयों से प्यास नेत्रों की बुझाई है।

झुकी पड़ती हैं आँखें और सपने आते-जाते हैं,
हमारी गति यह तो क्या किसी को नींद आई है।

यह किसका हाथ है आँखों को मेरी बंद करने में,
वही रोचक उगलियाँ हैं वही कोमल कलाई है।

बुढ़ापा तप उठा सौंदर्यवालो ! कैसे कहते हो,
अभी कल ही तो हमने आग यौवन में लगाई है।

किया है प्रेम जब से भास्कर मोदक हैं युग कर में,
भलाई भी भलाई है बुराई भी भलाई है।

ग़ज़ल : २०

हिंदी की ध्वनि : सलंग लराज भाल यमाताल राजभा ।
उर्दू का वज़न : फेलुन मफायलात मफाईल फायलुन ।

सौंदर्य मेरी दृष्टि से लाचार हो गया,
जिस - जिस जगह छिपा, वहीं साकार हो गया ।

जिस काँटे पै लावण्य का अधिकार हो गया,
वह फूल नहीं फूल का श्रृंगार हो गया ।

संकट - भरे जगत में निराधार हो गया,
जिसने न किया प्रेम वह बेकार हो गया ।

जो भी तुम्हारे रूप पै बलिहार हो गया,
वह केन्द्र ही क्या विश्व का आधार हो गया ।

सौंदर्य के कपाट तभी खटखटाइये,
जब जानिये कि प्रेम पर अधिकार हो गया ।

हम अनुभवी हैं प्रेम के हमको बधाई दो,
हमने किया तो तुमको भी कुछ प्यार हो गया ।

हमने तो प्रेम - मल्लिका ली मोल देके प्राण,
घाते में सारे विश्व का श्रृंगार हो गया ।

इच्छा बगल में कर में चषक आँख में नशा,
अर्थात् हमको प्रेम सपरिवार हो गया ।

तिरछी भवों ने तन के तिरस्कार जो किया,
ललचाई दृष्टि का बड़ा सत्कार हो गया ।

यौवन संवर रहा है बुढ़ापे के हाथ में,
यह 'भास्कर' जी कैसा चमत्कार हो गया।

*

ग़ज़ल : २१

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाताल यमाताल यमाता।
उर्दू का वज़न : मफऊल मफाईल मफाईल फऊलुन।

तन - तन के छलकती हुई तरुणाई का क्या कहना,
सौंदर्य तेरी आज की अँगड़ाई का क्या कहना।

चेहरे पै हर बदलते हुये रंग से रंजित,
यह चढ़ती - उतरती हुई अरुणाई का क्या कहना।

खिलते हुये कमल में ललाई की लपटें हैं,
आवेष की अरुणाई में तरुणाई का क्या कहना।

यों तो हृदय अनूप सा प्रांगण ही है परन्तु,
सौंदर्य जिसमें खेले उस अँगनाई का क्या कहना।

लालित्य उक्ति शब्द तो श्रृंगार है अवश्य,
कविता की किंतु भाव की सच्चाई का क्या कहना।

रोमावली में प्राण का संचार कर गई,
सौंदर्य तेरे बोल की मधुराई का क्या कहना।

निज ओर सब को खींच के फिर भी अलग थलग,
चपला - सी दृष्टि तेरी भी चतुराई का क्या कहना।

नीले गगन की नीलिमा देखी है मित्रवर,
फिर भी तुम्हारे नेत्र की गहराई का क्या कहना।

इतनी सरल कि आँख मिलाते ही मोक्ष पद,
सौंदर्य और प्रेम की कठिनाई का क्या कहना।

सौंदर्य से रातों को भी पहरा दिला लिया,
हे 'भास्कर' गोस्वामी की सेवकाई को क्या कहना।

ग़ज़ल : २२

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाता मातारा ताराज यमाता मातारा।
उर्दू का वज़न : मुफतैल फऊलुन मुफतैलुन मुफतैल फऊलुन मुफतैलुन।

हम भक्त न होते कभी मनहर तुम पर अनुरक्त न होते कभी,
यदि रूप-सिंगार न भाता तुम्हें हम तुमसे विभक्त न होते कभी।

हमने ही बनाया केन्द्र तुम्हें निश्चय श्रद्धा - विश्वासों का,
हे रूप, मृदुलता, कोमलता ! तुम इतने सशक्त न होते कभी।

कंगाल न होते हृदय देकर धनवान बने रहते जो सदा,
तो आज की बात तो आज की है तुम हमसे विरक्त न होते कभी।

यदि प्रेम सगर्व भी हो सकता जिस भाँति स्वरूप तुम्हारा है,
अपनी अपने ही तक रखते हम तुम पै भी व्यक्त न होते कभी।

यदि प्रेम के हाथों यह दुर्गति कुछ ज्ञात हमें होती पहिले,
हम मर के तो चाहे हो जाते जीवित आसक्त न होते कभी।

तलवे न मसलते तुम्हारे अगर रसिकों की हृदय-पुष्पांजलि को,
श्रृंगार अधूरा रह जाता पद - बिंब अलक्त न होते कभी ।

जो प्रेम न होता उन्हें हमसे तो होते यह संध्या - भोर नहीं,
इक दृष्टि पड़े युग लोल कपोल समूल आरक्त न होते कभी ।

संसार के फूलों - कलियों में सौंदर्य तुम्हारा न होता कहीं,
हम ऐक्य वृती हैं प्रेम में भी उन पै अनुरक्त न होते कभी ।

अपमान का ज्ञान जो हो जाता संसृत को ठुकरा तो देते,
कुछ त्याग के त्यक्त भले होते हम ऐसे तो त्यक्त न होते कभी ।

लाचार न हो जाते जो कहीं उस भोली - भाली चितवन से,
हम 'नाज़' स्वभाव के गर्व-भरे पर रक्त में रक्त न होते कभी ।

ग़ज़ल : २३

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाताल यमाताल यमाता ।
उर्दू का वज़न : मफऊल मफाईल मफाल फऊलुन ।

सौंदर्य हम ने माना कि तलवार भी होता है,
फुसलाते बन पड़े तो गलेहार भी होता ।

उन चितवनों में प्रेम - समाचार भी होता है,
होता रहे जो उनमें तिरस्कार भी होता है ।

उस पार जो होता है यवनिका के मित्रवर,
वह प्रेम की कृपा से अब इस पार भी होता है ।

अब प्रेम भी सौंदर्य के चिह्नों पै चल पड़ा,
साकार भी होता निराकार भी होता है।

केवल क्षणिक-सी छेड़ हो साहस तो कीजिये,
उतपात उन दृगों का लगातार भी होता है।

सौंदर्य कला कृत्ति कला-केन्द्र तो है ही,
आश्चर्य तो यह है वह कलाकार भी होता है।

यह कहके तट समुद्र की लहरों में खो गया,
तत्त्वात्मक आधार निराधार भी होता है।

अंधे ने आधी रात को नभ घूर के कहा,
रातों में कोई तारा चमकदार भी होता है।

अत्यंत रूठ जाने की चिंता न कर हृदय,
पश्चात जो होता है वही प्यार भी होता है।

हम मूर्ख होके रह गये आश्चर्य क्या हुआ,
सौंदर्य के सम्मुख कोई बुद्धि वार भी होता है।

सौंदर्य-यवनिका में पिटारी के नग की भाँति,
बहुमूल्य भी होता है बेकार भी होता है।

अब बात 'भास्कर' जी बढ़ी जाती है आगे,
आँखें मिलाके प्रायः नमस्कार भी होता है।

☆

ग़ज़ल : २४

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यभाता सलगं ।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन ।

दर्द मिट जाय या मिट जाय बटानेवाले ,
प्राण ले लेंगे दशा पूछने आनेवाले ।

घर जला और गये आग लगानेवाले ,
दौड़े बेकार अब आते हैं बुझानेवाले ।

अपनी पतली - सी कलाई पै तरस तो खाओ ,
बन के आए हो बड़े हाथ छोड़ाने वाले ।

कोई पूछे तो सही कोई बताये तो सही ,
दृग मिलाते ही हैं क्यों नैन चुरानेवाले ।

देखते देखते जैसे कि पवन होता है ,
लौ में लय हो गये सब आग बुझानेवाले ।

पत्तियाँ गिरती हैं जो उनको नहीं गिनते हैं,
फूल गिनते हैं बगीचे के लगानेवाले ।

इतनी पीता हूँ कि जब ढूँढ़े नहीं मिलती मद ,
सँघ जाते हैं मुझे पीने - पिलाने वाले ।

रिद्धियों-सिद्धियों सब साज सजा दो तत्काल,
आते ही होंगे अभी मेरे न आनेवाले ।

शब्द तो फिर भी रहे रूखे के रूखे उनके ,
अर्थ में डूब गये अर्थ लगानेवाले ।

अंत में वह ही हुआ थकके प्रतीक्षा में तेरी ,
बिछ गये आप ही आँखों को बिछाने वाले !

भूले-भटकों की वहाँ 'भास्कर' चाँदी समझो ,
भूल जाते हैं जहाँ राह बताने वाले ।

★

गज़ल : २५

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाता मातारा ताराज यमाता मातारा ।
उर्दू का वज़न : मफऊल फऊलुन मुफतैलुन मफऊल फऊलुन मुफतैलुन ।

नेत्रों में मद का प्याला भी मदिरा भी मधुशाला भी है ,
और नई-नवेली दृष्टि नाम की सुंदर-सी बाला भी है ।

आकाश चँदोला भी सिर पर नीचे भू मृग-छाला भी है ,
सुमिरन नर्तकी भी है संग में मन साधु-वृत्त वाला भी है ।

चन्दा भी चन्द प्रभा भी है नक्षत्रों की माला भी है ,
और उन्हें जलाये रखने को दृग में मेरे ज्वाला भी है ।

नेत्रों में लज्जा की मदिरा अधरा-रस मधुशाला भी है ,
वह रसिक ढूँढ़ने निकले हैं हाथों में वरमाला भी है ।

मधुशाला से अति दूर पड़ा रहता हूँ मैं इक कोने में ,
पर यह भूलना मधुवाले ! खाली मेरा प्याला भी है ।

भँवरे को व्यर्थ भगाती है कलिके भर ले भुज पाशों में ,
अंधा भी प्रेम में है तेरे सौरभ से मतवाला भी है ।

यह प्रियतम की नगरी ठहरी सब स्वाद निरंतर मिलते हैं,
बदली है अँधियारा भी है दिनकर है उजियाला भी है।

कलपित कविता जो करते हैं उनसे कुछ कहना व्यर्थ सा है,
अनुभूति वही कह सकता है जिसने देखा - भाला है।

उजियाले में रखके मुझको देखो तो रंगत गोरी है,
अँधियारे में सच कहते हो यह मुख मंडल काला भी है।

लज्जा - संकोच का काम नहीं प्रतिबंध प्रकाश में लगता है,
इन गलियों में अँधियारा है अंधा चलने वाला भी है।

अब आज भास्कर क्या होगा देखे बिन कहना दुष्कर है,
प्यासे के आगे बिष भी है पानी भी है हाला भी है।

★

ग़ज़ल : २६

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

चरण होते तो कहते भी इन्हें चलना नहीं आता,
तुम्हारे द्वार से किनको कहै टलना नहीं आता।

पराये रूप यौवन पर हमें जलना नहीं आता,
तुम्हारी भाँति फूलों पर हमें चलना नहीं आता।

इधर निद्रा तुम्हें आई उधर हमने कथा रोकी,
किसी के प्रेम - सपनों में हमें खलना नहीं आता।

हमारे इस चषक में रूप यौवन कौन भर देगा,
उन्हें तो ढालना ही आता है ढलना नहीं आता।

छली सौंदय ! तेरे खेल में हम योग तो दे दें,
अब इसको क्या करूँ प्यारे हमें छलना नहीं आता।

उठा कर हाथ आशिर्वाद तो देते हैं हम सुख से,
किसी की वृद्धि पर युग कर हमें मलना नहीं आता।

रसिक यदि जलता है फिर भी तो फैलाता है शीतलता
जलाना काम है उनका जिन्हें जलना नहीं आता।

अडिग हैं अपने-अपने काम में सौंदर्य रति दोनो,
इसे देना नहीं आता उसे टलना नहीं आता।

परम पुरुषार्थी प्रेमी पनपता है स्वकर्मों से,
पराये श्रम से हमको फूलना फलना नहीं आता।

हमें तो 'भास्कर' मरना तो आता है ठिकाने से,
अकारण और प्रयोजन बिन हमें गलना नहीं आता।

★

ग़ज़ल : २७

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता।
उर्दू का वज़न : मफाइल मफाइल मफाइल मफ़ाइल।

चिता भी जो करवट बदल कर हिला दूँ,
उखड़ता हुआ मेला फिर से लगा दूँ।

हृदय में तो फिर अग्नि ही अब लगा दूँ,
तुम्हारी जगह और किसको बिठा दूँ।

परिस्थिति के बंधन में प्रेमी नहीं है,
कहाँ क्या करूँगा मैं कैसे बता दूँ।

हृदय दे दिया दर्शनों पर सलोने,
तुझे मुस्कुराने के ऊपर मैं क्या दूँ।

मनुष्यत्व जीने में है मध्य लौ में,
पतिंगा नहीं हूँ कि जलकर दिखा दूँ।

उसाँसो, विध्वंस जग कर दूँ लेकिन
तुम्हारे बनाये को अब क्या मिटा दूँ।

मदन मोहिनी दृष्टि यह कह रही है,
पिला दे कहे भी तो कोई, पिला दूँ।

वह गोता जो तुम चाहते हो कठिन है,
दृगों से कहो यों तो नदियाँ बहा दूँ।

कनखियों से हे देखकर हँसने वाले,
नमन करते करते जो मैं मुस्कुरा दूँ।

किधर रूठ कर छवि चली बात तो सुन,
इधर आ तुझे प्रेम करना सिखा दूँ।

मैं मरता हूँ मर जाने दे बाँकी चितवन,
कसौटी की पद्धति मगर मैं मिटा दूँ।

मेरे अश्रु को अपने दृग में जगह दो,
जगत को तो जिस ओर कह दो बहा दूँ।

जिसे देखिये आँख का चोर निकले,
अरे 'भास्कर' आँख किससे लड़ा दूँ।

★

ग़ज़ल : २८

हिंदी की ध्वनि · राजभा राजभा ताराज यमाता सलग
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन।

छूँट गये मेघ धनुष खिल गया, टूटा पानी,
किसने काजल दिया, आँखों से यह पोछा पानी।

भीगे अंचल से किसी ने वह निचोड़ा पानी,
मूसलाधार झकाझूम यह बरसा पानी।

हँसती आँखों को लगी देर नहीं रोने में,
देखते - देखते बहने लगा उलटा पानी।

भर के वह रूप - सुरा - बाला का सम्मुख होकर
माँगने मुझसे लगी मेरी पिपासा पानी।

कोषकारो ! हा ! लिखो, प्रेम के शब्दार्थ लिखो,
आग से आग नहीं, मीठे से मीठा पानी।

रहते अतृप्त सदा प्यास बढ़ाता है जो,
घूँट - भर कोई पिला दे वही प्यासा पानी।

तृप्त बिरहाश्रु विरह रोग में पीते पीते,
प्राण जाते हैं पिला दे कोई जल्द पानी।

वह तो अच्छा हुआ अंगारे दृगों से बरसे,
आग लग जाती हृदय में जो बरसता पानी।

उनकी आँखों से थिरकती हुई निकली मुसकान,
मेरी आँखों से मचलता हुआ निकला पानी।

लहरें सजती हैं तो सौंदर्य महासागर में,
व्यर्थ ही प्राण न दे ठहर जा छिछला पानी।

उनका सुमिरन जो किया दर्द से घबरा के कभी,
आँख से बोलता हँसता हुआ छलका पानी।

'भास्कर' उनसे कहो बहुतों ने रोका लेकिन,
रमता जोगी न रुका और न बहता पानी।

★

ग़ज़ल : २९

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता।
उर्दू का वज़न : मफाइल मफाइल मफाइल मफाइल।

सभी कुछ गँवाने को जी चाहता है,
तुम्हारा कहाने को जी चाहता है।

बहुत रूठ जाने को जी चाहता है,
वह आएँ मनाने को जी चाहता है।

नई धुन में गाने को जी चाहता है,
उधम कुछ मचाने को जी चाहता है।

मुझे देखकर हँसके बल खाके बोले,
अधम को उठाने को जी चाहता है।

चषक तोड़कर फेंकता हूँ कि अब तो,
सुरा से नहाने को जी चाहता है।

चषक भरता हूँ जब तो पीने के पहिले,
किसी को पिलाने को जी चाहता है।

कहानी सँभलते - सँभलते वहाँ है,
जहाँ पर सुनाने को जी चाहता है।

सँवर के चले आज किसकी गली में,
किसे अब मिटाने को जी चाहता है।

निरादर हुआ किस जगह यह न पूछो,
वहीं फिर भी जाने को जी चाहता है।

गया छूट साहस तुम्हें देखते ही,
अब आँसू बहाने को जी चाहता है।

तुम्हारे दृगों की अजूबा किरण है,
अकारण समाने को जी चाहता है।

अरे मृत्यु तुमको भी प्रायः व्यथा में
गले से लगाने को जी चाहता है।

भले 'भास्कर' देखके उनके ठनगन,
बुढ़ापा भुलाने को जी चाहता है।

★

ग़ज़ल : ३०

हिंदी की ध्वनि : राजभा गुर राजभा गुर राजभा गुर राजभा ।
उर्दू का वज़न : फ़ायलातुन फ़ायलातुन फ़ायलातुन फ़ायलुन ।

अपने वन्दी गृह की तंगी से जो घबराता हूँ मैं,
उनका सुमिरन बनके संसृत भर पै छा जाता हूँ मैं ।

जोड़ कर टूटे खिलौने मन को बहलाता हूँ मैं,
इन हृदय - खंडों में अपने प्राण पहिनाता हूँ मैं ।

ध्यान से उस पार सुमिरन में चला जाता हूँ मैं,
तब हृदय की आस्था को सामने पाता हूँ मैं ।

कर कलेजे पर दबाये चैन से गाता हूँ मैं,
प्रेम करके कौन कहता है कि पछताता हूँ मैं ।

ठोकरों को चूमकर उनकी किसी ने यह कहा,
आपके उपकार से जैसे दबा जाता हूँ मैं ।

रूपवर्धित जगमगाहट मन दरप की देखकर,
और अपने आपसे बाहेर हुआ जाता हूँ मैं ।

प्रेम के परिणाम की अनभिज्ञता भी धन्य है,
सारी संसृत मर रही है मित्रवर गाता हूँ मैं ।

यह कृपा या कोप है माधुर्य की मुसकान का,
आज यह संसार परिवर्तित-सा कुछ पाता हूँ मैं ।

अब न छेड़ो वह क़हानी पहिले वाले प्रेम की,
सुन के मन बेचैन हो जाता है मर जाता हूँ मैं ।

'भास्कर' स्थान ही पर अपने मैं हूँ भास्कर,
उनके घर में आज भी पागल कहा जाता हूँ मैं।

ग़ज़ल : ३१

हिंदी की ध्वनि : राजभा गुरु राजभा गुरु राजभा।
उर्दू का वज़न : फ़ायलातुन फ़ायलातुन फ़ायला।

तेरे द्वारे से यों ही फिर जायँ क्या,
तुझसे भी बेआसरा हो जायँ क्या।

बिन हृदय के उनके आगे जायँ क्या,
मन-हरण को अब यह मुँह दिखलायँ क्या।

आपके हाथों में मन है देखिये,
हम कलेजा चीर के दिखलायँ क्या।

उनको सुलझाये न सुलझी उनकी लट है,
वह हमारी उलझनें सुलझायँ क्या।

क्या नहीं आयेगी ऊषा की बहार,
नेत्र से अब रक्त ही बरसायँ क्या।

जो बिना माँगे ही देता है हमें,
हाथ उसके सामने फैलायँ क्या।

काट डालें कामना की जीभ को,
कौन जाने उनसे हम कह जायँ क्या।

आपका तरसाया है मोही हृदय,
हम भला बेचारे को तरसायँ क्या।

टुकड़े - टुकड़े रिक्त है मेरा चषक,
भरनेवाले थक गये छलकायँ क्या।

झूमने लगते हैं मस्ती देखकर,
सामने तूफान मेरे आयँ क्या।

अंत जब मेरी कहानी हो गई,
हँसके बोले 'भास्कर' सो जायँ क्या।

☆

ग़ज़ल : ३२

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

न वाणी में खनकती हैं, न चितवन में मचलती हैं;
हृदय की कामनायें अब हृदय में ही उबलती हैं।

उसी बल पर सँवरती हैं, उसी बल पर सँभलती हैं;
हमारी दृष्टि की किरणों उसी चितवन पै चलती हैं।

कदाचित् चितवनें तेरी चमत्कारों में पलती हैं,
हृदय में जब से उतरी हैं हज़ारों ज्योति जलती हैं।

खिलाती हैं महकते फूल अंगारे उगलती हैं,
बड़े सौंदर्य की छवियाँ बड़ी अनवट से चलती हैं।

हृदय - उद्यान में मेरे नई कलियाँ निकलती हैं,
कि बनकर अप्सरानें चितवनें तेरी टहलती हैं।

जो टाले टल नहीं सकतीं अटल दुर्भाग्य की बातें,
वह उस सौंदर्य के आगे सब अपने आप टलती हैं।

छलकने लगता है मद, और प्यासे दौड़ पड़ते हैं,
चषक में डूबकर कवि - भावनायें जब उबलती हैं।

पिपासायें जलाती हैं मगर जब चेतना लूटी,
स्वयं छींटे भी देती है स्वयं पंखा भी झलती हैं।

हृदय में, ध्यान में, मन में, कहाँ पायें समा जायें,
बड़ी छबियाँ सलोनी चितवनों के साथ चलती हैं।

हृदय था दे दिया अब प्राण भी देने पै तत्पर हूँ,
तुम्हारी चितवनें मुझसे भला अब क्यों मचलती हैं।

यही हैं प्रेम की नदियाँ जिन्हें सुख - दुख समझते हो,
अलौकिक भाव के भंडार यह लहरें उगलती हैं।

हम ऐसे भोले - भालों को घृणा की वस्तु मत समझो,
हमीं ऐसों को ये छवियाँ तपस्या करके छलती हैं।

कनखियों से न देखो 'भास्कर' को इस बुढ़ापे में,
तुम्हारी दृष्टि की ये रश्मियाँ यौवन उगलती हैं।

☆

ग़ज़ल : ३३

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाता मातारा ताराज यमाता मातारा ।
उर्दू का वज़न : मुफऊल फऊलुन मफतैलुन मफऊल फऊलुन मुफतैलुन ।

जो मृत्यु को प्यारा हो जाये या तुमको दुलारा हो जाये,
कुछ भेद नहीं इन दोनों में जीवन से जो न्यारा हो जाये ।

लें डूबे हमें ले डूबा करे होता है सहारा हो जाये,
हम पालन करके दिखला देंगे जो ध्यान तुम्हारा हो जाये ।

जो रोता हुआ या हँसता हुआ हो किंतु हमारी आँखों का,
जो अश्रु भी अँचल पर ले लो सच कहता हूँ तारा हो जाये ।

रस की छींटें तक मिल न सकीं क्या सुख पाया सागर-तट पर,
भगवान करे लहरों के तले यह सूखा किनारा हो जाये ।

ज्ञानी-ध्यानी पौरुषवाले गुणवान इत्यादिक कुछ भी नहीं,
संसार में कोई है तो वही जो आपका प्यारा हो जाये ।

जिसको तुम कह दो पीने को वह क्यों त्यागे पीना बोलो,
क्यों प्राण गँवाये वह जिसको जीने का सहारा हो जाये ।

क्या कोप कृपा क्या दान दया क्या दुख-दारिद क्या सौख्य-सखा,
हर हर्ष-विषाद निरर्थक है जब प्रेम तुम्हारा हो जाये ।

तोड़ूँ तो सितारे लाख गगन से कोटि सितारे लगा भी सकूँ,
मैं क्या न करूँ जो कनखियों से संकेत तुम्हारा हो जाये ।

जिस मन को फूल बनाओ तुम वह 'नाज़'-भरे संकेतों से,
इक फूल हज़ारा कौन कहे उद्यान हज़ारा हो जाये ।

★

ग़ज़ल : ३४

हिंदी की ध्वनि : लराजभाल माताल राजभा सलगं।
उर्दू का वज़न : मफायलात मफाईल फायलुन फेलुन।

हमारे वास्ते रूपक बनाये जाते हैं,
सहज में उठते नहीं हम, उठाये जाते हैं।

हृदय चुराके वह मुद्रा बनाये जाते हैं,
कि जैसे वह भी वहीं कुछ गँवाये जाते हैं।

यह दीप जिनके उजाले में भी अँधेरा है,
स्वयं तो जलते नहीं जलाये जाते हैं।

यहाँ पै जीते-जी आदर नहीं तो दुख क्या है,
बड़ी ही धूम से मुरदे उठाये जाते हैं।

पलट के आने की आकांक्षा नहीं फिर भी,
न जाने क्या पड़े, आसन बिछाये जाते हैं।

उन्हीं ने मन लिया हाँ हाँ उन्हींने लूटा है,
वही जो मौन हैं और मुस्कुराये जाते हैं।

बसंत में यह कली फूल रूप मद माते,
गरीब जानके आँखें दिखाये जाते हैं।

कोई जियै कि मरै चेत में रहै न रहै,
उन्हें पिलाने की धुन है पिलाये जाते हैं।

बनाई आपनी जो दुर्गति वह तो बना डाली,
तुम्हें भी भाइयो रसता दिखाये जाते हैं।

कोई सुनै न सुनै सुनके कुछ कहै न कहै,
हम अपनी राम - कहानी सुनाये जाते हैं ।

बजाओ तालियाँ जी खोल के जगतवालो,
करों से मेरे वह आँचल छुड़ाये जाते हैं ।

हमारे साथ जो रहते थे 'भास्कर' दिन-रात,
वह आज हमसे ही आँखें चुराये जाते हैं ।

ग़ज़ल : ३५

हिंदी की ध्वनि : लराज भाल यमाताल राजभा सलगं ।
उर्दू का वज़न : मफायलात मफाईल फायलुन फेलुन ।

हृदय को टूटते, कलियों को चिटकते देखा,
विरह का रंग जहाँ देखा छलकते देखा ।

प्रभात प्रेम का आँखों में झलकते देखा,
तुम्हारे नेत्र अभी हमने चमकते देखा ।

उमँड़ते मेघों में बिजली को चमकते देखा,
न तुमको देखा न बालों को झिटकते देखा ।

सुना न शब्द किसी फूल ने तरस खाकर,
हृदय को सबने मगर मेरे धड़कते देखा,

करोड़ों सो गये अपनी कहानियाँ कहते,
तुम्हारे नेत्र किसी ने न झपकते देखा ।

न फूल तोड़ा कोई आज तक कभी हमने,
दृगों से काम किया सबको महकते देखा,

दृगों से उनके सदा प्रेम का मिला संदेश,
हुआ तो यह भी कि अँगारे भड़कते देखा।

चषक के अक्षरों तक में लगाव मद का नहीं,
सुरा, सुराहियों में फिर छलकते देखा।

मुरक के रह गई कोमल कलाई फूलों की,
हृदय को टूटते देखा न दरकते देखा।

यही नहीं कि यत्न से ही छलक जाय चषक,
कभी - कभी तो अनायास छलकते देखा।

तो और रोना भला किसका 'भास्कर' देखें,
जो अपने अश्रु ही हमने न छलकते देखा।

*

ग़ज़ल : ३६

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता।
उर्दू का वज़न : मफाइल मफाइल मफाइल मफाइल।

तुम्हारा कहीं पर ठिकाना नहीं है,
कहो तो कहाँ आना - जाना नहीं है।

तुम्हें किस हृदय में समाना नहीं है,
किसी के मगर हाथ आना नहीं है।

हृदय नाम हो किंतु है कुछ नहीं वह,
जहाँ आपका आना - जाना नहीं है।

अकेले ही अच्छा, यहाँ तुम न आना,
यहाँ दो जनों का ठिकाना नहीं है।

उठाकर हृदय से लगा लो अभी तुम,
या कह दो कि अपना बनाना नहीं है।

यों विश्वस्त बैठा हूँ तेरी गली में,
कि जैसे कहीं आना - जाना नहीं है।

हमें भी तो सौंदर्य ही से है पाला,
तुम्हें दुख अकेले उठाना नहीं है।

कहा आज हँस दो तो बोले तुनक कर,
सुमन पर सुमन तो खिलाना नहीं है।

बना है उसासों से सौंदर्य तेरा,
अभी वह भी मुझसे पुराना नहीं है।

झुकायेंगे सिर तो उन्हीं के चरण में,
जहाँ सिर झुकाकर उठाना नहीं है।

अमर क्यों न मुझको कहे मृत्यु मेरी,
कि अब दूसरा कुछ बहाना नहीं है।

रुलाये न हमको न आँसू ही पोछे,
किसी को अगर मुस्कुराना नहीं है।

चलो 'भास्कर' आज यह कहके रोयें,
भला किसके घर रोना गाना-नहीं है।

✱

ग़ज़ल : ३७

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाता गुर ताराज यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफऊल मफाईलुन मफऊल मफाईलुन।

मरने पै मेरे अपने पै कुछ त्रास न कर बैठें,
वह मेरे साथ अपना भी उपहास न कर बैठें।

वह प्रश्न न कर बैठें हम अरदास न कर बैठें,
संभव नहीं कि मिलते ही उपहास न कर बैठें।

कातर समझ के तुझको हे नत नेत्र सोच तो ले,
वह नेत्र कहीं वाणों का अभ्यास न कर बैठें।

तुमने जो मूर्ख हमको कहा इसका भय नहीं,
भय तो है इसका हम कहीं विश्वास न कर बैठें।

मधुबाले ! अपने नेत्र में आँसू न आने दे,
प्यासे कहीं इसका भी अर्थ प्यास न कर बैठें।

करवट बदल-बदल के प्रतीक्षा में हर निमिष,
हम मृत्यु ही से ऊब के सहवास न कर बैठें।

बढ़ते मनोविनोद से कुछ भी नहीं है दूर,
वह निज कृपा से बढ़के कहीं त्रास न कर बैठें।

मरने से कौन डरता है केवल न आना तुम,
आँखें हमारी तुमसे कुछ अरदास न कर बैठें।

दुर्गति वह अपनी आज बनाते बनी है मित्र,
देखें तो वह भी प्रेम अनायास न कर बैठें।

तुम 'भास्कर' हठी हो वह है ईश्वर हठी,
रतियों तजो कि रति का वह उपवास न कर बैठें।

गज़ल : ३८

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

हिला देती है परदा तो करो निर्णय कहाँ तक हो,
अमित सौंदर्य ! रसिकों की अमित जय जय कहाँ तक हो।

सलोने रूप की वाणी लवण पूरित तो होगी ही,
हृदय के घाववालो ! वह भला मधुमय कहाँ तक हो।

लड़ाई कर चुके कुछ प्रेम कर ले आगे लड़ लेंगे,
हमारा - आपका जाने अभी निर्णय कहाँ तक हो।

अचल यौवन तुम्हारा इक सरल सी वास्तविकता है,
खुपा जाता है नेत्रों तक मैं तो संशय कहाँ तक हो।

हृदय झूठा सही फिर भी बिका जाता है हाथोंहाथ,
चकित सौंदर्य ! बतला तो यह क्रय-विक्रय कहाँ तक हो।

कहीं सचमुच मिलन ही हो न जाये मंच के ऊपर,
दिखावे के लिये यह प्रेम का अभिनय कहाँ तक हो।

कहाँ तक अपने पापों को गिनें सौंदर्य के आगे,
स्वयं अपने ही मुख से अपना ही परिचय कहाँ तक हो।

रसिक को प्रेम - कृत्यों के लिये दिन-रात सुविधा है,
भला मेरे विचारों में समय - कुसमय कहाँ तक हो।

इधर आई उधर रति रंग रँगवाकर कहीं पहुँची,
भलाई और बुराई का यहाँ संचय कहाँ तक हो।

हमारी चितवनों में अब चमत्कारों की बस्ती है,
अलख सौंदर्य को लखकर हमें विस्मय कहाँ तक हो।

हमारा यह हृदय क्या था कि नर्तकियों का डेरा था,
बहुत बदला मगर बेचारा देवालय कहाँ तक हो।

हमारी लेखनी कागज सियाही प्रेम में डूबे।
हमारी 'भास्कर' कविता का और आशय कहाँ तक हो।

★

ग़ज़ल : ३८

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वजन : मफाईलुन, मफाईलुन, मफाईलुन मफाईलुन।

हृदय के पार फिर जैसे हृदय को चीर आ पहुँचा,
अभी क्षण - भर नहीं बीता कि फिर इक तीर आ पहुँचा।

चलाये चल नहीं सकता है जिसके तीर आ पहुँचा,
धनुष जिससे नहीं उठता वही रणधीर आ पहुँचा।

किधर मैं मन में भावों का भरे तूणीर आ पहुँचा,
कि चारों ओर से कोई चलाता तीर आ पहुँचा।

अरे सुमिरन ठहर क्षण - भर चरण तेरे पखारूँ मैं,
छलकता जलजलाता यह दृगों मैं नीर आ पहुँचा।

यही बंसी की तानें फिर लगीं गुंजारने मन में,
यह वृन्दावन ने आ घेरा कि यमुना तीर आ पहुँचा।

यह धोखे का नहीं अवसर अभी यों ही हँसे जा तू,
दृगों में प्राण अटके हैं समय गंभीर आ पहुँचा।

हृदय ने भाव का तरकश उठा के किस को ललकारा,
तो क्या सौंदर्य मद में चूर वह ही वीर आ पहुँचा।

वह क्या आये कि दुर्गमता - सुगमता में हुई परिणत,
स्वयं अपना हृदय मानो लिये तदबीर आ पहुँचा।

चरम सीमा व्यथा की हो गई अब 'भास्कर' चेतो,
मिटा देगा जो चितवन भर में सारी पीर आ पहुँचा।

☆

ग़ज़ल : ४०

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वजन : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

यहाँ युग हो गये रहते परस्पर हर्ष होता है,
वह बस्ती छोड़ दो कब की वहाँ संघर्ष होता है।

तुम्हारा ध्यान होने को सौ - सौ वर्ष होता है,
मगर उन सबका केवल इक निमिष निष्कर्ष होता है।

उसे भी प्रेमवाले सुख से हँसकर झेल जाते हैं,
वही जो मृत्यु का सबसे कठिन संघर्ष होता है।

प्रतीक्षा की व्यथा मेरी समझना है तो यों समझो,
तुम्हारा इक निमिष मेरा करोड़ों वर्ष होता है।

निचोड़ इक जन्म - भर का एक आँसू वह भी सूखा - सा,
यही विस्तार होता है, यही निष्कर्ष होता है।

जहाँ पर बिजलियों का नृत्य, तूफ़ानों का मेला हो,
मिले यदि प्रेम तो ऐसी जगह भी हर्ष होता है।

तड़क जाते हैं मन के तार इक-इक करके जब इक-इक,
तभी वह गान सुन पड़ता है सुनकर हर्ष होता है।

कहें क्या प्रेम के उन्मादियों की रुचि है उन्मादी,
वही आनन्द मिलता है जहाँ संघर्ष होता है।

वही तुड़वाता है तारे गगन के हम गरीबों से,
तुम्हारी चितवनों में इक अतुल उत्कर्ष होता है।

विलंब - अविलंब यौवन की चढ़त में 'भास्कर' कैसी,
कला किरणों को गिनने - भर में सोलह वर्ष होता है।

★

ग़ज़ल : ४१

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता।
उर्दू का वज़न : मफाइल मफाइल मफाइल मफाइल।

बिछे देख कर भी ठहरते नहीं हैं,
हृदय पर मगर पाँव धरते नहीं हैं!

कभी आके क्षण-भर ठहरते नहीं हैं,
मगर चित्त से भी उतरते नहीं हैं।

यह सौंदर्य वाले निखरते हैं केवल,
सरल चित्त ठहरे सँवरते नहीं हैं।

शपथ है तुम्हारी सलोनी लटों की,
तुम्हारे भी मारे उबरते नहीं हैं।

वह अभिनय की अंतर कला कैसे समझें,
कभी मंच पर तो उतरते नहीं हैं।

दरस भी करेंगे परस भी करेंगे,
यह सब कुछ किये बिन तो मरते नहीं हैं।

गले मिलके भी लहरों से यह किनारे,
तने जा रहे हैं लहरते नहीं हैं।

तेरे सामने आँख के हीरे-मोती,
यह भी दृष्टि में अब ठहरते नहीं हैं।

यह सौजन्य देखो कि करते हैं सब कुछ,
मगर कहते हैं कुछ भी करते नहीं हैं।

उन्हें उजागर किये हैं उन्हें मेरे छाले,
कि झुलसे पड़े हैं उभरते नहीं हैं।

बिखरना उन्हें आता है 'भास्कर' जी,
मगर कुछ समझकर बिखरते नहीं हैं।

★

ग़ज़ल : ४२

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

कनखियों से हमें सौंदर्य तू बेकार हँसता है,
तुझे भी खोके पाया प्रेम तो भी प्रेम सस्ता है।

खुली हैं खिड़कियाँ लाखों हर इक से रस बरसता है,
पुकारें भी चली आती हैं आँखों आँखों रसता है।

कहीं यौवन छलकता है, कहीं यौवन बरसता है,
कहाँ सौंदर्य ले आया हमें यह कैसा रस्ता है।

झुमाता झूमता है कौन अकारण कौन हँसता है,
वह सबसे पूछते फिरते हैं किसका नाम मस्ता है।

सुनहरे मन से कम की बात जगवाले नहीं करते,
तुम्हारी रूप की गलियों में फिर भी प्रेम सस्ता है।

झपट के जा, हृदय चरणों में धर जीवन सुफल कर ले,
बुलाता है तुझे सौंदर्य तो सीधा-सा रस्ता है।

तुम्हारी चितवनों का चितवनें आनन्द लेती हैं,
हृदय बे जान बिन पहिचान जाने क्यों तरसता है।

यह किसने करके मेरा ध्यान गाने का किया निश्चय,
कि पृथ्वी नृत्य करती है गगन से स्वर बरसता है।

यहाँ कारण न आने का तुम्हारे हम बताते हैं,
हमारे घर के आने - जाने का रस्ता कुरस्ता है।

तुम्हारा कोई भी दुखद है उच्चरित होना,
गले में तो बहुत पीछे हृदय में पहले फँसता है।

कभी तो चितवनें कठिनाई से दृग में उतरती हैं,
कभी ऐसा भी लगता है हृदय तक सीधा रसता है।

अगर सौंदर्य का रस पान कर ले प्रेम का पल्लव।
तो उपवन से बहुत अच्छा यह ऊसर में सरसता है।

वह भी कम जौहरी तो है नहीं हे 'भास्कर' प्रियवर,
जिसे सोना समझता है, उसे जी-भर के कसता है।

☆

ग़ज़ल : ४३

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू की ध्वनि : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

खला सौंदर्य का बाज़ार, मुँह ताकें कहाँ तक हम,
करें सौदा न कोई मूल्य ही आँकें कहाँ तक हम।

न बरसायें जो आँसू नेत्र को ढाँकें कहाँ तक हम,
अरी चितवन की आँधी धूल भी फाँकें कहाँ तक हम।

अहं, मन, बुद्धि, चित, सत पर तुम्हारा पड़ गया पहरा,
तुम्हीं बतलाओ अब औरों का मुँह ताकें कहाँ तक हम।

तू ही सौंदर्य दृग बाणों से सबको पूर दे रखकर,
हृदय के घाव सुइयों से भला टाँकें कहाँ तक हम।

हृदय-कमलों पै छवि-भँवरे तुम्हारे जूझे जाते हैं,
इन्हें चितवन के पंखों से भला हाँकें कहाँ तक हम।

अगम बरसात-सी होने लगी है रूप-यौवन की,
नहाने से नहीं घटती छकें छाकें कहाँ तक हम।

न आये लाज तुमको और हृदय गद्‌गद भी हो जाये,
बता दे इतना कम-से-कम तुझे ताकें कहाँ तक हम।

दिनोंदिन अपना यौवन-रूप हम पर खोलनेवाले,
सकुच कर नेत्र पर चादर न भी ढाँकें कहाँ तक हम।

कोई कम प्रेम वाला होता तो संतोष कर लेता,
झरोखों से उन्हें हे 'भास्कर' झाँकें कहाँ तक हम।

★

ग़ज़ल : ४४

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा राजभा राजभा ।
उर्दू का वज़न : फ़ायलुन फ़ायलुन फ़ायलुन फ़ायलुन ।

अश्रु क्या गिरते हैं कहके शुभ आगमन ,
ढल रहे हैं सलोने सलोने सुमन ।

झूमती थी धरा झूमता था गगन ,
तब हुआ था हमारा - तुम्हारा मिलन ।

अब चरण जो हटा लो तो जानें सजन ,
हमने सिर रख दिया करके अंतिम नमन ।

मूक उनके वचन मूक मेरे वचन ,
हो रहा है दृगों में कथन - उपकथन ।

बात फिर भी जहाँ - की - तहाँ रह गई ,
मैं भी रोने लगा सुन के उनका रुदन ।

बन के लौ आँख से ही निकलने लगी ,
हा हृदय की जलन हा हृदय की जलन ।

मुझमें सामर्थ कुछ भी नहीं, ठीक है ,
फिर भी देखो तो क्या-क्या किया है सहन ।

हो नशा उसमें उतना अधिक से अधिक ,
जितना झूठे से झूठा हो तेरा वचन ।

जिस तरह बढ़ रहा है बुढ़ापा इधर ,
उस तरह बढ़ रहा है उधर बाँकपन ।

कोटि तम हैं इधर कोटि शशि है उधर,
वह है उनका भवन यह है मेरा सदन।

कान में मेरे बोले लगाकर हृदय,
'भास्कर' आज से तुम न करना नमन।

ग़ज़ल : ४५

हिंदी की ध्वनि : राजभा ताराज मातारा यमाता राजभा।
उर्दू का वज़न : फायलुन मफऊल मुफतैलुन फऊलुन फायलुन।

मिट गया मन तो मिटे, था ही मिटाने के लिये,
हम तो बैठे हैं तुम्हें अपना बनाने के लिये।

कुछ - न - कुछ मन ढूँढ़ लेता है बहाने के लिये,
इसको कोई चाहिए आँखें दिखाने के लिये।

सिद्ध रति कब होगी जानें, अब भी मेरे प्रेम को,
कुछ बहाना चाहिए जलने - जलाने के लिये।

आँखों आँखों ही में अब कुछ काम बनने का नहीं,
हो हृदय तो लाइये अब की मनाने के लिये।

फिर घटा को घेर के लाई बसंती सामने,
हम तरसने फिर लगे पीने - पिलाने के लिये।

हाथ - भर का हो गगन और पाँव - भर की हो धरा,
तब हृदय परियाप्त हो आँखें लड़ाने के लिये।

हर पथिक आता है, चलता है, चला जाता है बस,
बात ही क्या रहती है कहने - कहाने के लिये।

हम तो प्रेमी हैं ही मरते हैं तो मर जाने भी दे,
एक - दो कम ही सही तुझको सताने के लिये।

संकुचित हो विरह निशि और प्रात का आह्वान कर,
तारे सब उत्सुक हैं मेरे साथ जाने के लिये।

'भास्कर' जलते हैं हम सुख भोगते हैं जल के हम,
क्यों किसी से हम कहें ज्वाला बुझाने के लिये।

✠

ग़ज़ल : ४६

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

क्षणिक-सी मृत्यु से भी आयु - भर संग्राम करते हैं,
यहाँ तो प्रेम जब भी करते हैं अविराम करते हैं।

वह कैसे लोग होते हैं, जो अपना नाम करते हैं,
बता सौंदर्य वह अपने लिये क्या काम करते हैं।

हँसी होठों से लड़ती है चमक आँखों को कसती है,
व्यथा और प्रेम दोनो चित्त में संग्राम करते हैं।

दिवस और रात्रि उपमायें किसी की धड़कनों की हैं,
दिखाने के लिये करते हैं जब विश्राम करते हैं।

वही इक बात जो नेत्रों में बढ़ते - बढ़ते बढ़ती है,
उसी से दो हृदय पल - भर में जग अभिराम करते हैं।

हृदय से शब्द आता है हमें क्यों छेड़ते हो तुम,
तुम अपनी कामना देखो हम अपना काम करते हैं।

भला किस भाँति चूकें प्रेम और सौंदर्य आपस में,
यह आँखें मूँदकर अविराम अपना काम करते हैं।

शयन शूलों का हमको देके जगवालों ने भर पाया,
यहाँ सौंदर्य की पलकों पै हम विश्राम करते हैं।

चपल चितवन पै अपनी वह तो शासन कर नहीं पाते,
हमारी चितवनों को व्यर्थ में बदनाम करते हैं।

कभी संघर्ष था, होगा, न है प्रियतम प्रतीक्षा में,
तुम अपना काम करते हो हम अपना काम करते हैं।

हमीं क्या 'भास्कर' संसार - भर यह कहके रोता है,
जिसे पा जाते हैं अपना ही - सा बदनाम करते हैं।

ग़ज़ल : ४७

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन।

रे हृदय - पुष्प महक, दृष्टि के आँगन में महक,
बात तो जब है कि पहुँचा दे सुलोचन में महक।

ज्यों धरा फोड़के उड़ पड़ती है सावन में महक,
त्यों ही अंगों में तेरे छा गई यौवन में महक।

अबन गालों पै मलो अपनो सुगंधित अलकें,
हम ने लो मान लिया होती है कुन्दन में महक।

चमकी घुँघराली अलक ध्यान छुटा, नेत्र खुले,
हमको उलझा ही गई प्रेम के साधन में महक।

मैं न मानूँगा न मानूँगा न मानूँगा कभी,
प्रेम है तेरे हृदय में तो है पाहन में महक।

आ गये भँवरे उठा दीजिये घूँघट पल - भर,
और बढ़ जाय गमकते हुये यौवन में महक।

फूल के गुच्छे अकेले ही नहीं उलझी लट,
कुछ रसिक मन भी चुरा लाई है मधुवन में महक।

कैसा वह पुष्प है और कैसा है सौरभ उसका,
उसकी पद - रज के लगे आ गई पाहन में महक।

तुम तो फिर फूल हो हम सूँघनेवाले ठहरे,
हमको सौ कोस से आ जाती है पाहन में महक।

उस कमल - नेत्र से दो फूल गिरे, क्या दिन था,
आज तक आती है उजड़े हुये जीवन में महक।

भावना धूप के जलने से धुवाँ जो उट्ठा,
अश्रु फिर रुक न सके भर उठी लौयन में महक।

फूल बन जाता है औरों को बना देता है,
'भास्कर' व्यर्थ नहीं ढूँढ़ता बंधन में महक।

★

ग़ज़ल : ४८

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन।

ध्यान दर्शन न सही मिलना - मिलाना न सही,
किंतु दुखिया का हृदय तोड़ के जाना न सही।

तिरछी कनखी ही सही मिलना - मिलाना न सही,
तुमको यदि आता नहीं नेत्र लड़ाना न सही।

मैं जो उठने लगा तो रूठ के उसने यह कहा,
जाते हो, जाओ, मगर लौट के आना न सही।

मेरे उनमाद ने त्रयलोक्य रखा चरणों में,
यदि नहीं कोई भी अब मेरा ठिकाना न सही।

लाज के मारे हमीं भूमि में गड़ जायेंगे,
छोड़ सकते नहीं यदि आप लजाना न सही।

प्रेम - आरोप लगाकर ही करो प्राण - हरण,
और मिलता नहीं यदि कोई बहाना न सही।

मन के दर्पण में ही सौंदर्य प्रदर्शन होगा,
सामने आके मगर आँख लड़ाना न सही।

पाँव में श्रृंखला चितवन की पहन बैठोगे,
सामने आके कभी मन को चुराना न सही।

प्रेम की वार्ता लिख - लिखके अमर होऊँगा,
तुमको यदि भाता नहीं सुनना सुनाना न सही।

'भास्कर' उनसे कहो रात में परदा कैसा,
सामने आयें नहीं नैन लड़ाना न सही।

★

ग़ज़ल : ४९

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन।

जब भी देखा उन्हें दर्पण में सँवरते देखा,
इसके अतिरिक्त भला काम न करते देखा।

भूमि पै घुँघुँरू के सदृश बिखरते देखा,
उनके जब अश्रु गिरे फिर न ठहरते देखा।

'भास्कर' काल पवन चलना है जिनका जीवन,
प्रेम - अवरोध से उनको भी ठहरते देखा।

जो स्वयं सिंध का आधार भी है सेतु भी है,
एक नौका पै उसे पार उतरते देखा।

किसने बेदी को भला तेरी लखा, हमने तो,
चन्द्र के भाल पै मंगल को विहरते देखा।

चक्षु हैं उसके वृथा ध्यान वृथा ज्ञान वृथा
जिसने सौंदर्य पै यौवन न निखरते देखा।

तर गया आप भी पुरखों को भी अपने तारा,
आप पर जिसने हमें प्रेम में मरते देखा।

यह चषक प्रेम का अतृप्त का अतृप्त रहा,
कोटि यौवन ने भरा इसको न भरते देखा।

मोक्ष है डूबना इस प्रेम - महासागर में,
मैं कहूँ क्यों न किसी को भी उबरते देखा।

और हम पापी के पापी ही बने हैं अब तक,
तेरे दरबार में तो सबको सुधरते देखा।

आज तो आपका सौंदर्य वहाँ पहुंचा है,
'भास्कर' को भी जहाँ जल के न मरते देखा।

ग़ज़ल : ५०

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफायल फेलुन।

तुम स्वयं आके सुखद स्वप्न मिटाओ तो सही,
इतना सोऊँ कि तुम्हीं आके जगाओ तो सही।

प्रेम - बंधन से छटोगे भी बताओ तो सही,
जाऊँ - जाऊँ तो कहा करते हो जाओ तो सही।

अश्रु अंगारे मैं चूमूंगा गिराओ तो सही,
किंतु क्या दुख है तुम्हें मुझको बताओ तो सही।

बन के बिजली ही सही और नहीं यदि साधन,
जैसे मन चाहे मगर सामने आओ तो सही।

हम भी कर सकते हैं सब नृत्य तुम्हारे दाले !
इक चषक भरके इन हाथों से पिलाओ तो सही।

उनके मुँह मैं हूँ लगा मुझसे चषक ने यह कहा,
टूट जाऊँगा मुझे मुँह से लगाओ तो सही।

बंद कर लूँगा वहीं पाँव में बेड़ी भर कर,
भावना द्वार इन आँखों में समाओ तो सही।

जिसके जीवन के हर इक पल पै रखी दृष्टि कड़ी:,
उसको अब मरते न देखोगे बताओ तो सही।

संकुचित हो के यह संसार हृदय हो जाये,
या हृदय विश्व हो तुम मन में समाओ तो सही।

हो तो हो जाय प्रलय, नष्ट हो संसृत, हो जाय,
प्रेम वह पहिला सा इक बेर देखाओ तो सही।

'भास्कर' लाख बनो कान में उँगली खोंसो,
फिर भी कविता पै मेरी झूम न जाओ तो सही।

कैसा बहुमूल्य वह अनमोल घड़ी होती है,
आँख जब मेरी उन आँखों से लड़ी होती है।

★

ग़ज़ल : ५१

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं ।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन ।

कुछ गुलाबी - सी, सलोनी - सी बड़ी होती है,
आँख वह छिप नहीं सकती जो लड़ी होती है।

ध्यान इसका भी रहे नेत्र लड़ानेवाले,
बात यह हर घड़ी छोटी से बड़ी होती है।

अब तो यह हाल है मैं दृष्टि उठाता हूँ जिधर,
रूप - यौवन की उधर पंक्ति खड़ी होती है।

आँख खुलते ही यह विश्वास उमड़ पड़ता है,
प्रेम की काल से कुछ आयु बड़ी होती है।

एक मैं ही नहीं रोता हूँ लड़ाकर आँखें,
उन कपोलों पै भी मोती की लड़ी होती है।

दृष्टि यदि वाण है तेरा तो कुसुम - कलियों का,
यदि है वर भी तो सितारों से जड़ी होती है।

बात मैं रखता हूँ सौंदर्य के ईश्वर फिर भी,
मुझसे तो वे तेरी हरइक बात बड़ी होती है।

पड़ गई उनके जो कर में कहीं तलवार कोई,
देखते - देखते फूलों की छड़ी होती है।

मैं हृदय धर के हथेली पै वहाँ फिरता हूँ,
जिस जगह लोगों को प्राणों की पड़ी होती है।

तेरे पद - चिह्न समझ करके मैं झुक पड़ता हूँ,
जब चमकदार कोई वस्तु पड़ी होती है।

प्रेम की आयु में त्रयलोक्य की संपति लुट जाय,
उस पै यह रंग कि इक आध घड़ी होती है।

'भास्कर' लड़ के ही मानेंगे हृदय - दृग दोनों,
लड़ने - भिड़ने कि इन्हें बान पड़ी होती है।

☆

ग़ज़ल : ५२

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाताल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : मफऊल मफाईल मफाईल फायलुन।

बेकार पूछ लेते हो क्या क्या करेंगे हम,
जो करेंगे प्रेम में अच्छा करेंगे हम।

दर्शन करेंगे प्रेम से सेवा करेंगे हम,
मन में तुम्हें बिठाल के पूजा करेंगे हम।

सोलह सिंगार करके हृदय क्या करेंगे हम,
जब वह न होंगे अपनी ही पूजा करेंगे हम।

रोने लगे तो व्यर्थ भी हा हा करेंगे हम,
तुम बोल दोगे तो भी पुकारा करेंगे हम।

नैनों में नैन डाल के मन को सँभाल के,
देखा करेंगे आप तो देखा करेंगे हम।

तेरे चरण में शीश झुकाकर उठेंगे क्या,
सौंदर्य, तेरी आज परीक्षा करेंगे हम।

जीवन - निर्वाह का भी तो रस्ता बताइये,
यदि छोड़ देंगे प्रेम तो फिर क्या करेंगे हम।

हम दीन - हीन पागलों का होगा और कौन,
तुझको तजें तो किसका सहारा करेंगे हम।

इच्छा की ताक - झाँक जो यों ही बनी रही,
तुम सामने रहो तो भी ढूँढ़ा करेंगे हम।

छापा हृदय पै मारके जाओगे तुम कहाँ,
परछाईं बन के देखना पीछा करेंगे हम।

दर्शन न देनेवाले का जब तक न बदले मन,
तब तक यह हेरे - फेरे लगाया करेंगे हम।

आजन्म इसी ठौर इस वृक्ष के समीप,
जब तक न लौटियेगा प्रतीक्षा करेंगे हम।

तुम ज्योति के हो 'भास्कर' हम अंधकार के,
तम क्या करोगे रूप पै छाया करेंगे हम।

★

ग़ज़ल : ५३

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल फऊलुन फेलुन।

प्राण दे दूँगा मगर तुमको हँसाऊँगा मैं,
रूठनेवाले तुझे आज मनाऊँगा मैं।

दृग में पैठूँगा हृदय में भी समाऊँगा मैं,
तेरा बनकर भी तुझे अपना बनाऊँगा मैं।

तेरी परछाईं की परछाईं के नीचे-नीचे,
उस जगह हूँ कि जहाँ हाथ न आऊँगा मैं।

कोई कवि कितना सजायेगा भला कविता को,
तुझको आभूषणों से आज सजाऊँगा मैं।

तुमको पाने के लिये अपने को खाने के लिये,
कौन-सा कर्म है जो कर न उठाऊँगा मैं।

तुम गये, विश्व गया अब जो चषक भर भी गया,
कौन बैठा है यहाँ किसको पिलाऊँगा मैं।

चीन्ह देना है तो ध्यानों में तनिक ठहरो तो,
क्या निमिष-भर में भला चित्र बनाऊँगा मैं।

प्रेम-उनमाद में नैराश्य की मदिरा पीकर,
मृत्यु की राह सहज रूप को पाऊँगा मैं।

जिसको तापेंगे रसिक लोग, यह संसृत क्या है,
तेरे बैराग्य में वह धूनी रमाऊँगा मैं।

यह तो संभव है कि लहरों को तेरी ओढ़ लूँ मैं,
तुझमें भव - सिंधु मगर डूब न पाऊँगा मैं।

'भास्कर' डूब के रह जाओगे उदयाचल में,
जिस घड़ी तुमको हृदय - ज्योति दिखाऊँगा मैं।

★

ग़ज़ल : ५४

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाताल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : मफऊल मफाइल मफाइल फायलुन।

इन चितवनों का मारा भी अच्छा नहीं होता,
बिन मार खाये फिर भी सुभीता नहीं होता।

इस वक्र गति को तज के सुभीता नहीं होता,
मैं क्या करूँ कि रास्ता सीधा नहीं होता।

दिन - रात बीतते हैं कि जैसे नहीं हुये,
सच है विरह से बढ़के भी धंधा नहीं होता।

तूही अकेला प्रेमी है यह पूछा फिर कहा,
क्या मेरे रूप का कहीं चरचा नहीं होता।

सौभाग्य भी तो प्राप्य है यदि आँख साथ दे,
सौंदर्य ! तेरी दृष्टि में क्या - क्या नहीं होता।

आँखों में आँखें डालके क्या देखते हैं आप,
प्रेमी के पुण्य - पाप का लेखा नहीं होता।

आने के मार्ग लाख हैं सौंदर्य चित्त में,
लेकिन निकल के जाने का रस्ता नहीं होता।

शव के किसी के देख के यह कहके रो पड़े,
इन प्रेमियों का कोई भरोसा नहीं होता।

बिन माँगे लेंगे तुमको भी तुमसे कहाँ है ध्यान,
प्रेमी किसी के दान का भूखा नहीं होता।

जिस भाव भी मिलता हो महा पुण्य है ले लो,
सौंदर्य किसी भाव भी महँगा नहीं होता।

इक दृष्टि भर का होता है यदि नेत्र से कहें,
वृत्तांत प्रेम का कभी आल्हा नहीं होता।

द्वार पर छोड़ जायँगे हम तुमको 'भास्कर',
इस प्रेम - पुण्य - कार्य में साझा नहीं होता।

ग़ज़ल : ५५

हिंदी की ध्वनि : राजभा ताराज सलगं राजभा।
उर्दू का वज़न : फायलुन मुफतैल फेलन फायलुन।

आश्रित होकर निराश्रित हो गई,
आज मेरी दृष्टि कलुषित हो गई।

लड़ पड़ी फिर लड़के लज्जित हो गई।
दृष्टि मानो रति में परिणत हो गई।

तुझसे मिलकर और तो जो भी हुआ,
आत्मा सौंदर्य - रंजित हो गई।

अंधकारों के बने हैं लक्ष्य हम,
ज्योति सारी उनमें केन्द्रित हो गई।

फूल जब से चढ़ गया वह ध्यान में,
कल्पना श्रृंगार सुरभित हो गई।

मिल गये तुम जब से हे सौंदर्य-धन,
सृष्टि सारी हमको वर्जित हो गई।

एक थी लौ प्रेम और सौंदर्य की,
जाने क्यों दो में विभाजित हो गई।

बाण केवल इक चला उस ओर से,
मुझ तक उसकी गणना अगणित हो गई।

वास्तविकता जब यवनिका में छिपी,
कल्पना से बढ़के कल्पित हो गई।

मन वह दर्पण है कि जिसमें आपकी,
पड़ के परछाईं सुरक्षित हो गई।

अब अवस्था दिवस - निशि के पार कुछ,
थोड़ी - थोड़ी अर्ध - निद्रित हो गई।

इस जरा के शास्त्रिय संगीत में,
प्रेम की द्रुत गति विलंबित हो गई।

उसकी दुर्गति हो गई हे 'भास्कर',
जिस पै उनकी दृष्टि अंकित हो गई।

★

ग़ज़ल : ५६

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाता मातारा ताराज यमाता मातारा ।
उर्दू का वज़न : मुफतैल फऊलुन मुफतैलुन मुफतैल फऊलुन मुफतैलुन ।

मुख फेर इधर, अब देख तो लें, इक प्रेमी की क्या दुर्गति है ,
या यह ही कृपा करके कह दे, इक दृष्टि में तेरी क्या क्षति है ।

दुर्भाग्य हमारा भी कुछ - कुछ, कुछ - कुछ उनकी भी सहमति है ,
दुर्गति जो हमारी है मित्रो वह दुर्गति की भी दुर्गति है ।

उर में है स्वरूप, स्वरूप में मन, उस मन के भीतर वह स्थित ,
अब कौन उसे छीने मुझसे, किसका पौरुष किसकी गति है ।

उस तुंग शिखर पर सुंदरता ने अपना डेरा डाला है ,
उस तक है सीधी चढ़ाई जो बस नाम उसी का उन्नति है ।

जब मैंने शपथ लेकर यह कहा मैं प्राण अभी दे डालूँगा ,
तो बोले कि सूझ निराली है इसमें मेरी भी सम्मति है ।

सब साथ तुम्हारा दे देंगे इक शब्द भी मैं न कहूँगा यहाँ ,
यह संसृत सारी तुम्हारी है, इस काल तुम्हारी बहुमति है ।

यह आकर्षण का यौवन है, सम्मोहन इसको कहते हैं ,
वह भी अब ढूँढ़ रहे हैं मुझे जिनमें मेरी अविरल रति है ।

सुंदरता का भगवान स्वयं रोगी की नाड़ी पकड़े है ,
फिर भी रोगी मर जाता है जाने क्या ईश्वर की गति है ।

सुंदरता भी पच सकती नहीं बिन दान किये बिन धर्म किये ,
यौवन के मद में मतवालो, चेतो, यह भी इक संपति है ।

सुंदरता के लक्षण क्या हैं, अब नाज़ कहें किसकी किसकी,
जितने दृग हैं, उतनी चितवन सबकी अपनी-अपनी मति है।

ग़ज़ल : ५७

हिंदी की ध्वनि : राजभा ताराज सलगं राजभा।
उर्दू का वज़न : फायलुन मुफतैल, फेलुन, फायलुन।

और भी वह दृष्टि आकर गड़ गई,
सब बनी बिगड़ी हमीं पर मढ़ गई।

बढ़ गई सीमा से आगे बढ़ गई,
प्रेम की परमित गगन पर चढ़ गई।

आज वह वाचाल चितवन कान में,
और भी इक मंत्र-सा कुछ पढ़ गई।

भावना ने नेत्र चुंबन कर लिया,
यह सुहृद हमसे भी आगे बढ़ गई।

एक चितवन भर के देखा तो इधर,
किन्तु तत्पश्चात त्योरी चढ़ गई।

निज कुआकृत का यही इक दोष है,
गढ़नेवाले न गढ़ा यह गढ़ गई।

एक चितवन उनकी अचरज हो गया,
भाग्य का दुर्भाग्य सारा पढ़ गई।

रौंद कर लज्जा भरी कुलकान को,
प्रीति ठठा मारके सिर चढ़ गई।

बात जल्दी में नहीं हे मित्रवर,
धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते बढ़ गई।

चूनरी ऐसी ही होनी चाहिये,
नाम कढ़ने का लिया और कढ़ गई।

यह हिंडोला प्रेम का है 'भास्कर'
बढ़ गई जो पेग वह फिर बढ़ गई।

ग़ज़ल ५८

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाताल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : मफऊल मफाईल मफाईल फायलुन।

सौंदर्य इतना कर दे जो इससे अधिक न हो,
जब मैं न रहूँ तेरा भी कोई रसिक न हो।

रति वार्ता उसे न हमारी बखानिये,
जो नव न हो रसीली न हो सामइक न हो।

संपर्क जो स्वरूप का सह जाय दो घड़ी,
वह क्यों न प्रेम करने लगे, क्यों रसिक न हो।

जीवन न साथ मेरा दे तो भी जहाँ हो तू,
संभव नहीं वहाँ पै यह तेरा रसिक न हो।

मर्याद नष्ट होनी ही मेरी तो सुनो,
एकांत में हो जाय कहीं सामुहिक न हो।

वह प्रेम कोई प्रेम है जो हो पुकार के,
सदृश पुष्प गंध के जो मानसिक न हो।

मैं चूम तो लूँ अश्रु तुम्हारा मगर नहीं,
शंका है मेरे प्रेम का पारिश्रमिक न हो।

सौंदर्य चाहे जैसा हो है ग्राह्य प्रेम को,
भगवान को दोहाई मगर आधुनिक न हो।

मित्रो ! हमारी भाँति ही प्राणों पै खेलिये,
वह मेल न करियेगा जो शतवार्षिक न हो।

सौंदर्य अपना दे दे मगर एक बात है,
अतिरिक्त तेरे और हमारा रसिक न हो।

चलने की धुन में भूल गया रात - दिन का फेर,
इस 'भास्कर' की भाँति भी अंधा पथिक न हो।

ग़ज़ल : ५९

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभाल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : मफऊल फायलाल मफाईल फायलुन।

सौंदर्यवालो ! तुमही हमारे रसिक भी हो,
तुमही हो हमसे न्यून भी तुमही अधिक भी हो।

सौंदर्य में नवीन भी हो सामयिक भी हो,
अर्थात् मेरी भाँति अभी आधुनिक भी हो।

सौंदर्य कहता है कि न पाये मुझे तथापि,
पथ हो प्रदर्शकादि हो पथ पर पथिक भी हो।

चलनी में पानी भरने से कुछ बढ़ के प्रेम है,
जो काल को भी नाप के रख दे क्षणिक भी हो।

सौंदर्य कल्पना में न रह पाया एक क्षण,
जब प्रेम ने हृदय से कहा वास्तविक भी हो।

चलने लगे तो हँस के बोले कि मेरे प्राण,
आँसू गिरें न एक विदा हार्दिक भी हो।

बतलायें वह औरों को भी उँगली पकड़ के राह,
सदृश सूर कोई कहीं पर पथिक भी हो।

चलने लगे तो बोले कि सुधि करना मेरी निस,
कुछ थोड़ी देर प्रेम - प्रणय मानसिक भी हो।

संकेत तेरा माना कि चितवन की वस्तु है,
फिर भी कभी-कभी तो कोई शाब्दिक भी हो।

अतिरिक्त प्रेम - क्षेत्र में संभव है जिसमें सब,
ऐसा भी कहीं देखा कि रक्षक वधिक भी हो।

कहता है प्रेम 'भास्कर' से छंद जो कहो,
श्रृंगार से भरा ही नहीं दार्शनिक भी हो।

★

ग़ज़ल : ६०

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर ।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुनम फाईलुन ।

अभी भरता नहीं मन चाँद से चम्पा-कली तेरा,
हृदय को फाड़ के रख देगी इसकी चाँदनी तेरा।

दिखादूँ उसका मुख तो मुक्त कर दूँ तुझको बंधन से,
कहाँ रहता है स्वामी बोल तो सुधि भैरवी तेरा।

अरी ओ जीवनी सौंदर्य के चरणों में नत हो जा।
इन्हीं चरणों में है सब कुछ निहित हे नर्तकी तेरा।

हृदय का रथ मिला तुझको अरे मन और क्या लेगा,
किसी सोने के दिन सौंदर्य होगा सार्थी तेरा।

करों को गह नहीं सकती चरण में रह नहीं सकती,
भला निबहैगा कै दिन साथ हमसे लक्षमी तेरा।

तुझे यदि चैन मिलता है तो बस प्रेमी की आँखों में,
अरे क्या कहना है सौंदर्य पथ की काँकरी तेरा।

मुझे मुझसे छुड़ाया और फिर सौंदर्य के कर से,
बग़ल में अपने ले भागी बुरा हो नौकरी तेरा।

न जाने कितने भँवरों को भुलाकर बावला कर दे,
बड़ा उनमादकारी है सरल मुख मंजरी तेरा।

जिये जुग-जुग यह जोड़ी और विरह की अग्नि भड़काये,
भला हो चन्द्रमा तेरी भला हो चाँदनी तेरा।

डिबो पाया न तारों को दृगों में 'भास्कर' अपने,
न देखा अंत उसने रात-भर की जीवनी तेरा।

★

ग़ज़ल : ६१

हिंदी की ध्वनि : नसल नसल नसल नसल नसल नसल नसल नसल ।
उर्दू का वज़न : मफायलुन मफायलुन मफायलुन मफायलुन ।

तुम्हारे जल - विहार से हुये बहुत जो तंग हम,
तो डूब के उभर पड़ेंगे बनके नव तरंग हम।

तुम्हारे दृष्टि - वज्र की हृदय में भर उमंग हम,
अगम सहन हसन से ही करेंगे तुमको दंग हम।

तुसारि बार - बार तूने देखा फिर भी रिक्त है,
इधर न तूने देखा किंतु बन गये निषंग हम।

जहाँ - जहाँ रुचै तुम्हें चले चलो निशंक हो,
चलेंगे संग - संग हम उड़ेंगे संग - संग हम।

कथा रँगैंगे ऐसी जिससे सज उठेगा चित्रपट,
कहाँ तलक सकुच - सकुच मरेंगे प्रेम - रंग हम।

परंतु क्या बदल सके परम्परा सुप्रीति की,
समाये फूल - फूल तुम रँगाये रंग - रंग हम।

ठहर - ठहर उड़ेंगे फिर भी बाण छू न पायेगा,
हँसेंगे बाण पर तेरे बनेंगे यदि बिहंग हम।

हमारे भी स्वभाव शील रूप का जवाब क्या,
जगत यह जिस पै कहता है तुम्हारे हैं सुअंग हम।

करेंगे प्रेम उनसे तो झिझक के भाग जायँगे,
अभी तो कुछ सिखा रहे हैं उनको रंग-ढंग हम।

सुदृष्टि का जवाब नैन से नहीं हृदय से दें,
सुरा पिलाने वाले को पिलायें कैसे भंग हम।

पड़ै न और कान में चढ़ै न और बोल में,
प्रथम उन्हें सुनायँगे स्वप्रेम का प्रसंग हम।

नितांत ज्योति मंद होने पायेगी न रूप की,
जो सर्द 'भास्कर' हुआ तो बन गये पतंग हम।

ग़ज़ल : ६२

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाता पातारा ताराज यमाता मातारा।
उर्दू का वज़न : मफऊल फऊलुन मुफतैलुन मफऊल फऊलुन मुफतैलुन।

हे सूर्यदेव सच - सच कहना, या छाँह मिल गई बादल की,
या सुंदरता ने डाली है, शीतल घमछहियाँ आँचल की।

फुनगी तक मुझे पहुँचने दो, छाया तजने दो भूतल की,
तुम लोक - लोक के फिर खाना, बरसात लगा दूँगा फल की।

निद्रित दृग की शंखाकृति पर पलकों की शोभा क्या बरणूँ,
अरुणांबुज के दल के ऊपर इक लोक पड़ी है काजल की।

सिहरन उलझाये देती है वर्णांकित छाये देती है,
मस्तिष्क उड़ाये देती है मलमल में छवि हलकी - हलकी।

बिजली का ताना - बाना है तारे चन्दा की बेलें हैं,
इस चादर में भी छबि किसकी यह विद्युत् के ऊपर चमकी।

जो आने को थे आये नहीं, हम अब तक फिर भी जीवित हैं,
बस और न पूछो हे मित्रो, कुछ और नहीं बातें कल की।

हो प्रेम-सुरा या विरह ज्वाल, तब कविता आग उगलती है,
पानी पीकर यदि बहुत हुआ, नाली बह जाती है जल की।

जल कैसे उड़ा, कैसे पहुँचा मन मन मिलने का मेला है,
श्रीकृष्ण द्वारिका में भीगे गगरी वृन्दावन में छलकी।

वे दृग चमके अब क्या होगा, बरसात कि बौखा या दोनो,
बिजली के पीछे होती है अक्षौहिणियाँ दल - बादल की।

सौंदर्य गया यह कहता हुआ, आँखें तो खोले खुलती नहीं,
और नाज बने तुम फिरते हो, करते हो बातें रति बल की।

ग़ज़ल : ६३

हिंदी की ध्वनि : राजभा ताराज सलगं राजभा।
उर्दू का वजन : फायलुन मफऊल फेलुन फायलुन।

इक नये से फूल पर फिर जम गई,
दृष्टि हा ! फिर बढ़ते-बढ़ते थम गई।

वह ही अपने से अधिक सुन्दर हुआ,
दृष्टि उनकी जिस हृदय पर जम गई।

कान तक उनके गई मेरी उसाँस।
मेरी अभिलाषा से फिर भी कम गई।

बेधड़क वह छवि थिरकती - नाचती,
छमछमाती आई थी छम - छम गई।

विश्व के तूफ़ान सब आये इधर,
मृत्यु जाने कैसे पीछे थम गई।

यह ग्रहण लट-मेघ की छाया नहीं,
चन्द्र पर सुमिरन सियाही जम गई।

आपके आलोक की पहली किरण,
विश्व तजकर मन दिये पर रम गई।

आयु जितनी ही कटी है प्रेम में,
उतनी ही अच्छी रही उत्तम गई।

शीश पर डाही गगन हिलने लगा,
यदि धरा चरणों के नीचे थम गई।

भीरुता और प्रीति में अरि भाव है,
एक क्रम - क्रम आई इक क्रम-क्रम गई।

मेरी परछाईं भी प्रेमी जीव है,
ज्योति भी बनकर वह तुममें रम गई।

आस्था तुझको चरण था थाहना,
हा सुभागिन पाँव में ही रम गई।

एक उनकी दृष्टि भी है 'भास्कर',
क्या हृदय के पार बे उद्यम गई।

ग़ज़ल : ६४

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन।

ठोकरें खाते हैं हम आँख मले जाते हैं,
प्रेम की राह मगर मित्र चले जाते हैं।

देखके प्रेम की गोधूलि हमारे दृग में,
रात-दिन आने के पहले ही चले जाते हैं।

आँख में देख के मुड़-मुड़ के हँसाते हँसते,
वह ही हैं छोड़ के हमको जो टलें जाते हैं।

उनका झूठा ही वचन हमको भला लगता है,
अपने उत्साह में हम नित्य छले जाते हैं।

कुछ बुढ़ापे का भी है कोप हमारे ऊपर,
प्रेम के मारे मगर और गले जाते हैं।

दृष्टि ही दृष्टि में बातें जो लगीं अब होने।
आप-ही-आप सभी प्रश्न टले जाते हैं।

हाथ छोड़े नहीं जाते हैं किसी के गहकर,
और कस-कस के लगातार मले जाते हैं।

आपका फिर भी है व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक,
हम ही कुछ आपके साँचे में ढले जाते हैं।

हम खलेंगे ही सदा खलते चले आये हैं,
क्या नई बात है, जो आज खले जाते हैं।

रौंदे जाते हैं हृदय पुष्प मगर यह कहकर,
'भास्कर' तेरी शपथ पाँव जले जाते हैं।

✯

ग़ज़ल : ६५

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफाईलुन।

फूल जिन डालियों पै खिलते हैं,
उनपे भँवरे भी प्राय: मिलते हैं।

अपने कृत्यों पै वाह कह-कह के,
मुस्कुरा - मुस्कुरा के खिलते हैं।

जिनको भगवान ने किया सुन्दर,
बेअलंकार भी वह खिलते हैं।

जीते क्या हैं मरे हुये मन के,
मृत्यु की कीच में कढ़िलते हैं।

चोली - दामन अमर सखा क्यों हैं,
दोनो इक साथ मिलके सिलते हैं।

रोक सौंदर्य ! यदि बनें तुझसे ;
आज अतृप्त नेत्र मिलते हैं ।

फूल बोला उतावले भँवरो ,
हम तो खिलते ही खिलते खिलते हैं ।

अच्छी कविता वह है जिसे सुनकर
वाह होती है, शीश हिलते हैं ।

सिर के बल प्रेमी ही नहीं चलते
पाँव सौंदर्य के भी छिलते हैं ।

देखता हूँ कि राह में मेरा ,
फूल कुछ अदबदा के खिलते हैं ।

अपना सौरभ लुटा के औरों पर ।
फूल ही हैं जो मित्र खिलते हैं ,

'भास्कर' जी स्वरूप वालों से ,
बाँह भर के हृदय से मिलते हैं ।

★

ग़ज़ल : ६६

हिंदी की ध्वनि : सलगं लराज भाल यमाताल राजभा ।
उर्दू का वज़न : फैलुन मफायलात मफाईल फायलुन ।

नाम उनके अपने आँसुओं में घोल - घोल के ,
रसिकों की टोली चलने लगी बोल - बोल के ।

काजल दृगों में डालते हैं घोल - घोल के ,
चितवन को बाँटते हैं मगर तोल - तोल के ।

यह फूल अपनी मस्तियों में डोल - डोल के ,
क्यों मुसकुरा रहे हैं हृदय खोल - खोल के ।

काँटों को चुनके फेंकिये मत उनकी राह से ,
झोली में मेरी डालिये सब रोल - रोल के ।

जैसे हृदय लुटाता हूँ मैं यों लुटाइये ,
छवि वालो इस प्रकार नहीं तोल - तोल के ।

हीरे कहीं पै मोती कहीं किसने मित्रवर ,
झिकते हैं भीगे केश यहाँ डोल - डोल के ।

सौंदर्य तेरी ठोकरों के खेल के लिये ,
लाया हूँ मैं हृदय बड़ा अनमोल मोल के ।

पंछी को बंद पींजरे में सुख भी है बहुत ,
सौंदर्य चारा देता है पट खोल - खोल के ।

मैं पूछता हूँ भिक्षुकों की भाँति क्यों वसंत !
कलियों ने दल पसार दिये खोल - खोल के ।

संचित - सुकीर्ति मौन ने पूछा कि 'भास्कर' ,
क्यों आबरू गँवाता है तू बोल - बोल के ।

★

ग़ज़ल : ६७

हिंदी की ध्वनि : सलगं लराजभाल यमाताल राजभा ।
उर्दू का वज़न : फेलुन मफायलात मफाईल फायलुन ।

मदिरा पिलाई और न पिलाते चले गये,
सौरभ लटों की सबको सुँघाते चले गये।

जब फूल खिलाये तो खिलाते चले गये,
अपना सभी स्वरूप दिखाते चले गये।

वह नृत्य की कला के सभी अंग मित्रवर,
इक ओर से दृगों से दिखाते चले गये।

अपना स्वरूप देखके हम सबके रूप में,
जिस - जिससे पाई आँख लड़ाते चले गये।

परिणाम दोनो भूल गये आँख लड़ते ही,
हम पीते गये आप पिलाते चले गये।

मानों वसंत बाँध के चलते हैं पाँव में,
निकले जिधर से फूल बिछाते चले गये।

उसने सरल स्वभाव से देखा सदा परंतु,
कुछ धोखे पै धोखा हमीं खाते चले गये।

आरंभ ही की देर थी अब रण जो छेड़ दी,
तीखे से तीखा बाण चलाते चले गये।

मेरी गली में आये थे मेरे लिये परंतु,
हरएक को वह अपना बनाते चले गये।

सब कुछ भी देके जैसे कि कुछ भी नहीं दिया,
इस भाव से वह और लजाते चले गये।

सौंदर्यवान जितने हुये आदि काल से,
सब मेरे इक हृदय में समाते चले गये।

जितना जला तू 'भास्कर' सच बात तो यह है,
उतना तुझे वह और जलाते चले गये।

ग़ज़ल : ६८

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर ।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन ।

भिखारी प्रेम के घेरे तुम्हारा द्वार बैठे हैं,
इधर दो - चार बैठे हैं उधर दो - चार बैठे हैं।

तुम्हारे तेज में डूबे हुये हम ध्रुव से भी आगे—
गगन से भी बहुत ऊपर बिना आधार बैठे हैं।

अकेली कामना क्या भावना संकल्प इत्यादिक,
हृदय में आसरे तेरे कई परिवार बैठे हैं।

तुम्हारी अनउपस्थिति में अनेकों भाँति के संबल,
बिना पूछे-गछे मन पर किये अधिकार बैठे हैं।

बतायें रक्त क्यों सदृश जल के नित्य बहता है,
कहीं वे आदि से खींचे हुये तलवार बैठे हैं।

अब उस रागी पै निर्भर है वह आ पाये न आ पाये ,
यहाँ तो चैन से तोड़े हृदय के तार बैठे हैं ।

बढ़ा दे हाथ अब राधे पहन लें चूड़ियाँ जी भर ,
युगों से कृष्ण तेरे घर बने मनिहार बैठे हैं ।

तुम्हारे ध्यान में पत्थर से पत्थर भी पिघलता है ,
हमीं कल स्वप्न में तुम पर मन अपना हार बैठे हैं ।

न जाने क्या समझकर तुम हमें कदरूप कहते हो ,
हमारे आसरे लाखों किये श्रृंगार बैठे हैं ।

तुम्हारा जब भी मन हो भास्कर हमको भी ले चलना ,
हम अपना बोरिया - बँधना किये तैयार बैठे हैं ।

ग़ज़ल : ६८

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं ।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन ।

सत्य कहता हूँ जिधर नेत्र उठाकर देखा ,
प्रेम से रिक्त हर इक वस्तु को नश्वर देखा ।

रूप जो कहिये तो सुन्दर से भी सुंदर देखा ,
आपसे बढ़के मगर कोई न मनहर देखा ।

आपको देख के निशिराज को क्षण भर देखा ,
ठीक आकाश और पाताल का अंतर देखा ।

जैसे दर्पण पै गिरै भारी - सा पत्थर कोई ,
मन की दुर्गति यह हुई तुमने जो मुड़कर देखा ।

लोक-परलोक तजा, दृष्टि तजी, मन भी तजा ,
आँख से आँख मगर तुमसे लड़ाकर देखा ।

रूप तो चाहता है प्रेम सदा ही सबसे ,
किन्तु आघात में उसको सदा तत्पर देखा ।

रूप जँमाल लिये प्रेम झुकाये मस्तक ,
आपकी दृष्टि में यह नित्य स्वयंवर देखा ।

मरने - जीने की शपथ तो नहीं खाते हैं हम ,
आपका रूप मगर हमने निरंतर देखा ।

हमने आदर का ही अनुभव किया अपशब्दों में ,
इससे क्या होता है, जो तुमने निरादर देखा ।

मौलवी पंडितों से मन न भरा तो इक दिन--
नेत्र में आपके हर बात का उत्तर देखा ।

काल के फेरे लगाते हो उसी के द्वारे ,
'भास्कर' तुमसे काला नहीं मधुकर देखा ।

ग़ज़ल : ७०

हिंदी की ध्वनि : यमाता राजभा सलगं यमाता राजभा सलगं।
उर्दू का वज़न : मफाइल फायलुन फेलुन मफाइल मायलुन फेलुन।

तुनक के कहते हैं क्यों जी तुम्हारा प्यार कैसा है,
तनिक देखो तो मेरा आज का शृंगार कैसा है।

कनखियों से ग़रीबों पर यह अत्याचार कैसा है,
हृदय लेकर हमारा हमसे यह व्यवहार कैसा है।

कोई मिलता नहीं जो दो घड़ी रहकर बता तो दे,
बुरा अच्छा, वह जैसा है, हृदय संसार कैसा है।

पलटकर कोई कह जाता तो साहस कुछ तो बढ़ जाता,
पथिक थककर मरा था जो वह अब उस पार कैसा है।

गुलाबों की कली में चंद्रमा खिलते नहीं देखा,
तुम्हारे नेत्र का कैसे कहूँ आकार कैसा है।

कुसुम कलियों का यह अनुरोध, यह संकेत, यह यौवन,
हृदय क्यों पूछता है हमसे बारंबार कैसा है।

न तू प्रत्यक्ष हो सौंदर्य के ईश्वर न तज लज्जा,
मगर यह तो बता दे प्रेम का करतार कैसा है।

नहीं है तेरा जो कर्तव्य नौका पार करने का,
तो फिर माँझी ! यह तेरे हाथ में पतवार कैसा है।

रसिक तेरा तिलांजलि प्रेम की क्या पा गया कोई,
किसी की मृत्यु पर सौंदर्य यह त्योहार कैसा है।

यह सब निःस्वार्थ है या स्वार्थ है इसमें निहित कोई
अशिष्टाचार में सौंदर्य शिष्टाचार कैसा।

बहुत सप्रेम मुपंडों को सहलाते हैं हँस - हँसकर,
कोई पूछे तो शंकर से गले में हार कैसा है।

कलेजे पर तनिक-सा हाथ भी रखकर कभी पूछो,
बता अब 'भास्कर' तेरे हृदय का भार कैसा है।

★

ग़ज़ल : ७१

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

न यों आये तो अपनी मृत्यु को बुलवा के मर जाना,
लड़ाना आँख उनसे तो वहीं कुछ खाके मर जाना।

रसिक जन बिजलियों को नभ में बल खाते हुए देखो,
न पूछो उनसे कैसा होता है लहराके मर जाना।

हँसा सौंदर्य कहके कल से तुम मेरी प्रतीक्षा में,
कभी घबरा के जी उठना कभी घबरा के मर जाना।

कहा कुम्हलाये फूलों ने अरी कलियों अरी कलियों,
अभी हँसने के दिन हैं अंत है शर्मा के मर जाना।

अटल सत्ता से टकराना भी उससे प्रेम करना है।
अगर आता हो टकराते हुए टकरा के मर जाना।

अमर रसिकों में गांधी प्रेम - बलि - बेदी - दिवाकर हैं,
इसी को कहते हैं सौंदर्य को तड़पा के मर जाना।

हृदय और प्राण तुम सौंदर्य के अर्पण तो कर देखो,
तुम अपनी मृत्यु को जब चाहना तरसा के मर जाना।

हृदय में प्रेम सच्चा है तो फिर काहे की जल्दी है,
किसी सौंदर्य वाले पर कहीं अँगड़ा के मर जाना।

मिलन क्या है, रुचिर जीवन कला की पूर्ति का साधन,
विरह क्या है, किसी के रूप-गुण गा - गा के मर जाना।

किसी की गोद में हे 'भास्कर' सोने को मिल जाये,
सुलभ हो जाय फिर आमोद में दुलरा के मर जाना।

ग़ज़ल : ७२

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

हृदय में प्रेम-साधन ध्यान में सहवास करते हो,
हटो भी 'भास्कर' क्यों व्यर्थ की बकवास करते हो।

हृदय पर दृष्टि के चातुर्य का अभ्यास करते हो,
बड़ा संतोष है प्यारे बड़ा विश्वास करते हो।

कुआकृत पर हमारी हँसते क्या हो तुम समय-कुसमय,
स्वयं अपने ही उपहासों का तुम उपहास करते हो।

कहा सौंदर्य ने मुझसे कि मुँह बोलो या सिर खेलो ,
मन्ही मन चुपके - चुपके जाने क्या अरदास करते हो ।

कला और तेज तो सौंदर्य से इस क्षण बरसते हैं ,
छको जी भर के रसिको, आज क्यों उपवास करते हो ।

हृदय नित देते - देते प्राण निकले जाते हैं मेरे ,
उधर तुम हो कि नित नूतन निराला हास करते हो ।

हम ऐसे पत्थरों पर यह कनखियों की सुधा - वर्षा ,
यहाँ पानी नहीं मरता वृथा श्रम ह्रास करते हो ।

स्वयं शृंगार करते रहते हो इसकी नहीं चिंता ,
उपद्रव दर्पणों में भी तो बारोमास करते हो ।

कनखियों से जो हमको देखते जाते हो तुम मुड़-मुड़ ,
तो क्या तुम भी मेरे संकेत का अभ्यास करते हो ।

तुम्हें सर्वस्व जीवन - भर तो मैंने ढूँढ़कर खोया ,
मगर अब देखता जो हूँ हृदय में वास करते हो ।

भला अब क्या धरा है हम्में, इस जर्जर बुढ़ापे में ,
हमें क्यों खैंचकर तुम और अपने पास करते हो ।

हुआ फिर भी वही आँसू छलक आए न आँखों में ,
अरे सौंदर्य वालो ! हमसे क्या उपहास करते हो ।

सुनो हे 'भास्कर' छोड़ो भी यह दिन रात के फेरे ,
समय के पहिले मरने का वृथा अभ्यास करते हो ।

☆

ग़ज़ल : ७३

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभा गुर ताराज राजभा गुर ।
उर्दू का वज़न : मफ़ऊल फायलातुन मफ़ऊल फायलातुन ।

जयमाल यों नहीं तो मैं करके हरण रहूँगा ,
जैसे बनेगा आज मैं होकर वरण रहूँगा ।

इस क्षोभ को तुम्हारे में करके हरण रहूँगा ,
मैं चंद्रमा से अपने हटाकर ग्रहण रहूँगा ।

सौंदर्य का पुजारी तो मैं जन्म से ही हूँ ,
तुम ठीक कह रहे हो युवा आमरण रहूँगा ।

दृग - आहतों से विश्व है सारा पटा पड़ा ,
मैं किस जगह संभाल के यह आक्रमण रहूँगा ।

घूँघट जो हट गया है उसे फिर न मुख पै खैंच ,
विश्वास कर मैं बनके तेरा आवरण रहूँगा ।

सौंदर्य और प्रेम का स्वामी हुआ तो क्या ,
तेरे लिये तो जैसे श्रमण था श्रमण रहूँगा ।

सौंदर्य सत्य प्रेम है मेरा तो क्या हुआ ,
सदृश तेरे मैं भी सदा मनहरण रहूँगा ।

टूटा नहीं है दानियों का अब के विश्व में ,
लेकिन यहाँ पै भी मैं तुम्हारी शरण रहूँगा ।

निर्मोही ! तेरी आँख से जो खींच लेगा अश्रु ,
मर-मिट के भी मैं करके वही आचरण रहूँगा ।

मैं तो भटक रहा हूँ मगर 'भास्कर' जो हूँ,
तुमको भी अपने साथ कराके भ्रमण रहूँगा।

★

ग़ज़ल : ७४

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता।
उर्दू का वज़न : मफाइल मफाइल मफाइल मफाइल।

हृदय भी कहीं अग्रसर हो न जाये,
मुड़ो चितवनों अब समर हो न जाये।

भ्रमणशील सौंदर्य सौरभ ठहर जा,
यह संसृत भ्रमर ही भ्रमर हो न जाये।

सुधा में शरों को डिबोना न अपने,
कहीं खानेवाला अमर हो न जाये।

अभय दान सौंदर्य देना न मन को,
तुझी से कहीं वह निडर हो न जाये।

कमर देखने जो लगूँ तो यह भय है,
कहीं उनके सचमुच कमर हो न जाये।

समन्वय बिना हे उभरते सुखानन्द,
दुखों की तड़प भी प्रखर हो न जाये।

पतिंगे को लौ क्यों जलाती है रह-रह,
स्वयं भी कहीं वह अजर हो न जाये।

अगमता समागम की यह कह रही है,
कहीं कम तुझे रात - भर हो न जाये।

बहकती हुई आँसुओं की यह धारा,
कहीं फिर इधर से उधर हो न जाये।

निमिष - भर में आने का तेरा वचन है,
निमिष यह कहीं जन्म-भर हो न जाये।

हृदय से धरा पर अरे जानेवाले,
ज़रा भी कहीं 'भास्कर' हो न जाये।

☆

गज़ल : ७५

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल फऊलुन फेलुन।

कल्पना जब कभी सौंदर्य से घिर जाती है,
जैसे सागर में कमल होता है, तिर जाती है।

अपनी करणी को यह संसार भला क्यों रोये,
सब गई आई हमारे ही तो सिर जाती है।

दृष्टि वह आने को आती है हृदय तक मेरे,
प्रेम को देख के डर जाती है, फिर जाती है।

पहिले छितरा के दिशाओं में हृदय-खंडों को,
मनचली दृष्टि स्वयं आप छितिर जाती है।

गुण का और नाम का सुमिरण तो करें हम सौंदय,
किन्तु क्या बस है तेरी आँख सुमिर जाती है।

होके जाती है तेरी दृष्टि रुचिर तू जाने,
हम तो यह जानते हैं करके रुचिर जाती है।

कामनायें विजय पायेंगी या मर जायेंगी,
फौज अब इनकी जलाकर के शिविर जाती है।

बुद्धि कुछ भ्रष्ट हमारी नहीं होती सौंदर्य,
तेरे आतंक के जल-वायु में थिर जाती है।

दृष्टि उठकर जो लड़े उसका भी क्या कहना है,
किन्तु दुर्लभ है वही लाजों जो गिर जाती हैं।

रात अब 'भास्कर' जाती है तुम्हारे भय से,
और जल्दी में सभी खाके तिमिर जाती हैं।

★

ग़ज़ल : ७६

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफायलुन मफायलुन मफायलुन मफायलुन।

बिदा और आगमन में एक ही मुद्रा झलकती है,
जो कुछ चितवन चमकती है वही एँड़ी चमकती है।

नबेली नारि जैसे अपने प्रियतम से चमकती है,
क्षमा करियेगा, यों ही मुझसे यह चितवन झिझकती है।

हमारी दृष्टि को फूलों बधाई देके उर धारो,
इसी आभा में तुम क्या यह बंधी कलिका महकती है।

कई युग हो गये मन में लगी थी फाँस चितवन की,
मगर जैसे है कल की बात ज्यों की त्यों खड़कती है।

निरंतर जलनेवाली लौ पवन ! कुछ मान करती है,
भड़कती ही नहीं केवल भड़कने में लचकती है।

सदा यह खेल रहता है हमारी मृत्यु में हममें,
इधर से मैं सरकता हूँ उधर से वह सरकती है।

करो भौहें न तिरछी और न तुम इसका बुरा मानो,
हमारी आँख तो प्रियवर यों ही प्रायः झपकती है।

जहाँ जायेगी चितवन तू हमारा मन भी जायेगा,
हमें भी देखना है आज तू कितना बहकती है।

मगर देखे नहीं थे उनके आँसू आज के पहले,
सुना था फूल पर से ओस ढल - ढल के टपकती है।

चरण चुंबन प्रथम पश्चात् में दृग कोर का तजना,
हमारी दृष्टि के आगे तू क्या विद्युत् लपकती है।

बड़े आश्चर्य से मुझसे कहा सौंदर्य ने इक दिन,
तुम्हारे नेत्र से भी 'भास्कर' मदिरा छलकती है।

*

ग़ज़ल : ७७

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभाल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : मफ़ऊल फायलात मफाईल फायलुन।

शृंगार का सुगर्व मिटाया न जायगा,
रोतों से कह दो आज हँसाया न जायगा।

प्रत्यक्ष तो समक्ष भी आया न जायगा,
इससे अधिक भी उनसे लजाया न जायगा।

बोले कि कुछ हँसो तो चढ़ाऊँ भी मैं धनुष,
आँसू पै मुझसे बाण चलाया न जायगा।

मन से निकलके जाने का चरचा न कीजिये,
करके प्रयत्न देखिये जाया न जायगा।

दर्पण को तोड़ डालना सीधी-सी बात है,
टूटा तो फिर बनाये बनाया न जायगा।

पलकों ! थकी निगाह को कोड़ों से लाभ क्या,
मरकर भी इससे पाँव बढ़ाया न जायगा।

कहते हैं मरनेवाले से नैराश्य क्यों है, क्या,
चलते चलाते हाथ मिलाया न जायगा।

शृंगार आओ, देखो जवानी सुफल करो,
यह कहके क्या मुझी को बुलाया न जायगा।

आँसू दिखाये वह कि जो रोता हो तुम नहीं,
तुमसे तो रोना मुँह भी बनाया न जायगा।

बलिदान से हमारे जो संतुष्ट तुम हुये,
तो कह दो अब किसी को सताया न जायगा।

बोले कि तन के आयें तो हों 'भास्कर' बहुत,
यदि हाथ थाम लूँ तो छुड़ाया न जायगा।

*

ग़ज़ल : ७८

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन।

हमी हैं जो गरल से भी सुधा का काम लेते हैं,
कि दुख में भी उसी निर्मोहिया का नाम लेते हैं।

तू ही सौंदर्य निर्णय कर कि पदतल किसका कोमल है,
सुमन जपते हैं तेरा, काँटे मेरा नाम लेते हैं।

वह मेरा नाम जब लेते हैं तो सदृश मेरे ही,
उसाँसें भरने लगते हैं कलेजा थाम लेते हैं।

हृदय से लेन देन अपना नहीं है आजकल प्यारे,
न उसका काम करते हैं न उससे काम लेते हैं।

लड़ाना आँख बिन देखे तो है खेलवाड़ बच्चों का,
यहाँ तो चितवनों से चितवनों को थाम लेते हैं।

हम अपने सत्य संकल्पों से जो प्रतिमा बनाते हैं,
उसे भगवान कह-कहकर तुम्हारा नाम लेते हैं।

हमारे प्रेम का पोषण जो करता रहता है निशि दिन,
सबेरे उठके हम तो बस उसी का नाम लेते हैं।

उधर से नैन-शर निशि दिन उसाँसों के इधर से बाण,
न वह विश्राम लेते हैं न हम विश्राम लेते हैं।

सरलता यदि कहीं देखी तो उनके चित्त में देखी,
पलक से 'भास्कर' देखो धनुष का काम लेते हैं।

*

ग़ज़ल : ७८

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभाल भातारा।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलात मुफतैलुन।

ज्ञात भी है हृदय व्यथा क्या है,
तुम न पूछो मुझे हुआ क्या है।

क्या बताऊँ मुझे हुआ क्या है,
प्रेम है तुझसे पूछता क्या है।

मोल कुछ ले न ले अरे सौंदर्य,
पूछ तो ले कि बेंचता क्या है।

चित्त की भाव - वृत्ति है केवल,
काव्य में और नायका क्या है।

नित्य जीना है नित्य मरना है,
प्रेम की भी परम्परा क्या है।

मित्र आप शब्द कहने से पहले
यह तो सोचो मुहावरा क्या है।

आँख में आँख डालकर उनकी,
मन को दे डाल देखता क्या है।

कौन हो, क्या हो पूछते क्या हो,
ऐसे हो जिसका पूछना क्या है।

मृत्यु से भी अटल यह चितवन है,
इस हठीली का आसरा क्या है।

क्या नहीं है यह चितवनों पूछो,
यह न पूछो हृदय में क्या - क्या है।

मनलिया तो किया बड़ा उपकार,
और बतलाओ कामना क्या है।

हँसके बोले कि लुट चुका है तू,
'भास्कर' तुझमें अब धरा क्या है।

★

ग़ज़ल : ८०

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाताल यमाताल राजभा।
उर्दू का वजन : मफऊल मफाईल मफाईल फायलुन।

पहिले हृदय के पार ही जैसे उतर गई,
दृग तक वह दृष्टि आके न पूछो किधर गई।

काँटों से चलके फूल के मन तक उतर गई,
पागल की पगली बात किधर से किधर गई।

टूटी जो अश्रुमाल तो तारे कहाँ रहें,
मिट्टी में मिल गई जो धरा पर बिथर गई।

आँखें लड़ी हुई थीं निराला था रात थी,
ऐसे में नींद आई तो जैसे अखर गई।

हँसते जो मुझको देखा विरह निशि ने मित्रवर,
फिर क्या था मान - हानि समझकर पसर गई।

गुँथवाये बाल बाल में चितवन के शुभ्र तार,
तब जाके कहने - सुनने को वह लट सँवर गई।

वह दृष्टि बेधड़क है, इन आँखों के देखते,
जो गति हमारी चाहती थी आके कर गई।

चितवन चमकके टूट पड़ी इतना ज्ञात है,
जाने किधर से आई थी जाने किधर गई।

उनके दृगों के अश्रु भी अब देखने लगी,
पापिन हमारी दृष्टि भी कितनी निखर गई।

करणी तुम्हारी 'भास्कर' सौंदर्य ने कहा,
अच्छा हुआ सुधरते सुधरते सुधर गई।

*

ग़ज़ल : ८१

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

वही जो उनका मन कहता है मेरा मन भी कहता है,
मगर घूँघट जहाँ सरकाओ झगड़ा होके रहता है।

चमकता है अँधेरे में उजाला करके रहता है,
मगर अंगारा भी मित्रो बड़ी लपटों को सहता है।

झुके यदि शीश झुकता है, जलें यदि नेत्र जलते हैं,
हृदय शीतल तो होता है, बहे यदि नेत्र बहता है।

स्वयं तू ही जो गोचर हो रहा सामने मेरे,
तो फिर सौंदर्य बतला दे हृदय में कौन रहता है।

जिसे संसार में देखो हमीं दीनों में है उलझा,
तुम्हारा नाम लेता है हमारी बात कहता।

तेरी त्रासों का सब आनंद लेते हैं मगर प्यारे,
कोई रो - रो के सहता है कोई हँस-हँस के सहता है।

अरे ओ पूछनेवाले इधर आ मैं बताता हूँ,
यहीं पर प्रेम रहता है यहीं सौंदर्य रहता है।

पिलानेवाले अब नेत्रों से थोड़ी देर पीने दे,
सलोने नेत्र से अविरल सुरा का श्रोत बहता है।

विरह-निशि में वह अंधाधुंध है चारों दिशाओं में,
कि चितवन डूबी जाती है अँधेरा जैसे बहता है।

तुम्हारे सामने हे 'भास्कर' सौंदर्य रहता है,
नहीं तो प्रेम परपाटी अनुठी कौन कहता है।

*

ग़ज़ल : ८२

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वजन : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

बसंती वायु मंडल और महकते बौर मधुबाले,
किए देते हैं मन को और से कुछ और मधुबाले।

नपी हो जिस जगह मैंने बता वह ठौर मधुबाले,
कुँवारी भूमि ही पर अब पिऊँगा और मधुबाले।

मुझे कस्तूरी चंदन कुमकुमादिक की नहीं इच्छा,
लगादे मेरे माथे पर सुरा का खौर मधुबाले।

अभी सुख-दुख के कुछ अवशेष फिर भी शेष है मन में,
इन्हें भी धो बहाना है चषक इक और मधुबाले।

यह तेरे पीनेवाले फिरे सब हैं क़फन बाँधे,
नहीं आया है कोई भी पहन कर मौर मधुबाले।

फिरी चितवन में भी परियाप्त मादकता निकलती है,
यह है इच्छा तो हार इच्छा पिलाले और मधुबाले।

हृदय शीशा नहीं जो टूटकर जुड़ जाय गलने पर,
परख ले और परखा ले यह है बिल्लौर मधुबाले।

...युगों पर तू भरेगा यह चषक तो युग लगेंगे ही,
भरे जा हाँ अभी कुछ और हाँ हाँ और मधुबाले।

सुरा पर भी महक जो छा गई बतलाऊँ किसकी है,
किसी उद्यान में आने लगे हैं बौर मधुबाले।

सभी सौंदर्यवाले ज्योति ऐसे जगमगाते हैं,
न कोई श्याम होता है न कोई गौर मधुबाले।

चरम सीमा पर इच्छा रूप बन जाती है इच्छुक का,
पिपासा ही मेरी है 'भास्कर' इक और मधुबाले।

ग़ज़ल : ८३

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

स्वयं परमात्मा या उससे भी ऊँचा समझते हैं,
न जाने अपने को सौंदर्य वाले क्या समझते हैं।

हम अपने को भिखारी आपको दाता समझते हैं,
मगर कुछ माँगने से मृत्यु को अच्छा समझते हैं,

कहाँ यह योग्यता हममें कि उनसे प्रेम की ठानें,
यह अनुकंपा है उनकी जो हमें ऐसा समझते हैं।

समझ में जो तुझे आ जाय हे सौंदर्य वह सच है,
हम उनकी वार्ता का अर्थ कब उतना समझते हैं।

भुलावे में कभी पड़ जायँगे देखा करो मित्रो,
हमें पागल समझते हैं? बहुत अच्छा समझते हैं।

यहाँ सौंदर्य है रति है, अटल आनन्द सत्ता है,
वह झूठे हैं जो इस संसार को झूठा समझते हैं।

अरे संसारवालो! उनके संकेतों को तुम देखो,
हमें है प्रेम उनमे उनकी हम इच्छा समझते हैं।

न उलझा और हमको इन लटों के घूँघरों में तू,
तुझे तो यों ही हम त्रयलोक्य में इकता समझते हैं।

कृपा और वंदना दोनों ही हैं व्यवहार की बातें,
हम ऐसे बावले इन वस्तुओं को क्या समझते हैं।

कभी चिंता को हम खेलवाड़ कहके टाल देते हैं,
कभी चिंता को तुमसे भी बड़ी चिंता समझते हैं।

तुझी पर 'भास्कर' यदि रोष है सबसे अधिक उनको,
तो फिर क्या शेष है तुझको ही वह अपना समझते हैं।

★

ग़ज़ल : ८४

हिंदी की ध्वनि : लराजभाल यमाताल राजभा सलगं।
उर्दू का वज़न : मफायलात मफाईल फायलुन फेलुन।

विलंब जितना भी करते हो मुस्कुराने में,
बस उतनी देर समझ लो वसंत आने में।

न त्रास छाने में उतने न मुसकुराने में,
निपुण तो आप हैं बस तोड़ने - बनाने में।

भला यह शक्ति कहाँ है किसी बहाने में,
हमारी मृत्यु तो होगी हृदय लुटाने में।

हरएक भाँति विफल हो के उनसे मैं बोला,
न जाने आपको क्या मिलता है लजाने में।

जो थरथरा रहा है अश्रु पोछते मेरे,
यही तो हाथ नहीं था मुझे रुलाने में।

जिसे भी देखो वह निकले कुबेर से बढ़कर,
गरीब कोई नहीं है रसिक घराने में।

नये गुलाब ने हँसकर कहा यह कलियों से,
भ्रमर में होता है सौरभ मगर पुराने में।

हृदय का पुष्प तो पथ पर पड़ा है, रौंदे कौन,
वह तो लगे हैं स्वपद चिह्नों को मिटाने में।

दिखा के हाथ कहा रूप ने अरे दीपक,
यह छाला देख पड़ा है तुझे जलाने में,

न जाने कितनी अथा है कथा में अब मेरी,
हृदय विदीर्ण हुआ जाता है सुनाने में।

गगन के तारों को भूलो भी 'भास्कर' देखो,
खिला रहे हैं सितारे वह मुसकुराने में।

*

ग़ज़ल : ८५

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाता गुर ताराज यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफ़ऊल मफ़ाईलुन मफ़ाऊल मफ़ाईलुन।

दिन - रात हारता हूँ फिर हार की इच्छा है,
सौंदर्य से पराजित होना ही रसिकता है।

लड़ जाय आँख उनसे यह छोटी - सी इच्छा है,
संसार का न जाने क्या इसमें बिगड़ता है।

है सत्य का विधाता और स्वप्न में छलता है,
जिसने उसे देखा है वह उससे भी झूठा है।

इक तुम हो दूसरा मैं और तीसरी मदिरा है,
और शेष कुछ नहीं है संसार ही मिथ्या है।

दर्पण ने कहा उससे मैं दूँगा क्षोभ मत कर,
तू कह तो दे कि कितने -सौंदर्य की इच्छा है।

सौंदर्य क्या है ? कैसा है ? प्रश्न हैं पृथक् दो,
लेकिन है एक उत्तर, छबि सारी इकट्ठा है।

आ जायगी जवानी और आँख फिर से दोनो,
सौंदर्य कृपा तट है तो काहे की चिंता है।

जीवन में एक आशा होती सफल है निश्चित,
दुर्भाग्य किंतु यह है, वह मृत्यु की आशा है।

क्यों दूर जाये कोई दृग की झुकन से पूछे,
सबसे बड़ी गवाही रति प्रेम की लज्या है।

मैं रो रहा हूँ यदि तो क्या अर्थ रो रहा हूँ,
इक तिल है मुझसे अच्छा तलवा की तो शोभा है।

अब 'भास्कर' जी बैठे यह मंत्र जप रहे हैं,
यह प्रेम प्राण लेने - देने की समस्या है।

ग़ज़ल : ८६

हिंदी की ध्वनि : यमातागुर यमाता गुर यमातागुर यमातागुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

न जड़ता है न शठता है न बरबरता है फूलों की,
तुम्हारे सामने खिल जाना भावुकता है फूलों की।

भला लावण्य वह अनुमान के गहरे न हो कैसे,
यह भगवन् पाँव के नख में भी कोमलता है फूलों की।

फलों के सार मदिरा को फलों के साथ तज देवो,
मगर हम प्रेम क्यों छोड़ें यह मादकता है फूलों की।

युवा कालीन प्रतिभा सौ गुनी अब है बुढ़ापे में,
हृदय में मेरे पहिले से अधिक ममता है फूलों की।

न जाने कल को क्या कर डालेंगी यह मद-भरी आँखें,
अभी से इन गुलाबी कलियों में क्षमता है फूलों की।

हृदय दानी इधर है और उधर उपवन में चारों ओर,
हठीली मद-भरी अज्ञात याचकता है फूलों की।

रसिक राही तुझे काँटों के जंगल में ठिकना क्या,
कि इस झंखाड़ के उस पार सब प्रभुता है फूलों की।

हमें तू क्या डरायेगा अरे तूफान मतवाले,
दृगों में मेरे भी परियाप्त उत्सुकता है फूलों की।

हृदय छिदवाते हैं अपना गले का हार बनते हैं,
मगर अपने नहीं होते यह निष्ठुरता है फूलों की।

यहाँ तो चैन की बंसी बजाते हैं सदा सुख से
कि इक भोला हृदय है और सुन्दरता है फूलों की।

जो कुछ तुम देख पाते हो वह तो रंगत है दर्पण की;
जो दर्पण देख पाता है वह अलबत्ता है फूलों की।

हृदय में कंप जो उत्पन्न करके प्राण लेती है,
वह पत्थर की नहीं है 'भास्कर' सत्ता है फूलों की।

*

ग़ज़ल : ८७

हिन्दी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन।

मन हृदय प्राण बचाये न बचाये कोई,
हाँ ! मगर प्राण तो हँस-हँस के चलाये कोई।

आँख दिखलाई तो अब मुँह भी दिखाये कोई,
कर ले घायल मगर मलहम भी लगाये कोई।

अंत में वह ही हुआ आग लगी आँचल में,
और जलते हुए आँसू न सुखाये कोई।

आग भड़काये चला जाता है सौंदर्य अभी,
और ललकारता जाता है बुझाये कोई।

अपना घर अपने ही हाथों से जलाकर पागल,
चीख के कहता है अब आग लगाये कोई।

आज तो काँटों के झंखाड़ में मन होता है,
सामने आँखों के दो फूल खिलाये कोई।

अश्रु को पोछना तो दूर वह हँस देते हैं,
हा ! कहे देता हूँ मुझको न रुलाये कोई।

हम जहाँ बैठ गये बैठ गये बैठ गये,
अब हृदय से ही लगा ले तो उठाये कोई।

वह तो मुँह फेरे हुए बैठे हैं हमसे हे मन !
किससे कह डाले कोई किसको सुनाये कोई।

दूर ही दूर सही आँखों ही आँखों हो जाय,
जी नहीं चाहता तो पास न आये कोई।

अश्रु आ जायँगे बेकार किसी के दृग में,
'भास्कर' कह दो कि आँखें न लड़ाये कोई।

*

ग़ज़ल : ८८

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन।

इधर काँटे उधर सुमन समझ में कुछ नहीं आता,
मरुस्थल यह है या मधुवन समझ में कुछ नहीं आता।

यह अंगीकार की है या अनंगीकार की मुद्रा,
बड़ी धोखे की है चितवन समझ में कुछ नहीं आता।

रसिक मन और किन चरणों में अपना मैं करूँ अर्पण,
तरुण सौंदर्य दुख भंजन समझ में कुछ नहीं आता।

अभी कल ही तो लाखों पर गिराकर बिजलियाँ लौटे,
चले हैं आज फिर बनठन समझ में कुछ नहीं आता।

खड़े हैं प्रेम और सौंदर्य दोनो सामने मेरे,
करूँ किसका चरण - वंदन समझ में कुछ नहीं आता।

इधर हम रूप के भूखे उधर वह प्रेम के भूखे,
इधर लंघन उधर लंघन समझ में कुछ नहीं आता।

समर्थन प्रेम का करके अहं पाया तुम्हें पाया,
करें अब किसलिये खंडन समझ में कुछ नहीं आता।

अकेला इक हृदय मेरा उधर सौंदर्य युत लाखों,
करूँ किस-किससे गँठबंधन समझ में कुछ नहीं आता।

लड़ायें आँख जिससे चाहें हम उनसे ही लड़ती है,
यहाँ है स्वातंत्र्य या बंधन समझ में कुछ नहीं आता।

उधर तो मुसकुराहट की करोड़ों बिजलियाँ टूटें,
इधर फिर ज्यों का त्यों क्रंदन समझ में कुछ नहीं आता ।

किवाड़े बंद थे जो 'भास्कर' वह बंद हैं अब भी,
तदपि अंकित है अभिनंदन समझ में कुछ नहीं आता ।

✱

ग़ज़ल : ८९

हिंदी की ध्वनि : राजभा ताराज सलगं, राजभा ताराज सलगं ।
उर्दू का वज़न : फायलुन मफऊल फेलुन फायलुन मफऊल फेलुन ।

लाज भी आती नहीं वह बोलें बलखाते हुये,
प्राण भी तेरे न चल दें यों ही अँगड़ाते हुये ।

शब्द 'अपना' इक निरर्थक - सा विशेषण - मात्र है,
किंतु मधु से भी मधुर है कहते कहलाते हुये ।

दोष उनके भूलकर उनको हृदय दे देता हूँ,
सामने वे जिस समय आते हैं इठलाते हुये ।

हमको बदकर कैसे बहकाते हैं क्या बतलायें मित्र,
चितवनों में सान धर लेते हैं बहकाते हुये ।

अंत में परिणाम जो होगा सो होगा आज ही,
प्राण खैंचे ले रहे हैं ध्यान में आते हुयें ।

प्रेम का जीवन ही है मँझधार में जिस भाँति से,
बुलबुले बहते चले जाते हैं लहराते हुये ।

उनकी पायल सुनके सारे ध्यान झुरमुट बाँधके,
नाच उट्ठे मन में अपनी अपनी धुन गाते हुये।

पूछते हैं मुझसे दर्पण देखते हो या नहीं,
और हँस देते हैं अपने तलवे सहलाते हुये।

धीरे - धीरे यह हृदय रौंदा निकट आते हुये,
और प्राणों पर बना दी लौटकर जाते हुये।

जब नहाकर केश झिटके उसने अनुपम दृष्य था,
टूटे तारे जुड़ रहे थे जैसे टकराते हुये।

रात - दिन जब देखिये तब जाने किसकी खोज में,
'भास्कर' दौड़े चले जाते हैं अर्राते हुये।

*

ग़ज़ल : ८०

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता।
उर्दू का वज़न : फऊलुन फऊलुन फऊलुन फऊलुन।

बहुत प्रेम - कोहरा जो गहरा पड़ेगा,
तो भी कुछ सुनहरा सुनहरा पड़ेगा।

तुझे क्या कमल ! सुख से खिल संकुचित हो,
पड़ेगा जो दुख में तो भँवरा पड़ेगा।

दुचिंते में फंदा पड़ा जो गले में,
इकहरा नहीं मित्र दोहरा पड़ेगा।

यथाशक्ति पद को समेटे हुए चल,
कदाचित यह पथ और सँकरा पड़ेगा।

रँगा प्रेम-रँग में जो लोहे का बंधन,
वह भी धीरे-धीरे सुनहरा पड़ेगा।

चलो प्रेम-पथ पर तो इच्छायें मारो,
न प्रहरी रहेंगे न पहरा पड़ेगा।

किसे ज्ञात था इस प्रतीक्षा के पथ में,
समय यों चलेगा कि ठहरा पड़ेगा।

उन्हें ज्ञात था मेरे पीछे यहाँ पर,
यह छवियों का कटरे का कटरा पड़ेगा।

मैं डूबूँगा लेकिन करूँगा वह ठनगन,
कि घातक भी लहरों में लहरा पड़ेगा।

अरे झूलनेवालो! झूलो, गिरो मत,
कि फिर सिर के ऊपर यह पटरा पड़ेगा।

सुनो 'भास्कर' वह लिये जो खड़े हैं,
हमारे गले में वह गजरा पड़ेगा।

★

गज़ल : ९१

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

हमारी दृष्टि के आकर्ष में सौंदर्य पलता है,
पलक झपकी कि ओझल, फिर कहाँ यह योग मिलता है।

हमारा और तुम्हारा माना कुछ आकार मिलता है,
मगर सौंदर्य कब इस मुर्दनी मुखड़े पै खिलता है।

अगम सौंदर्य ही दुर्लभ नहीं है आपका प्रियवर,
हमारे - ऐसा प्रेमी भी बहुत ढूँढ़े से मिलता है।

फटे कपड़े लिये हाथों में पागल कहता फिरता है,
यही अचला है जो सौंदर्य के हाथों से सिलता है।

गिरा पैसा समझता है परम सौंदर्य को वह जन,
जो यह कहता है गहरे डूबिये गहरे में मिलता है।

किसी उद्यान में वह सुख कहाँ जो आपकी छवि में,
यहाँ कांधे से कांधा फूल का फूलों से छिलता है।

अरे ज्ञानी यह तूने मोक्ष कैसे माँग ली उनसे,
तुझे उस मुस्कुराहट में नहीं आनन्द मिलता है।

पड़े हैं गोद में हम जिसकी वह अलबत्ता आंधी है,
विना संकेत के जिसके कहीं पत्ता भी हिलता है।

करेंगे कर्म सबसे नीच भी, अर्थात मांगेंगे,
मगर हे 'भास्कर' सौंदर्य क्या कहते से मिलता है।

ग़ज़ल : ६२

हिंदी की ध्वनि : लराजभाल यमाताल राजभा सलगं।
उर्दू का वज़न : मफायलात मफाईल फायलुन फेलुन।

समस्त देह पै दीपक जलाये बैठे हैं,
हज़ार लौ की हम इक लौ लगाय बैठे हैं।

हृदय पै हाथ दाबे, अश्रु डाले, लट उलझे,
हमारी भाँति वह भी सिर झुकाये बैठे हैं।

बड़ा है बोझ अपना, जाओ तूफानों न झक मारो,
न जाने कितनों का हम दुख उठाये बैठे हैं।

युवा जो है भी रही है भी और रहेगी भी,
उसी किरण से हम आँखें लड़ाये बैठे हैं।

कोई मरा कि जिया दोनों एक हैं उनको,
कोई भी बात कहो मुसकुराये बैठे हैं।

कोई बुझाने न आया कि देख तो लेता,
न जाने कब से यहाँ घर जलाये बैठे हैं।

न जान और न पहिचान मूर्खता देखो,
किसी के नाम पै सब कुछ लुटाये बैठे हैं।

बिछुड़नेवाले न भूले कि हम हृदय देकर,
यहीं पै प्राण की बाजी लगाये बैठे हैं।

समस्त विश्व को त्यागा यह प्रेम है कि नहीं,
हृदय में मेरे अकेले समाये बैठे हैं।

हमारी तेरे विरह में बतायें क्या गति है,
अकाल मृत्यु को जीवन बनाये बैठें हैं।

गहैं वह या न गहै इसका ध्यान हो उनको,
हम अपने हाथों को ऊपर उठाये बैठे हैं।

हृदय-सुमन जो तपाता था 'भास्कर' तुमको,
उसे वह केश में अपने सजाये बैठे हैं।

ग़ज़ल : ९३

हिंदी की ध्वनि : लराजभाल यमाताल राजभा सलगं।
उर्दू का वज़न : मफायलात मफाईल फायलुन फेलुन।

लड़ा के आँख दो चाहे लजा के दो प्यारे,
चषक यह किंतु अधर से लगाके दो प्यारे।

लजीले बंधनों के पार आके दो प्यारे,
खुली है भीख तो आँखें लड़ा के दो प्यारे।

मिलाये नेत्र तो मन भी मिलाके दो प्यारे,
हमारी माँग से कुछ तो बढ़ा के दो प्यारे।

रहे न चेत भी क्या पाया क्या नहीं पाया,
अचेत करके दो जी भर पिलाके दो प्यारे।

तुम्हारे हाथ का कण भी हमारी संसृत है,
अधिक या न्यून का संशय मिटा के दो प्यारे।

हमारा भाग्य भी चरणों से नाप लो अपने,
और उसका शुल्क भी पहरा लगाके दो प्यारे।

चषक में यह तो नहीं कहता मैं सुधा ही हो,
गरल भी पी लूँ मगर मुसकुरा के दो प्यारे।

निगाह नीची रखो तो रखो मगर यह क्या,
हमारी झोली से आँखें हटा के दो प्यारे।

किया जो पीने का संकेत ही तो फिर क्या है,
सुरा सुरा ही चषक भी मँगा के दो प्यारे।

जहाँ पै माँगा किसी ने वहीं पै मर भी गया,
मरे हुये को न मारो जिला के दो प्यारे।

हठी है 'भास्कर' औरों का ध्यान ही छोड़ो,
उसे तो हाथ से अपने उठा के दो प्यारे।

ग़ज़ल : ६४

हिंदी की ध्वनि : यमाता राजभा सलगं यमाता राजभा सलगं।
उर्दू का वज़न : मफाईल फायलुन फेलुन मफाईल फायलुन फेलुन।

हमारे प्रेम का छोटा - सा यह संसार है कितना,
रसीली एक चितवन नाप ले विस्तार है कितना।

तुम्हारे आज के श्रृंगार पर श्रृंगार है कितना,
दृगों की कोर में रख लूँ यह प्रलयाकार है कितना।

रुधिर सौंदर्य सम्पति गर्व इतना तो अकारण है,
हमारी माँग के आगे यह सब भंडार है कितना।

भला कै दिन टिकैंगी कामना तृष्णा की यह फौजें,
तुम्हारी प्रेम की चितवन में यह परिवार है कितना।

उसी सौंदर्यवाले की क्षमा क्षमता असीमित है,
हमारे पाप करने का भला अधिकार है कितना।

वही सीमित है, मैं फैला हुआ हूँ कोने-कोने में,
हृदय में मेरे रहनेवाले का आकार है कितना।

कृपा है उसकी जो सुन लेता और सुनके हँसता है,
हमारी वाणी में सौंदर्य - शिष्टाचार है कितना।

यही कुछ मीठी - मीठी बिजलियाँ कुछ मेघ मन-मोहक
मधुर सौंदर्य ! तेरे क्रोध का अधिकार है कितना।

समय पर चूक जाता है, कभी कुसमय भी आता है,
यही मैं सोचा करता हूँ तुम्हारा प्यार है कितना।

बहुत उमड़ा तो तलवे चाट के मेरे स्वयं डूबा,
कहाँ मैं डूब के मर जाऊँ यह मझधार है कितना।

बहुत बनते हो लेकिन हो तो इक सौंदर्य का आँसू,
तुम्हार 'भास्कर' अस्तित्व का आधार है कितना।

*

ग़ज़ल : ९५

हिंदी की ध्वनि : लराजभाल यमाताल राजभा सलगं।
उर्दू का वज़न : मफ़ायलात मफ़ाईल फायलुन फेलुन।

न फूल था नकली कर बढ़ाके लूट लिया,
नहीं था कुछ तो नहीं को उठा के लूट लिया।

रुला के लूट चुके तो हँसा के लूट लिया।
वह फेर बाँधा कि अपना बना के लूट लिया।

कहाँ तक और कहूँ कोयले नहीं छोड़े,
हृदय जला तो उसे भी बुझा के लूट लिया।

किसी को अपना बनाने का भेद अब समझा,
कि जब भी चाहा उसे मुसकुरा के लूट लिया।

कहाँ धरा है यह भोला हृदय हमारा-सा,
कि व्यर्थ व्यर्थ में आँखें दिखा के लूट लिया।

न रोओ फूलों ! कि सौंदर्य है ही कुछ ऐसा,
हमें भी नाम हमारा लगा के लूट लिया।

बहुत दया जो दिखाई स्वरूपवाले ने,
तो अपने द्वार के ऊपर बुला के लूट लिया।

उठाये लाज का घूँघट न उठ सका उनसे,
भले ही आर्सी में मुँह दिखा के लूट लिया।

हज़ार पात्र लाख दृष्य कोटि मुद्रायें,
सुपात्र देखा कि नाटक रचा के लूट लिया।

हुआ था साथ जो पथ प्रदर्शक इक,
उसी ने उलटे भुलाया भुला के लूट लिया।

उजाड़ था ही पड़ा रहता ज्यों का त्यों लेकिन,
हृदय को जीता, बसाया, बसा के लूट लिया।

किसी गरीब ने सौंदर्य क्या बिगाड़ा था,
कि दीन-हीन को पागल बना के लूट लिया।

तुम्हारी आँख से सौंदर्य देखता है सदा,
तुम्हें भी 'भास्कर' आँखें दिखा के लूट लिया।

*

ग़ज़ल : ९६

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभा गुर ताराज राजभा गुर।
उर्दू का वज़न : मफऊल फायलुन मफऊल फायलातुन।

निश्चय मुझे मिलन है निश्चय उन्हें आना है,
अतिरिक्त इसके धोखा है भ्रम है बहाना है।

कोई न ठौर उनका कोई न ठिकाना है,
तो क्या हमें ही उनका इक घर भी बनाना है।

इस पार न रहना है उस पार न जाना है,
हम प्रेमियों का प्यारे लहरों में ठिकाना है।

निश्चित सफल प्रणय में भ्रम व्यर्थ मिलाना है,
सौंदर्य यदि नया है तो प्रेम पुराना है।

हम तुम हैं और सुरा है, वादन है, तराना है,
इस मोक्ष में रहना है आना है न जाना है।

सौंदर्य विश्व - भर की समपति है बँटाना है,
यह बोझ कुछ अकेले तुमको ही उठाना है।

क्यों प्रेम कर रहे हैं हम इसका भी कारण है,
संसार में आए हैं, कुछ करके भी दिखाना है।

उनके मनोरथों को हमको सफल है करना,
जो कुछ मिटा न उनसे वह हमको मिटाना है।

आँखों में अश्रु भर के प्रेमी के शव से बोल,
भय लग रहा है मुझको यह कैसा बहाना है।

सारांश प्रेम - जीवन का मेरे बस है इतना,
हँसना था हँसाना था रोना है रुलाना है।

सुन्दर सलोनी आँखों में अब तो 'भास्कर' जी,
अपने लिये भी कोई स्थान बनाना है।

★

ग़ज़ल : ९७

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता।
उर्दू का वज़न : मफाइल मफाइल मफाइल मफाइल।

कली खिल उठी मैं खिला जा रहा हूँ,
सुमन - जैसे मैं ही हुआ जा रहा हूँ।

न कुछ बिगड़े तेरा अरे जानेवाले,
चरण पर चरण मैं पिसा जा रहा हूँ।

धनी चितवनों मुसकुराहट न रोको,
मुझे बिकने दो यदि बिका जा रहा हूँ।

मिलन होगा तब तो ठिकाने लगूँगा,
अभी क्या ठिकाने लगा जा रहा हूँ।

नहीं यी थी सँची थी इक दिन,
मगर यह दशा है उड़ा जा रहा हूँ।

मैं आँसू सही तेरा फिर भी बहुत हूँ,
कपोलों को छूता चला जा रहा हूँ।

जो बैठा तो मन बनतरों की नहीं सुधि,
जो अब चल पड़ा, तो चला जा रहा हूँ।

किया तेरा सुमिरन तो क्या देखता हूँ
कि आँसू से अपने धुला जा रहा हूँ।

हृदय लेने - देने की उनको भी धुन है,
अकेले नहीं मैं घुला जा रहा हूँ।

यौवन को उनके उनकी चितवन से बचाना है,
उनके समक्ष दर्पण सब तोड़के जाना है।

किसी से प्रयोजन ? किसे देख कर मैं,
जिया जा रहा हूँ मरा जा रहा हूँ।

स्वयं बढ़के आये न आये वह चितवन,
मगर 'भास्कर' मैं मिला जा रहा हूँ।

ग़ज़ल : ९८

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाता गुर ताराज यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफऊल मफाईलुन मफऊल मफाईलुन।

दर्शन नहीं जो देना तो व्यर्थ क्यों सतायें,
कह दे हृदय की पीड़ा वह ध्यान में न आयें।

अवसर से लाभ लूटें आओ पियें - पिलायें,
फिर जाने कब उठेंगी यह भरी घटायें।

कैसी प्रलय मची है हम उनसे क्यों बतायें,
जी चाहता है अब भी वह और मुसकुरायें।

सौंदर्य की छबीली छबियों से मुँह चुरायें,
हम कापुरुष नहीं हैं मन मारके रह जायें।

उनसे हृदय तू कह दे हाँ शक्तियाँ दिखायें,
मेरे करों से पहिले आँचल तो वह छुड़ायें।

कर्मण्यता का स्वामी अपनी लीलायें कर रहा है,
हम - तुम भी आओ अपनी बिगड़ी हुई बनायें।

अब मौन वेदना के आँसू निकल पड़े हैं,
सौंदर्यवाले आँचल को अपने अब बचायें।

आँखें लड़ी हुई हों आँसू निकल रहे हों,
छबियाँ उमड़ रही हों तब पाँव लड़खड़ायें।

आँचल में नभ के यों ही तारे भरे पड़े हैं,
रोने लगूँ तो मेरे आँसू कहाँ समायें।

इच्छावरोध क्या है दृग मूँदना भी कैसा,
साँसों को बंद कर लूँ वह सामने तो आयें।

सौंदर्य जब से आया है 'भास्कर' हृदय में,
जल-भुन के मर गई हैं सब मन की कामनायें।

★

ग़ज़ल : ६६

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभा गुर ताराज राजभा गुर।
उर्दू का वज़न : मफ़ऊल फायलातुन मफ़ऊल फायलातुन।

मानी वसंत फूलों के रंग से पीला है,
यह दोष है हमारा सौंदर्य जो नीला है।

देखा हमें जो रोते तो बोले और हँसकर,
सौंदर्य की दोहाई क्या कंठ सुरीला है।

लेकर हृदय हमारा हमसे ही फिर गये तुम,
तुम क्या करो कि प्यारे सौंदर्य कुशीला है।

सौंदर्य मेरे पापों को पुण्य कहके बोला,
सब भ्रांति की महिमा है सब दृष्टि की लीला है।

हठ सुधि हुई जो उनको तो फिर प्रलय ही जानो,
उनसे कहीं न कहना सौंदर्य हठीला है।

चितवन झुकी जो तेरी मन डूब ही मरेगा।
मेरा हृदय भी प्यारे अत्यंत लजीला है।

प्राणों के आने-जाने-भर की है राह अब भी,
अरे बधिक गले में फंदा अभी ढीला है।

जो आदि में इक आँसू निकला था तेरे कारण,
सौंदर्य ! ध्यान दे कुछ वह भी अभी गीला है।

कैसे समझ सकेंगे हम एक दूसरे को,
मैं हूं विरह का मारा तू रंग रँगीला है।

हर रोम की प्रशंसा करना तो धृष्टता है।
बस 'भास्कर' यह कह लो सर्वांग सजीला है।

★

ग़ज़ल : १००

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभाल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : मफऊल मफाईलुन मफऊल मफाईलुन।

तू जिसपै झूम उठे वह मतवाला बना दे,
मधुबाले आज मुझको मधुबाला बना दे।

चैतन्यता जो पलटे उसे हाला बना दे,
फिर कुछ पिला के नेत्रों से मतवाला बना दे।

इक प्यासे के सौ टुकड़े तो कर देना सरल है,
जब जानूँ कि सौ टुकड़ों से इक प्याला बना दे।

अब मेरी चितवनों से पी तू ही उँडेल-उँडेल,
मतवाला बनाके ही मुझे मतवाला बना दे।

मधुबाले ! फिर न मागूँ मुझे इतनी पिला दे,
शोणित की बूँद को मधुशाला बना दे।

तेरे गले में जैसे है शशिभान का गजरा,
मेरे लिये भी ऐसी ही वरमाला बना दे।

मेरे हृदय को रौंद के मदिरा भी छिड़क दे,
वह दर्द इसमें भर दे कि मधुशाला बना दे।

शृंगार पिपासा का भी कर अपने ही ऐसा,
सदृश अपने उसको भी मधुबाला बना दे।

मधुबाले ! तुझे आज मैं वह प्यास दिखा दूँ,
जो जल के हमीं दोनों को मतवाला बना दे।

सौगंध तेरी मद-भरी आँखों की सुनेत्रे,
जल क्या पवन को तू चाहे हाला बना दे।

सौंदर्य तेरी 'भास्कर' न पिलायेगा चषक से,
कर दोनों अपने जोड़ के तू प्याला बना दे।

★

ग़ज़ल : १०१

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता ।
उर्दू का वज़न : मफाइल मफाइल मफाइल मफाइल ।

कनखियों का अपनी बहुत मान समझा,
मगर मार डाला न अनजान समझा ।

पियो, तब कहो तुमने मदपान समझा,
वह क्या समझा जो करके अनुमान समझा ।

हृदय तो दिया उसके सम्मान के हित,
मगर पानेवाले ने अपमान समझा ।

जो मन्दिर निराकार हिन्दू ने माना,
तो काबे में मन्दिर मुसलमान समझा ।

अगर तुमने समझा हमारी व्यथा को,
तो हमने यह समझा कि भगवान समझा ।

मिला मुझको अवकाश कब मेरे दाता,
भिखारी ने कब मान अपमान समझा ।

न कुछ लेता - देता मगर दुख तो यह है;
कि इक पूर्व परिचित को अनजान समझा ।

छिपाई नहीं आँख सौंदर्य तुझसे,
तुझे देखना तेरा अपमान समझा ।

किया उसने आँसू के पीने का चरचा,
मगर मद के प्यासे ने मदपान समझा ।

हृदय में समाकर हृदय लूटने को,
वह सौंदर्यवाला महादान समझा।

हृदय तेरा सौंदर्य पत्थर का पाया,
तभी से तो पत्थर को भगवान समझा।

हृदय ऐसे अनमोल हीरे का उसने,
न कुछ मूल्य समझा न कुछ मान समझा।

जवानी में हमने भी पी 'भास्कर' जी,
न मदपान समझा न विषपान समझा।

★

ग़ज़ल १०२

हिंदी की ध्वनि : राजभा ताराज मातारा यमाता राजभा।
उर्दू का वज़न : फायलुन मफऊल मुफतैलुन फऊलुन फायलुन।

प्रेम में डूबा हुआ इक गीत गाने दे मुझे,
लोक और परलोक का क्रंदन मिटाने दे मुझे।

बाण तेरा कह है रहा छोड़ जाने दे मुझे,
और मन कहता है उस तक बढ़के आने दे मुझे।

मौन पूरा जब है पाँचों तत्त्व स्तंभित करें,
और तुझसे भी कहा ले मुसकुराने दे मुझे।

बाण जितने चाहे उतने मार चलनी कर हृदय,
किंतु क्षण - भर बेधड़क आँखें लड़ाने दे मुझे।

शेष संसृत को बचाले छवि तरंगों का प्रलय,
और बलैयाँ ले के सबकी डूब जाने दे मुझे।

प्रेम-गाथा व्यर्थ तब है रो न दे यदि सुनके तू,
रूपवाले धैर्य रख दो बोल गाने दे मुझे।

अंत में वह ही हुआ, तू आप भी रोने लगा,
मैं निरंतर कह रहा था अब न ताने दे मुझे।

प्रेम प्रलयाकार तूफानों से मधुबाले न डर,
सब लहरियाँ होंगी केवल झूम जाने दे मुझे।

आग जिसने है लगाई वह ही यह भी कहता है,
धर्म है मेरा, बुझाऊँगा, बुझाने दे मुझे।

वह समय कब आयगा जब मैं कहूँ अब मत पिला,
और तू मुझसे कहे, चुप रह पिलाने दे मुझे।

जितना मुझसे बन पड़े तू बढ़ती जा मन की व्यथा,
मुसकुराती जा मगर और मुसकुराने दे मुझे।

बस कहा सौंदर्य ने बस 'भास्कर' अब कुछ न कह,
जो कहा अब तक वह पहिले भूल जाने दे मुझे।

★

ग़ज़ल : १०३

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

कि द्वारा छेंके आपना भाग्य ही मतिमंद मिलता है।
जहाँ भिक्षा को जाता हूँ, वहीं पट बंद मिलता है।

यवनिका में ही कुछ सौंदर्य का आनन्द मिलता है,
कि उसकी आड़ में दृग - क्षेत्र तो स्वच्छंद मिलता है।

हमें मारा किवाड़े के यह हृद पर औ दृग - पट ने,
जो खोला दूसरा तो पहलेवाला बंद मिलता है।

न सुख पर दुख न दुख पर सुख यह है सौंदर्य रति संसृत,
यहाँ आनंद पर आनन्द परमानन्द मिलता है।

उन्हीं ने क्या स्वयं और कल ही सब राहें सँवारी हैं,
जहाँ देखो, उन्हीं चरणों का नव मकरंद मिलता है।

न जाने क्या समझता है यह कंटक छीलनेवाला,
यहाँ काँटों में भी फूलों का - सा आनन्द मिलता है।

पतिंगे जलके और दीपक जलाके दोनो गाते हैं,
बड़ा आनन्द मिलता है बड़ा आनन्द मिलता है।

इसी सौंदर्य रति के द्वंद्व में है द्वैत्व भी व्यापक,
इसी में ऐक्य का समराज्य भी निर्द्वंद्व मिलता है।

सजीवन मूल क्या इन चितवनों में सुन्दरी कविते,
मुझे तो ज्ञात होता है सजीवन कंद मिलता है।

निराली कल्पना मित्रो ग़ज़ल के घर की लौंडी है,
इसी घर में उसे मनचाहा नूतन छंद मिलता है।

जलो और 'भास्कर' सौंदर्य के फेरे करो डटकर,
कोई पूछे तो कह देना कि ब्रह्मानन्द मिलता है।

★

ग़ज़ल : १०४

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभा गुर ताराज राजभा गुर।
उर्दू का वज़न : मफ़ऊल फायलतुन मफ़ऊल फायलातुन।

सौंदर्य से अरे मन हाँ राम - राम कह दे,
और साथ में हमारा भी इक प्रणाम कह दे।

कहते हैं मुझसे हँसकर तू नाम - धाम कह दे,
फिर अपने जन्म - भरके सब खोटे काम कह दे।

चैतन्यता जो पलटे मधुबाले तो सिहर कर,
कानों में मेरे फुससे सज्ञ अपना नाम कह दे।

तुझको तुरत उठाकर अपने गले लगाले,
उससे मनानेवाले तू पाहिमाम् कह दे।

सब कर्म - धर्म तजकर सौंदर्य को हृदय धर,
हर साँस में उसी से सब बिगड़े काम कह दे।

इतना ही पूछना है सौंदर्यवाले इक दिन,
जो मुझसे होनेवाला हो तेरा काम कह दे।

अब सिर के बल गमन है सर्वांग भंग होकर,
सौंदर्य पथ - प्रदर्शक अब तो विराम कह दे।

दृग दृष्टि होठ ठोंढ़ी से यह चषक लगा ले,
या तो सुरा में घोले हैं चारों धाम कह दे।

उस कवि को मैं रसिकता-अवतार मान लूँगा,
सौंदर्य से भी सुंदर जो तेरा नाम कह दे।

घनघोर पाप अपने मैं उस समय कहूँगा,
उनकी क्षमा की क्षमता जब त्राहिमाम् कह दे।

सौंदर्य मे निराद्रित होते हैं भाग्यवाले,
हे 'भास्कर' तू उससे बढ़कर प्रणाम कह दे।

ग़ज़ल : १०५

हिंदी की ध्वनि : राजभा ताराज मातारा यमाता राजभा।
उर्दू का वज़न : फायलुन मफऊल मुफतैलुन फऊलुन फायलुन।

मूक की वाणी तुम्हारी जब कृपा हो जायगी,
प्रेम - वीणा में गरज कर शारदा हो जायगी।

भ्रष्ट भी हो जायगी कलुषांगना हो जायगी,
दृष्टि भवतिकता से हट पुण्यात्मा हो जायगी।

न्यायवाला देखता रह जायगा तुम देखना,
जब क्षमावाले की पापी पर कृपा हो जायगी।

उनके चरणों से लिपट कर मेरी कंटक - कामना,
कौन कह सकता था फूलों की लता हो जायगी।

प्रेम - पथ के हे पथिक ! मुड़-मुड़ के गृह-बंधन न देख,
कड़ियाँ जुड़ते - जुड़ते साधक श्रृंखला हो जायगी।

रे हृदय मरुभूमि पड़ने तो दे उनके पद - कमल,
तू भी नंदन - वन लजावन वाटिका हो जायगी।

वाणी का आह्वान कैसा काट देता जीभ को,
जानता यदि शारदा ही मंथरा हो जायगी।

जैसे जब तब मेरी मनचाही सफल होती है अब,
प्रेम - बल जागा तो यों ही सर्वदा हो जायगी।

कौन सुनता था, जो आँखें लड़ गईं अब रुष्ट हैं,
मैं बराबर कह रहा था धृष्टता हो जायगी।

देखता हूँ सामने तुझसे भी सुंदर दृष्टि इक.
आज क्या साकार मेरी कामना हो जायगी।

'भास्कर' इक प्रेम - योगी है उसे कलिके न छेड़,
प्रेम उसका पाके तू भी अपसरा हो जायगी।

ग़ज़ल : १०६

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभा गुर ताराज राजभा गुर ।
उर्दू का वज़न : मफ़ऊल फायलातुन मफ़ऊल फायलातुन ।

लेकर हृदय मरण पर लाचार कर रहे हैं,
हँस-हँस के और अभी वह उपकार कर रहे हैं ।

सौंदर्यवाले भ्रम है श्रृंगार कर रहे हैं,
सब दर्पणों से अपने दृग चार कर रहे हैं ।

क्या पाप होने को है जो तिरछे-तिरछे होकर,
चितवन की आज मुझ पर भरमार कर रहे हैं ।

घूँघट बढ़ा - बढ़ाके घूँघट हटा - हटा के,
उकसा तो क्या रहे हैं लाचार कर रहे हैं ।

कुछ पाप कर रहे हैं तुमसे लड़ा के आँखें,
प्रेमी - परम्परागत व्यवहार कर रहे हैं ।

तुम आज बन के ग्राहक आये हो धन्य तुम हो,
हम तो हृदय का कब से व्यापार कर रहे हैं ।

मेरे हृदय - विधाता ! घूँघट हटाऊँ कैसे,
सौंदर्यवाले मुझसे तक़रार कर रहे हैं ।

उस द्वार पर यह उत्तर मिलता है फिर के आना,
सरकार इस समय तो श्रृंगार कर रहे हैं ।

दृग चार कर रहे थे जीवन में और क्या था,
मरने में पाया सब कुछ अब प्यार कर रहे हैं ।

तो क्या प्रलय के ऊपर फिर से प्रलय करेंगे,
भौंहों पै बिजलियों का श्रृंगार कर रहे हैं।

क्या कहना उनके उल्टे ढंगों का 'भास्कर' जी,
कल्याण - भावना से संहार कर रहे हैं।

ग़ज़ल : १०७

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाताल यमाताल राजभा ।
उर्दू का वज़न : मफऊल मफाईल मफाईल फायलुन ।

इक ज्योति न होंगे कभी मिलकर अनंत में,
दो बत्तियों का दीप जलाएँगे अंत में।

यौवन नवीन देखकर मन कहके रह गया,
क्या लाल - पीली आग लगी है वसंत में।

इस चन्द्रभाल पर यह लटों का पवन विहार,
रोको नहीं तो मचली घटाएँ हेमंत में।

उलझे पड़े हुए हैं हमीं आदि काल से,
मुख से तुम्हारी निकली हुई इक तुरंत में।

सौंदर्य ! मुझको मेट के पछतायेगा बहुत,
लाखों ही आदि अंकुरित है मेरे अंत में।

उस शब्द की दशा भी मुझे वंचनीय है,
जो आधा होकर रह गया पड़कर हलंत में।

मेरे गुणों को गा रहे हो तुम सिसक - सिसक,
आये थे दोष ढूँढ़ने मुझ साधु - संत में,

मेरे सदृश बावलों की इक सभा बनै,
मुझसे न बैठा जायगा अब सधु - संत में।

हँसता हूँ यों कि फाग का है रंग रक्त में,
अपना तो जन्म ही हुआ था नव-वसंत में।

जब - जब वसंत रीता गया तो यही कहा,
अच्छा, तो देखा जायगा अब की वसंत में।

क्या - क्या न रूप देखे मगर 'भास्कर' सुनो,
सौंदर्य पनपता है उसी भाग्यवंत में।

ग़ज़ल : १०८

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

हृदय सुन्दर है इसको तेरे ही आधीन होना था,
जहाँ संसार बैठा है तुझे आसीन होना था।

न कोसो रूप को तुम अपने, भावी और दे तुमको,
मुझी दर्शन के लोभी को दृगों से हीन होना था।

ठहरकर लाज तू ने अपनी दुर्गति क्यों करा डाली,
तुझे तो नेत्र के मिलते ही इक दो तीन होना था।

तुझे तो प्राण ! दृग की राह से, जब दृग लड़े उनसे ,
निकल जाना था चुपके से उन्हीं में लीन होना था ।

बनाया इसलिये शृंगार - सागर तुमने हमने यों दिया बनने-
तुम्हें मछुवाहा होना था हमें इक मीन होना था ।

न कैसे जन्म हम लेते जहाँ और जब सँवरते तुम ,
हमें सौंदर्य का समकक्ष समकालीन होना था ।

घनी बौछार है करुणामई सौंदर्य छबियों की ,
हृदय धिक्कार ! ऐसे में भी आश्रय - हीन होना था ।

हृदय - बंधन प्रबंधक है मगर ऐसा भी क्या बंधन ,
किसी से प्रेम करने - भर को तो स्वाधीन होना था ।

जो पड़ना था ही तुझको फूल के संपर्क में इक दिन ,
तो फिर इच्छा - रहित मन! तुझको कुछ रंगीन होना था ।

कहाँ नवयौवना चितवन कहाँ तुम 'भास्कर' बूढ़े ,
तुम्हारे वास्ते सौंदर्य को प्राचीन होना था ।

ग़ज़ल : १०६

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं ।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन ।

मृत्यु पर मृत्यु यही उनका बिखरना है यही ,
जन्म पर जन्म यही उनका सँवरना है यही ।

अब तो सब जान गये तेरा मुकरना है यही,
क्यों वचन देता है यदि अंत में करना है यही।

देखिये सामने पंकज को सरोवर में खिला,
रूप की प्रेम - सुरा पी के सुधरना है यही।

आप हँसियेगा हँसी रोक नहीं सकियेगा,
लाख ना कहिये मगर आपको करना है यही।

अब नराधम भी नहीं बचते बिना मदिरा के,
नित्य दर्पण में अगर तेरा सँवरना है यही।

बाण का काम तो करती है उसाँसें अब तो,
घाव का लगना यही घाव का भरना है यही।

मृत्यु लाखों हो मगर मैं नहीं मरनेवाला,
कोई जब तक न कहै आप पै मरना है यही।

माझिया ! धन्य है तल में तो डुबो कर लाया,
यह भी कह डाल कि उस पार उतरना है यही।

श्रेय अपना उधर अश्रेय पराया दोनों,
एक से एक अधिक लगते हैं मरना है यही।

बिजलियों! तुम तो निमिष - भर को चमकती हो सही,
मेघ - दूतों के मगर पंख कतरना है यही।

अपना कर्तव्य है और उनसे लड़ी हैं आँखें,
'भास्कर' मृत्यु से यह देखो न डरना है यही।

*

ग़ज़ल : ११०

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन।

रूप झुमवाता है हम झूम लिया करते हैं,
हाथ फैला के उधर चूम लिया करते हैं।

रख के सीने पै कभी झूम लिया करते हैं,
आपका चित्र कभी चूम लिया करते हैं।

जब कहीं और बहलता नहीं बहलाये से मन,
तेरी गलियों में जरा घूम लिया करते हैं!

मृत्यु का नृत्य तेरा नृत्य समझना पड़ जाय,
झूमनेवाले मगर झूम लिया करते हैं।

रिक्त हो लाख मगर प्यास से पागल होकर,
होंठ तक लाके चषक चूम लिया करते हैं।

अश्रु से धोके बहाते नहीं मिट्टी में हम,
गर्द उस पाँव की हम चूम लिया करते हैं।

फेरे करते हैं तेरे नाम के लिखकर भू पर,
लोक - परलोक सभी घूम लिया करते हैं।

बावलेपन को न ललकार हमारे तूफ़ान,
हम भी कुछ थोड़ा - बहुत झूम लिया करते हैं।

'भास्कर' होते हैं तदरूप कभी जब उनसे,
अपने ही पाँव स्वयं चूम लिया करते हैं।

★

ग़ज़ल : १११

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन।

हाथ में लेके चषक आँख मिला देते हैं,
हाँ नहीं कुछ भी नहीं सुनते पिला देते हैं।

जान कर दारू वह औषधि में मिला देते हैं,
और अनजाने में रोगी को पिला देते हैं।

प्रेम देखा कि वह सौंदर्य खिला देते हैं,
बावला ताड़ के वह मद्य पिला देते हैं।

जीके क्या कीजिये इसका नहीं देते उत्तर,
और उकता के जो मरिये तो जिला देते हैं।

कहते हैं 'उठ' ही मगर मुख से नहीं पलकों से,
और मुर्दे को तनिक-भर में जिला देते हैं।

वह स्वयं दें तो भी भिक्षा में न संकोच करूँ,
खेद तो यह है वह औरों से दिला देते हैं।

मुँह को कुछ बाँध-सा देते हैं सुनाकर बातें,
अति मधुर वस्तु कोई जैसे खिला देते हैं।

रहके उद्यान में भी देखता हूँ उनको ही—
कैसे-कैसे वह मगर फूल खिला देते हैं।

प्रेम-क्रीड़ायें जो जन्मों में खिलानी थीं मुझे,
जब कृपा करते हैं क्षण भर में खिला देते हैं।

'भास्कर' उनसे न कुछ कहने का करना साहस,
बोलनेवालों के वह होंठ सिला देते हैं।

*

ग़ज़ल : ११२

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाता गुर ताराज यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफऊल मफाईलुन मफऊल मफाईलुन।

दृग फोड़ लिये अब कोई शंकित तो नहीं होगा,
फूटे दृगों से प्रेम का इंगित तो नहीं होगा।

चितवन हृदय से कहती है समुचित तो नहीं होगा,
हलका ही वार होगा तू खंडित तो नहीं होगा।

सौंदर्य अपने सेवक से प्रेम माँगता है,
सेवक यह पूछता है अनुचित तो नहीं होगा।

मैं प्रेम त्याग तो दूँ लेकिन समझ लो मन में,
सौंदर्य का तुम्हारे अनहित तो नहीं होगा।

सब लोक - लाज तजकर मन मरमिटे तो जाय लेकिन
इश्क प्रेम करनेवाला पंडित तो नहीं होगा।

उन चितवनों में मेरे सदृश कोई अब तक,
आद्रित तो हो भले ही निन्दित तो नहीं होगा।

सौंदर्य लाख आये साकार बंधनों में,
लेकिन असीम वैभव सीमित तो नहीं होगा।

सुनकर हमारे मुख से रस - प्रेम की कथायें,
रीझे न रूपवाला लज्जित तो नहीं होगा।

इक भ्रम बना हुआ है यह 'प्रेम' नाम मेरा,
उनके हृदय पर अब तक अंकित तो नहीं होगा।

तुम लाख 'भास्कर' जी गाओ हँसो - हँसाओ,
टूटा हृदय तुम्हारा, समुचित तो नहीं होगा।

ग़ज़ल : ११३

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

कृपा करुणा की निधि तुम हो दया की आत्मा तुम हो,
न लेकिन प्रेम दे पाये, बड़े धर्मात्मा तुम हो।

वही पाहन हृदय, झूठी हँसी और मद - भरी आँखें,
हमारे मन की जो पूछो तो पूरे देवता तुम हो।

सुपास अब मरने - जीने - भर का है आठों पहर हमको,
कि दृग के सामने श्रृंगार रंजित सर्वदा तुम हो।

घृणा क्यों करते हो मुझसे खिंचे क्यों रहते मुझसे,
न कोई आपदा हम हैं न कोई आपदा तुम हो।

कभी निर्मोह सुन्दरता के स्वामी यह भी सोचा है
कि मेरी प्राण - रक्षा के सु केवल आसरा तुम हो।

कहीं जब तीसरा है ही नहीं तो कौन आ टपका,
हृदय का चोर हम ही दो में है या हम हैं या तुम हो।

मैं बढ़ता हूँ, वह हटता है महाअचरज मगर समझा,
अँधेरे में जो दूरी पर चमकता है दिया, तुम हो।

हमें सब ज्ञात है रातें बिताकर आने का कारण,
हमारे ही नहीं प्रियवर जगत की कामना तुम हो।

कोई बचकर कहाँ जायेगा हम दोनो की बाहों मे,
धरा के 'भास्कर' हम हैं, गगन के चन्द्रमा तुम हो।

ग़ज़ल : ११४

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता।
उर्दू का वज़न : मफाइल मफाइल मफाइल मफाइल।

कोई पूछ लो मुझसे क्या चाहता हूँ,
बिना मोल के दिल दिया चाहता हूँ।

लटें बन के दृग चूमना चाहता हूँ,
पृथक रहके संगम किया चाहता हूँ।

तेरी बाणी मैं बोलना चाहता हूँ,
सुधा में सुरा घोलना चाहता हूँ।

यह तिरछी कनखियों की गंभीर चोटें,
बहुत हैं यही और क्या चाहता हूँ।

पवन उनका घूँघट हिला के तू हट जा,
मिलावट विना इक छटा चाहता हूँ।

हृदय मेरा कहता है घूँघट हटाकर,
स्वयं अपना मुख देखना चाहता हूँ।

कहा तूने दीपक मुझे तो बुझा दे,
मैं तेरे ही हाथों बुझा चाहता हूँ।

मुझे छोड़कर यह धरा धँस रही है,
कि मैं उससे ऊपर उठा चाहता हूँ।

सुराही भरे चीख़ता फिर रहा हूँ,
सुरा चाहता हूँ सुरा चाहता हूँ।

सुमन! और खिल और खिल भाग्यवाले,
कोई कह रहा है चुना चाहता हूँ।

कहा 'भास्कर' ने तुम्हारी कृपा से,
तुम्हारा मैं प्रेमी हुआ चाहता हूँ।

ग़ज़ल : ११५

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन।

भला किस-किस पै दीजे प्राण सब तेवर निराले हैं,
सभी साँचे के ढाले हैं, सभी मदिरा के प्याले हैं।

हमारा नाम है प्रेमी अकेले हैं, निराले हैं,
जहाँ बस्ती नहीं कोई, वहाँ के रहनेवाले हैं।

यही पदतल हैं जिनके घावों पर प्रायः तरस खाकर,
सुकाँटों ने स्वयं गड़कर बुरे काँटे निकाले हैं।

अनर्थ हो जाय यदि तारों से हम भी फेर लें आखें,
न जाने फिर कहाँ डूबै हमीं इनको सँभाले हैं।

हमीं तो प्रेम - पथ पर झूम के चलते हैं बिन तेरे,
कि अब भी कामना और हम गले में बाहें डाले हैं।

समझते कुछ नहीं आँखें लड़ाया करते हैं हमसे,
शपथ सौंदर्य के दृग की बड़े ही भोले भाले हैं।

वह देखो प्रेमियों की गणना करनी है, तो कर डालो,
जहाँ तक दृष्टि संभव है, वहाँ तक मरनेवाले हैं।

बचोगे कैसे तुम श्रृंगारवालो हम रसिक - जन से,
हमीं आँखों के काजल हैं, हमीं कानों के बाले हैं।

हृदय कहता है हम तो झूमते हैं प्रेम में उनके,
किसे प्राणों के संकट हैं किसे जीवन के लाले हैं।

तुम्हारा सत्य निर्णय है बुरे हम हैं, मगर देखो,
हमारे केश उज्ज्वल हैं, तुम्हारे केश काले हैं।

अरे ओ प्रेम - पथ जा-जा न सहला मेरे तलवों को,
तुझे है मसखरी सूझी यहाँ छालों पै छाले हैं।

तुम्हारे छंद क्या हैं 'भास्कर' सौंदर्यवालों को,
यही मोती की लड़ियाँ हैं, यही फूलों के माले हैं।

★

ग़ज़ल ११६

हिंदी की ध्वनि : लराजभाल यमाताल राजभा सलगं।
उर्दू का वज़न : मफायलात मफाईल फायलुन फेलुन

वह रोगी होके गया जो सुजान आया था,
हृदय के रोग का करने निदान आया था।

हृदय का देख के विस्तार वह भी काँप उट्ठा
चरण से नाप के जो आसमान आया था।

बहार वह थी हृदय की कि लूटने के लिये,
सभों में छिप के वह भी दर्पवान आया था।

वह भी तो खो गया काले हृदय मरुस्थल में,
जो कौंद - कौंद के विद्युत समान आया था।

निशाना उसका भी चूका किसी की क्या गणना,
भवों की ताने जो दोहरी कमान आया था।

हृदय की चाह है लें लो कहोगे क्या तुम भी
कि मेरे द्वारे कोई भाग्यवान आया था।

हमारी दुर्दशा देखी तो अश्रु पीने लगा,
अधर में भरके बहुत मुसकुरान आया था।

गगन की बिजलियाँ घर छोड़ - छोड़ के भागीं,
हृदय हमारा वह भर के उड़ान आया था।

स्वरूपवालें के घर से यह ज्ञात होता है,
हमारा कर्म ही बनकर प्रधान आया था।

हमीं को रूप ने छाँटा है जग के शासन को,
हमारे वासते रति का विधान आया था।

न जाने 'भास्कर' किसने यह श्रेणियाँ कर दीं,
हृदय तो सबका वहाँ से समान आया था।

☆

ग़ज़ल : ११७

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफाईलुन ।

उस पै मरता है किस पै मरता है,
'भास्कर' किसका नाम धरता है।

प्रेम पानी हमारा भरता है,
तू वृथा गर्व उस पै करता है।

वह ही कर्ता वही अकरता है,
जैसा मन चाहता है, करता है।

इस चपलता की मित्र बलिहारी,
छेड़ तो अदबदा के करता है।

मृत्यु तो मृत्यु आज वह दिन है,
मेरा जीवन भी मुझ पै मरता है।

प्रेम - ज्वर जीवनी पै क्या विजयी,
मरके भी यह नहीं उतरता है।

उनकी सुधि हर्षदायनी तो है,
किंतु फिर भूलना अखरता है।

यों तो सौंदर्य है सरल लेकिन,
जब सँवरता है, तब सँवरता है।

चाहे आँखें मिलाये या फेरे,
हर छटा पर वह प्राण हरता है।

जीनेवालों से मृत्यु डरती है,
मरनेवालों से काल डरता है।

अपनी करणी महान तरणी है,
बैठने वाला पार उतरता है।

स्वार्थ तज दो तो मृत्यु क्यों आये,
बिन बहाने भी कोई मरता है।

मन की उन तक उड़ान संभव है,
'भास्कर' पंख क्यों कतरता है।

ग़ज़ल : ११८

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

विरह - निशि में अँधेरे की फबन कुछ और कहती है,
उधर लाली यह छू-छू के गगन कुछ और कहती है।

तुम्हीं हो सामने मेरे मुझी को देखते हो तुम,
मगर श्रद्धालु जिज्ञासा सजन कुछ और कहती है।

हृदय आतंक पीड़ित है उलहना उमड़ा पड़ता है,
मगर रसना समझकर तेरा मन कुछ और कहती है।

वह तो कहते हैं हाँ ! आगे सुना फिर तुझ पै क्या बीती,
मगर उनके दृगांचल की थकन कुछ और कहती है।

हृदयवालो ! न जाओ बाल-शशि की भोली चितवन पर,
कली जब खिलके होती है सुमन कुछ और कहती है।

बड़ी श्रद्धा से ऊधव सुनते हैं हम ज्ञान की गाथा,
हृदय की किन्तु यह महना मथन कुछ और कहती है।

उधर निद्रा तो कहती है कि आँखें मूँद दें आकर,
मगर यह आँख हा ! हा ! री जलन कुछ और कहती है।

बहुत मुँह धो के आये निशि अटन छिपता नहीं फिर भी,
उबासी दृग की अब भी मनहरन कुछ और कहती है।

अधर से तेरे-मेरे पान का सौरभ नहीं आता,
पराई गंध है यह प्राणधन कुछ और कहती है।

हृदय तू प्रेम से पीड़ित है तो हम प्रेम तज तो दें,
मगर तेरे सुप्राणों की रटन कुछ और कहती है।

तुम्हें हमसे प्रयोजन हमें तुमसे प्रयोजन क्या,
उचापत फिर भी यह दृग की लड़न कुछ और कहती है।

तुझे सौंदर्य ! किसने कह दिया इच्छा का घातक है,
वह तो बेचारी अब भी मन-ही-मन कुछ और कहती है।

कहा इक चन्द्रमा ने प्रेम तो तुझको असंभव है,
मगर हे 'भास्कर' अविरल तपन कुछ और कहती है।

✻

ग़ज़ल : ११९

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभाल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : मफ़ऊल फायलात मफाईल फायलुन।

मांझी से व्यर्थ कहना है नवका को तार दे,
झुँझला के फिर कहीं न किनारे उतार दे।

केवल यही नहीं कि वह अलकें सँवार दे,
मेरा भी रूप अपने ही - जैसा निखार दे।

दुख एक - दो तो कुछ नहीं तू दस हज़ार दे,
बस एक बार हँसके इधर तू निहार दे।

इक बोझ रख दे पहिले पुण्य अपने उधार दे,
फिर मन है तो पापों का यह बोझा उतार दे।

उसकी कृपा बिना कोई आँखें लड़ाय क्या,
आँखें बिना लड़ाय कोई क्या पुकार दे।

यदि कष्ट देना और हृदय लेना एक है,
तब तो अवश्य कष्ट दे और बार - बार दे।

जीवन का सर्वनाश तो दुर्भाग्य ने किया,
जो बच रहा हो प्रेम तू आकर सँवार दे।

सौंदर्य तो मुझ - ऐसों को भी मान देता है,
उसको तो सब ही देते हैं जिसको लिलार दे।

बन जा भिखारी आता है सौंदर्य सामने,
दृग मूँद के कर अपने उधर को पसार दे।

यह हाथ लेके हाथ में सर्वज्ञ रूपवान्,
जो कुछ भला - बुरा हो लिखा अब विचार दे।

संसार तो चूमेगा चरण तेरे 'भास्कर',
सौंदर्य से तू प्यार ले और उसको प्यार दे।

ग़ज़ल : १२०

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभाल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : मफऊल फायलात मफाईल फायलुन।

सौंदर्य, प्रेम - गान में खसना न चाहिए,
तू लें ले अपनी मुझको यह रसना न चाहिए।

अपने सुख और शांति को ग्रसना न चाहिए,
औरों के दुख को देख के हँसना न चाहिए।

सौंदर्य प्रीयता है तो आँखों को सेंकिये,
लेकिन हृदय सँभाल के फँसना न चाहिए।

सौंदर्यवालो ! तुमसे कई बार की विनय,
मुझको यों देख-देख के हँसना न चाहिए।

सेवक हूँ, गंध फूल लगाता हूँ रात - दिन,
नागिन - लटों ! मुझे तो यों डसना न चाहिए।

सौंदर्य बोला, कामना से हीन है हृदय,
ऐसे उजाड़खंड में बसना न चाहिए।

मुर्दा उतर रहा था, हँसे वह, तो बोला क्या,
धरती में मारे लाज के धँसना न चाहिए।

वैभव किसी का देख के होकर प्रसन्न मन,
अपने को धन्य मानो तरसना न चाहिए।

मुझको भी शत्रु-वर्ग में मित्रो समझ लिया,
इतना कटाक्ष मुझ पै बरसना न चाहिए।

उपकारों में गड़ा हुआ है उनके 'भास्कर',
यदि तू मनुष्य है, तो हुमसना न चाहिए।

ग़ज़ल : १२१

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफाईलुन।

प्राण निकला हृदय चला लेना,
हाय रे उनका दृग चुरा लेना।

दूर करना, गले लगा लेना,
आदमी जैसे बना लेना।

कोई ठट्ठा नहीं जवानी में—
आँख सौंदर्य से लड़ा लेना।

इस बुढ़ापे में याद आता है,
उनका सनकार के बुला लेना।

होंठ खुलने से शील घटता है,
प्रेम करना, तो मुँह सिला लेना।

कुछ कली का भी मन है चुनके उसे—
पंखड़ी - पंखड़ी खिला लेना।

जागना जब भी हो तुम्हारा मन,
साथ ही मुझको भी जगा लेना।

जाते - जाते कहा कि जीवन को
आसरे आसरे बिता लेना।

फूल चुनना, तो फूल ही चुनना,
काँटे मत पाँव में लगा लेना।

कर बढ़ाते हो, लाओ, स्वीकृत है,
देखना अब न फिर छुड़ा लेना।

विश्व मोहन स्वरूप जब भरना,
पहिले आकर मुझे दिखा लेना।

नेत्र फट जायँ फिर भी जब आयें,
'भास्कर' नेत्र में बिठा लेना।

★

ग़ज़ल : १२२

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभाल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : मफऊल फायलात मफाईल फऊलुन।

दर्पण में अपने आपको साकार देखकर,
ललचा रहे हैं अपना ही शृंगार देखकर।

क्यों तरसे जग के लोगों का शृंगार देखकर,
मिलता है मद्य, पीने का अधिकार देखकर।

फूलों में प्रेमी चितवनों का भार देखकर,
उसने न पहना फेंक दिया हार देखकर।

विष माँग-माँग पी गये अमृत को तज दिया,
मनहर में पक्षपात का व्यवहार देखकर।

मांझी से मुझसे आँख मिली दोनो हँस पड़े,
टूटा हुआ जुड़ने लगा पतवार देखकर।

उज्योति में अनेक प्रभा हर प्रभा में छवि,
ललचायें नेत्र क्यों न यह भंडार देखकर।

साहस पवन का टूट गया लाज आ गई,
अपने से भी अधिक उन्हें सुकुमार देखकर।

शृंगार गर्व तुममें है कोमल हृदय इधर,
आघात न कर बैठना लाचार देखकर।

आँखें लड़ीं जो उनसे तो इच्छायें करतीं क्या,
भागीं निकल-निकल के ठनी रार देखकर।

दोनो हृदय लिपट के गले मिल गये भयार्द,
उलझे हुये सुनैनों में तक़रार देखकर।

वह ज्योति अपने आप भी खोने-सी लग गई,
अपनी ही रश्मियों की यह भरमार देखकर।

प्रेमी दृगों को हो गई आकार से घृणा,
भर पाया हमने आपका संसार देखकर।

धुन बार - बार की है तुम्हें 'भास्कर' यहाँ,
पछता रहे हैं हम उन्हें इकबार देखकर।

ग़ज़ल : १२३

हिंदी की ध्वनि : राजभा ताराज मातारा यमाता राजभा।
उर्दू का वज़न : फायलुन मफऊल मुफतैलुन फऊलुन फायलुन।

हे हृदय ! जग लगता है तो लगने दे उजड़ा हुआ,
रूप की रति से तो मन तेरा नहीं उखड़ा हुआ।

अपनी - अपनी जगह जिसको देखो है अकड़ा हुआ,
आज मारे बसती के संसार है उजड़ा हुआ।

आपका मन भी, बड़ा आश्चर्य है उखड़ा हुआ,
आपके कारण तो जग - भर से मेरा झगड़ा हुआ।

मूक वाणी, मूक रसना, मूक की मन की व्यथा,
आँखों आँखों ही में आज उनसे बहुत झगड़ा हुआ।

वह ही सिद्ध आराधना का विन्दु भी है लक्ष्य भी,
जिस जगह अपना सजन मिल जाता है बिछुड़ा हुआ।

देंगे देंगे कहते कहते जब दिया तो इक हृदय,
जिसके लाखों खंड थे हर खंड था उजड़ा हुआ।

प्रेम-पथ में भी असंभव है कि पग आगे बढ़ें,
मोह की यदि शृंखला में पाँव हो जकड़ा हुआ।

यदि कोई प्रहलाद ही हो तब तो जाये सामने,
आज जब सौंदर्य है छबियों सहित बिगड़ा हुआ।

उस चरण ने इस हृदय की गति जो की उसके समक्ष,
फूल तू भी कुछ नहीं रौंदा हुआ रगड़ा हुआ।

कोटि शशि हैं निशि में अब तो कोटि दिनकर दिन में हैं,
जब से मेरी ओर उस अमिताभ का मुखड़ा हुआ।

तू भी यौवन ! देख ले आँखों से अपनी एकबार,
प्रेम के बोझों से तेरा 'भास्कर' कुबड़ा हुआ।

ग़ज़ल : १२४

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता ;
उर्दू का वज़न : मफाइल मफाइल मफाइल मफाइल।

स्वयं अपनी छबि का नहीं ज्ञान तक भी,
हमारा वह क्या रक्खेंगे ध्यान तक भी।

कहाँ ध्यान है तेरा मिष्ठान्न तक भी
न खाऊँगा दर्शन विना पान तक भी।

गया मन मगर कब गया और क्योंकर,
न पूछो कि मुझको नहीं ज्ञान तक भी।

अगमता हृदय की कहाँ तक बखानूँ,
यहाँ खो गया आके भगवान तक भी।

सिखाने को हमको मनाने के ठनगन,
कोई हँसके लाया था मुँह कान तक भी।

हृदय बेच दूँ तुझको मैं किसके हाथों,
कोई चलके आये तो दूकान तक भी।

नहीं देख पाती है पग - पग पै कंकर,
पहुँचती थी जो दृष्टि शशिभान तक भी।

अगर सामने आया तो भी वृथा है,
नहीं उस सलोने की पहिचान तक भी।

यह कहता है सौंदर्य सुन रख हृदय तू,
बहुत दे दिया यदि दिया मान तक भी।

बचा क्या भला लाज जिसकी करें हम,
नहीं पास में अब तो कुल कान तक भी।

बिरह की भी मर्याद लुटने लगेगी,
अगर हो गई उसकी पहिचान तक भी।

सभी पी गये उसके हाथों से मदिरा,
महाज्ञानी से लेके अज्ञान तक भी।

अरे 'भास्कर' कोई चोरी नहीं है,
वह करते हैं मेरा तो अपमान तक भी ।

ग़ज़ल : १२५

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर ।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन ।

इधर आँखों ही आँखों में परस्पर आरती होती,
उधर लज्जा कहीं पर बैठी डींगे मारती होती ।

हृदय के थाल में सजते सुमन रति दीप जल उठते,
अनोखी छबि निखरती उनकी यदि यों आरती होती ।

न जनमें होते यदि बटमार कुसमय प्रेम के पथ में,
हमारी भारती ही आज त्रिभुवन भारती होती ।

हमारा ध्यान नाचै उनके चरणों में तो फिर क्या थी,
पवन के स्वर में भी झाँझन वही झनकारती होती ।

तो फिर जीवन जवानी मिल के अनहद नाद बन जाता,
अगर कलिका भी भँवरा देखके गुंजारती होती ।

छटा तेरी न मन में धारता मैं तो बहक जाती,
कहीं बलिहारती होती कहीं मनहारती होती ।

बतावें कामना कुलटा को हमने मार क्यों डाला,
हमें तो सामने तेरे भी वह सनकारती होती ।

वह तो कहिये कि अपनी प्रेम-प्रतिभा मैं दबाये हूँ,
नहीं तो यह पताका विश्व को ललकारती होती।

वियोगी आँख उन पावों में लिपटी है नहीं तो यह,
चरण किस किसका पाती और जल से धारती होती।

तुम्हारी दृष्टि को वह तो कहो सौंदर्य ने रच दी,
नहीं तो वह भी यों ही 'भास्कर' झक मारती होती।

ग़ज़ल : १२६

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभाल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : मफ़ऊल फायलात मफाईल फायलुन।

जल-वायु जिसकी प्रेम है वह धाम और है,
मेरा सुमन जहाँ है वह आराम और है।

पागल कि बावला यह मुझे सुधि तो कुछ नहीं,
मेरा पुकारने का मगर नाम और है।

इस मरने - जीने से है प्रयोजन नहीं मुझे,
मैं तो रसिक हूँ मेरा तो परिणाम और है।

क्या क्या न स्वप्न देखे बरातों के नींद में,
लेकिन खुली जो आँख तो परिणाम और है।

बिन माँगे ही ले लेते हैं हम माँगते नहीं,
वंदन सकाम और है निष्काम और है।

सौंदर्य तेरे राग से यह राग भिन्न है,
संवादी और वादी और ग्राम और है।

दुख में यह सुख की ज्योति वह सुख में है दुख का स्रोत,
सौंदर्य खेल और है संग्राम और है।

इक मृत्यु का प्रतीक है इक प्रेम का प्रवाह,
आलस्य और वस्तु है विश्राम और है।

आँखें लड़ाई अश्रु पिये झूमने लगे,
जैसे कि दूसरा कोई संग्राम और है।

सौंदर्य और प्रेम एक प्राण एक तत्त्व,
बस कहने-सुनने - भर के लिये नाम और है।

तुम जाओ रूपवालो ! न सहयोग की कहो,
यह खेल नहीं, प्रेम है, यह काम और है।

दर्शन से भी तो उनके तू वंचित है 'भास्कर',
उस पर से पूछते हैं कोई काम और है।

ग़ज़ल : १२७

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभाल यमाताल राजभा
उर्दू का वज़न : मफऊल फायलात मफाईल फायलुन।

क्या चाहते हो कोई तरसना भी छोड़ दे,
मिलता नहीं यथार्थ तो सपना भी छोड़ दे।

आशा तो तूने छोड़ी निराशा भी छोड़ दे,
रे मन ! जो शेष है वह भरोसा भी छोड़ दे।

कोयल से कहके देखो कुहुकना भी छोड़ दे,
क्या मुझसे कहके हँसते हो रोना भी छोड़ दे।

आवागमन है साँस का इसको तो शेषकर,
फिर कह कि चोट खा के सिसकना भी छोड़ दे।

मधुबाले ! प्राण ले ले मगर यह न देख, कह,
मिलती नहीं सुरा तो पिपासा भी छोड़ दे।

संसार सर्वनाश को हो प्राप्त मित्रवर,
यदि पी रटन को आज पपीहा भी छोड़ दे।

जीवन किया जो प्रेम के अर्पण तो मित्रवर,
निर्भीक हो के प्राणों की शंका भी छोड़ दे।

बोले शपथ है तुझको जो देखा भी मेरी ओर,
तूने जो नेह तोड़ा उलहना भी छोड़ दे।

उकसाया करें नेत्र कि दर्शन फिर एक बार,
जी कह रहा है अब तो वह रसता भी छोड़ दे।

पीड़ित हृदय वह पाँव पियादे निकल पड़े,
वह आ रहे हैं अब तो यह चिंता भी छोड़ दे।

मिथ्या वचन कलंक समझती है शारदा,
जिसने किया न प्रेम वह कविता भी छोड़ दे।

काटेगा कैसे रात कहो कुछ तो 'भास्कर',
करवट बदलने में जो तड़पना भी छोड़ दे।

★

ग़ज़ल : १२८

हिंदी की ध्वनि : राजभा गुर राजभा गुर राजभा गर राजभा ।
उर्दू का वज़न : फायलातुन फायलातुन फायलातुन फायलुन ।

फूल में हीरे में दीपक में वही पाहन में है,
तेज कितनी भाँति का क्या जाने मन भावन में है ।

बिजलियों के तेज में घनघोर घन - गर्जन में है,
विरह रुदनानन्द ऊधव सत्य है सावन में है ।

आँख जब ठहरी न उन पर तब यही कहते बना,
आज तो दीपावली सौंदर्य के आँगन में है।

चन्द्रमा ललचा रहा है देखकर आकाश से,
जाने किस सौंदर्य का प्रतिबिंब मेरे मन में है।

सारी संसृत फूँके देती है हृदय तन - मन ही क्या,
किस प्रलय की आँच उस हँसती हुई चितवन में है ।

हे कलाकारो ! तुम अपने भिन्न रसते क्यों कहो,
हर कला की आत्मा सौंदर्य आराधन में है।

कौन जाये द्वारे द्वारे गलियाँ गलियाँ क्यों मथै,
मुझको चारों धाम का सुख इक चरण चुंबन में है ।

दिव्य थी वह छवि किसी शृंगार के उद्यान की,
मन - भ्रमर मेरा अभी भी फूलवाले वन में है ।

मूंद लूं दृग इस जगह तो धृष्टता है मित्रवर,
दृग लड़ाने की प्रथा सौंदर्य के आँगन में है ।

'भास्कर' वह पथ बता जिसमें हो प्राणों की खपत,
अपनी श्रद्धा तो उसी उत्कृष्टतम साधन में है।

ग़ज़ल : १२९

हिंदी की ध्वनि : राजभा गुर राजभा गुर राजभा गुर राजभा।
उर्दू का वज़न : फायलातुन फायलातुन फायलातुन फायलुन।

छबियाँ मन-रंजन हुईं कुछ नेत्र अंजन हो गईं,
ऐसी तरसी थीं कि मुझ बूढ़े का यौवन हो गईं।

वर्षा तो विरहिन दृगों की है कि जिनमें प्रेम मे,
छइयों रितु की सब छटाये आके सावन हो गईं।

एक-एक करके लगीं छाने मुखाकृति पर मेरी,
मेरी इच्छाएँ सब अपने आप वर्णन हो गईं।

ऊर्ध मुख होकर हमारी कामनायें जो उड़ीं,
तो हमें पहुँचाया तुम तक पवन-स्यंदन हो गईं।

छटपटाती हैं तुम्हारी छबियाँ व्याकुल प्रेम से,
और तुम समझे हृदय का सब स्पंदन हो गईं।

मेरा यौवन रच के जब शीतल उसाँसें थक गईं,
तब बुढ़ापा देके मुझको उनका यौवन हो गईं!

चितवनें सौंदर्य की अपनों पे यह भी शेर हैं,
उसको पागल कर गईं यह जिसका जीवन हो गईं।

प्राण उड़ते हैं पवन में तेरी अगवानी में अब,
आँखें तो अब राह तकते-तकते पाहन हो गईं।

प्रेम - सागर की यह लहरें मोक्ष किसको दे भला,
कैसा बंधन काटना बंधन पै बंधन हो गईं।

'भास्कर' सब कामनायें धीरे-धीरे मर गईं,
तुझसे क्या अनमन हुईं अपने से अनमन हो गईं।

ग़ज़ल : १३०

हिंदी की ध्वनि : राजभा गर राजभा गुर राजभा गुर राजभा ।
उर्दू का वज़न : फ़ायलातुन फायलातुन फायलातुन फायलुन ।

मिल गया उनसे हृदय, हम से पृथक कैसे हुआ,
तू धड़कनेवाला, इतना बेधड़क कैसे हुआ।

प्रेम भी इक फूल है सौंदर्य भी इक फूल है,
महके बिन निर्वाह इनका आज तक कैसे हुआ।

उन रसीली चितवनों की है शपथ अब तो बता,
सैकड़ों टुकड़ों से तू पूरा चषक कैसे हुआ।

उसने कैसे सिर झुकाकर मुसकुराया मेरे मन,
तेरी अभिलाषा का इंगित सार्थक कैसे हुआ।

क्या किसी की तिरछी चितवन दूर पर झलकी है फिर,
शांतिप्रिय मन हाल फिर चिंता-जनक कैसे हुआ।

तेरे पेचों में उलझकर मन सरल क्यों हो गया,
यह अचंभा बोल घुँघराली अलक कैसे हुआ।

मैं चकित - सा हो गया सौंदर्यवाले ! तू बता,
सारा सागर खारी है इतना नमक कैसे हुआ।

मारकर आखेट को देख, तो बोले खेद है,
इसका दृग मोती था, ऐसा बेचमक कैसे हुआ।

कोई तारा मिल गया क्या रेह सच - सच बता,
तेरा जीना पूछता हूँ भोर तक कैसे हुआ।

आँख का लड़ना निमिष आधे निमिष की बात है,
रात - भर एकाग्र चित यह एकटक कैसे हुआ।

कर्म करने भर का है अधिकार तुझको 'भास्कर',
तू बिना अधिकार के अपना गणक कैसे हुआ

ग़ज़ल : १३१

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफऊलुन फेलुन।

हाँ ! दयावान ने पोंछे हैं विनय के आँसू,
देखनेवाले ने देखे हैं समय के आँसू।

अर्ध नेत्रों के वही अर्ध हृदय के आँसू,
मन में घर कर गये वह पहिले प्रणय के आँसू।

मेल जब हो गया तो हार कहाँ किसकी हार,
दोनो के नेत्र से बहते हैं विजय के आँसू ।

आँख से देख लिया उनको असुंदर कहकर,
कान से भी न सुने थे जो प्रलय के आँसू ।

हाँ ! हृदय चाहिये, यह हँसते हुये नेत्र नहीं,
तुम नहीं देख सकोगे यह हृदय के आँसू ।

एक की बात नहीं थी जो लड़ी थीं आँखें,
डबडबाते हुये निकले थे उभय के आँसू ।

आज आँचल से नहीं, मुँह से बस अच्छा कह दे,
देखते - देखते सूखेंगे हृदय के आँसू ।

प्राण पर खेल गये उनसे लड़ा ली आँखें,
फिर तो चुल्लू से पिये हमने प्रलय के आँसू ।

लाभ कुछ होता नहीं आठ पहर रोने से,
काम कर जाते हैं दो - चार समय के आँसू ।

डाँट के क्यों नहीं माँगा यह हृदय हे सौंदर्य !
दृग में तेरे नहीं भाते हैं विनय के आँसू ।

पीने की वस्तु है यह कहने - दिखाने की नहीं,
'भास्कर' चुपके से पी डाल हृदय के आँसू ।

★

ग़ज़ल : १३२

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभा गुर ताराज राजभा गुर।
उर्दू का वज़न : मफऊल फायलातुन मफऊल फायलातुन।

काशी यहीं बना दे, मक्का यहीं बना दे,
ओ धर्मवालो ! बोलो मस्तक कहाँ झुका दें।

जितनी है प्यास मेरी उतनी न पिला दें,
लेकिन यह क्या, सभा से वह प्यासा ही उठा दें।

किसने कहा कि मेरी कविता अमर बना दें,
मेरी तो प्रार्थना है कुछ पढ़के बस सुना दें।

ऊधव ! वह क्या करेंगे यदि हम उन्हें भुला दें,
कहना तो आके इक दिन अंतिम चषक पिला दें।

जब गंध बढ़ गई है, तो मुझसे यदि वह पूछें,
अपने ही ऐसा कोई सुरभित कमल खिला दें।

जग ने तो अपने भरसक कोई कसर न छोड़ी,
यदि पापियों से हँसकर वह दृग न फिर लड़ा दें।

चलते हैं पाँव पैदल उड़कर नहीं क्यों आते,
इतनी भी देर निशि में वह किसलिये लगा दें।

किस स्वर्ग में हमारे मन को उन्होंने भेजा,
इससे नहीं प्रयोजन नेत्रों में वह बुला दें।

उन चितवनों से बचकर क्यों अंत में खड़ा हूँ,
डर लग रहा है मुझको आगे न वह बिठा दें।

संतोष अपनी त्रुटि पर होगा उसी समय अब,
जब वह क्षमा के बदले कुछ आज ताड़ना दें।

केवल हृदय न छेड़ें उसमें है चित्र उनका,
और शेष 'भास्कर' की जो चाहें गति बना दें।

ग़ज़ल १३३

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन।

सत्य की मूर्ति हैं वह झूठ नहीं कहते हैं;
प्रेम की दृष्टि के सब तरसे हुये रहते हैं।

भीख की मार तो प्रेमी ही स्वयं सहते हैं,
रूपवाले भी कोई बात कभी कहते हैं।

उनको पाना है तो परस्वार्थ का चोला पहिनो,
दीन - दुखियों की वह आँखों में बने रहते हैं।

दोहरे यौवन की तपन अपनी और उनकी चितवन,
हँसते हैं, रोते हैं, मरते हैं मगर सहते हैं।

बुलबुला हैं तो सही चलके ठहरते तो नहीं,
धार रुक जाती है तो गह के पवन बहते हैं।

तारे जैसे कि टिके रहते हैं शशि - मंडल में,
तेरे व्यक्तित्व में हम यों ही बँधे रहते हैं।

शब्द तारों के समान अर्थ हिमालय से बड़ा,
हम कलाकारों में कविता इसी को कहते हैं।

आस्था अश्रु की आकृति में अचल है दृग में,
यों तो ढहने को पहाड़ों के शिखर ढहते हैं।

प्रेम की धार है हम लहरों में विश्वास नहीं,
हम सहनशीलता - संकोच लिये बहते हैं।

और तो कोई नहीं रोता है जिसको देखो,
आपकी त्रास हमीं हँसते हुये सहते हैं।

दु:ख है आपका बरदान समझ में आया,
हम कहैं कैसे भला दु:ख में सुख लहते हैं।

'भास्कर' कोई कहै या न कहै हम लेकिन,
बात नव ढंग नया, उक्ति नई कहते हैं।

ग़ज़ल : १३४

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन।

हम तो जलकर भी हृदय विश्व का ठंडा कर दें,
वैमनस बढ़ तो न जाये जो उजाला कर दें।

दुख दिया हमने तो सुख का भी सुभीता कर दें,
जैसे भी कहिये हृदय आपका हल्का कर दें।

हम तो वह हैं कि जो भँवरों से भी लें रोग उधार,
आप यदि रोग हमारा कहीं अच्छा कर दें।

तुम जहाँ जाओगे हम पहुँचेंगे संशय न करो,
हाथ में हाथ दो बंधन अभी पक्का कर दें।

विश्वबंधुत्व की है कामना तो फिर इक बेर,
आप श्रीकृष्ण हों और हमको सुदामा कर दें।

आज और कल के वचन में तो नहीं कुछ अंतर,
जब यही है कि वह जब चाहें बहाना कर दें।

हम अकेले ही नहीं दर्शनों के लालाइत,
तुम कहो तो यहीं संसार इकट्ठा कर दें।

वह यहीं आयेंगे देखा तो करो जगवालो,
कौन रुक सकता है जब उसकी हम इच्छा कर दें।

एक चिंता है कहीं रूठ न जायें हमसे,
मुक्त क्यों कर दें, यही चिंता अचिंता कर दें।

प्रेम का न्याय निराला है सभी न्यायों से,
झूठ भी बोल के हम आपको सच्चा कर दें।

आज तो बाण लचकदार भी हैं, तीखे भी,
दृष्टि के सामने कहिये तो कलेजा कर दें।

तेरी कविता की जवानी को वह उकसाते हैं,
'भास्कर' तेरा न विध्वंस बुढ़ापा कर दें।

★

ग़ज़ल : १३५

हिंदी की ध्वनि : यमाता यमाता यमाता यमाता ।
उर्दू का वज़न : मफाइल मफाइल मफाइल मफाइल ।

चलो माना बोतल डुबो आये जल में,
मगर क्या दबाये हुये हो बगल में ।

कहाँ से कहाँ जग गया एक पल में,
मगर हम पड़े हैं अभी आजकल में ।

किया प्रेम जिससे यह आश्चर्य देखो,
अब आनंद आता है उसकी टहल में ।

यह शब्द और सौरभ यह रह-रहके सिहरन,
कोई हँस रहा है हृदय के कमल में ।

हृदय देके उनको कहाँ हूँ न पूछो,
पवन में न नभ में न जल में न थल में ।

यह धुँधलापना चित्र में है रंगों का,
कि कुछ बाँकपन आ गया है पटल में ।

सदा कर्म कर - करके त्यागा है लेकिन,
बड़ा रंग होता है मेहनत के फल में ।

हृदय प्रेम का यंत्र है प्यार कर लो,
यह मर जायगा जोत दोगे जो हल में ।

जिये ले रहा हूँ न पूछो न पूछो,
बड़ा स्वाद है इस चरण की टहल में ।

(१९३)

कोई प्रेम - सागर में डूबे कहाँ तक,
छिपे हैं तलातल तलातल के तल में।

पिपासा वही 'भास्कर' है पिपासा,
जो पीने न दे और तैराये जल में।

☆

ग़ज़ल : १३६

हिंदी की ध्वनि : राजभा ताराज मातारा यमाता राजभा।
उर्दू का वज़न : फायलुन मफऊल मुफतैलुन फऊलुन फायलुन।

यह कथन सौंदर्य का है जो सुना जाता हूँ मैं,
मेरी तो कविता वह है जो कह नहीं पाता हूँ मैं।

मुसकुराती एक चितवन और क्या पाता हूँ मैं,
फिर भी इक जादू-सा है लिपटाच ला जाता हूँ मैं।

तारे गिनते-गिनते तारा बन के उड़ जाता हूँ मैं,
और निशि-भर चैन से तारों से टकराता हूँ मैं।

सब हृदय खंडों को जब एकत्र कर पाता हूँ मैं,
तब रुदन कुछ बंद कर पाता हूँ कुछ गाता हूँ मैं।

दूर तक दिखता नहीं कोई यह किसका शब्द है,
अंत तक लड़ता चला जा, हार मत, आता हूँ मैं।

वे मुझे तड़पाते हैं तड़पाने का अधिकार है,
श्रेय मेरा है कि बेअधिकार तड़पाता हूँ मैं।

मैं भ्रमर हूँ और तड़पाना तरसना मेरा काम,
फिर भी जब खिलता है कोई फूल तर जाता हूँ मैं ।

मन भी मेरा दृग भी मेरे तुझसे क्या सौंदर्य बोल,
सेकता हूँ नेत्र अपने मन को तरसाता हूँ मैं ।

आज कुछ होने ही वाला है सजग दिग्पाल हों,
झूमती हैं वे लटैं और बल पै बल खाता हूँ मैं ।

मैं अटल था जब चले थे वज्र नैनाघात के,
ओ सुनहरी त्रासों ! तुम ! और तुमसे घबराता हूँ मैं ?

यदि दिखा दूँ मैं हृदय का दर्द तो रोने लगो,
जाओ हँसती चितवनों तुम पर तरस खाता हूँ मैं ।

वह तो अपनी छवि में लहराते हुये मग में चले,
और शिष्टाचार बिन पिसता चला जाता हूँ मैं ।

खोज उनकी करते-करते यदि वह मिल जाते भी हैं,
'भास्कर' तब दिल्लगी देखो कि खो जाता हूँ मैं ।

ग़ज़ल : १३७

हिंदी की ध्वनि : यमाता राजभा ताराज सलगं ।
उर्दू का वज़न : मफ़ाइल फायलुन मफऊल फेलुन ।

मिले हिंदी में वह - वह स्वाद रस के
कि फीके पड़ गये उर्दू के चसके ।

पिपासा ही प्रचुर है मृत्यु के हित,
घटाओं क्या करोगी तुम बरसके।

हमीं को आज तू पहिले पिलादे,
न रह जायें कहीं हम फिर तरसके।

हृदय लेकर जिलाया और न मारा,
वचन दोनों दिये सौ सौ बरस के।

कहाँ मदिरा के चक्कर में पड़े हो,
पियो दो घूँट प्यारे प्रेम - रस के।

कसे बन्दों के स्वर में स्वर मिलाकर,
दोहाई वस्त्र ने दी हाय ! मसके।

दबैंगे हमको वह जितना दबावैं,
ओलहना पर सदा देंगे हुमसके।

कहा सौंदर्य ने अब मेरी बेला
छिपाकर मुँह कहाँ चुपके से खसके।

पड़ा नैनों का भी फंदा न उस दिन,
हृदय तू रह गया बेकार फँसके।

कहा कुछ क्रोध से और मुसकुराये
कि जैसे छँट गई बदली बरसके।

जहाँ चाहा वहीं धूनी रमा दी,
हृदयवाले भला हैं किसके बसके।

लड़ाकर नेत्र उनसे 'भास्कर'जी,
कभी देखो तो इस संसृत के ठसके।

★

ग़ज़ल : १३८

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाताल यमाताल यमाता ।
उर्दू का वजन : मफऊल मफाईल मफाईल फऊलुन ।

उस ध्यान से जिससे कि सुनै कोई कहानी ,
सब उसने सुनी मेरी मगर एक न मानी ।

नव यौवना नहीं है यह है प्रेम - कहानी ,
उतनी नवीन होती है नित जितनी पुरानी ।

जो वस्तु तुमने देखी सोहानी से सोहानी ,
उससे भी लाख बार सोहानी है जवानी ।

कविता की सही किन्तु वह आनन्द कहाँ अब ,
आई भी तो क्या आई बुढ़ापे में जवानी ।

प्रेमी की मूर्खता भी है आगम निगम का स्रोत ,
इसका भी पार पाता नहीं ज्ञानी से ज्ञानी ।

वह भी समय था मित्र कि उपवन के मध्य में ,
मेरी हवा से झेंप के चलती थी जवानी ।

हठ कैसी, उनसे आँख लड़ाने की देर थी ,
पल-भर में प्रीति भरने लगी आँख का पानी ।

इक दिन उमड़ के रहना था आँखों को पोछिये ,
कब तक छिपाये छिपती भला प्रीति पुरानी ।

लज्ज्जा का समावेश हुआ या सुधामई ,
आँखों में दीप बाल गई आके जवानी ।

आशा का केन्द्र अश्रु में रखना तो 'भास्कर',
लहराते जल पै बालू की है भीत उठानी।

ग़ज़ल : १३८

हिंदी की ध्वनि : राजभा राजभा ताराज यमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलुन फायलुन मफऊल मफाइल फेलुन।

वह खिलाई है हृदय चोट जो खाई न कभी,
अब तो तू छवि को दिलायेगा दोहाई न कभी।

जागता भी न रहा नींद भी आई न कभी,
ऐसे में भी तो मुझे तूने पिलाई न कभी।

हम तो वह हैं कि सदा शील बढ़ाया जिसने,
लाख अवसर भी पड़े बात बढ़ाई न कभी।

जब कि सब सुन भी लिया और दिया भी सब कुछ,
मुँह से क्यों कहते रहे होगी सुनाई न कभी।

आपने सुन लिया तो मैंने कहा भी होगा,
मेरे मुँह तक तो मगर बात ही आई न कभी।

प्रेम - सौंदर्य की क्या कहना यह क्वाँरी जोड़ी,
ब्याह की कौन कहे होगी सगाई न कभी।

खो गये हम भी उन्हें भी नहीं पाया अब तक,
दृष्टि से अपनी मगर खोज गँवाई न कभी।

और किस ठौर चपल बैठ सकेगा सीधे,
चैन से एक घड़ी मन में बिताई न कभी।

कर मेरे मुख पै रखा आँख लड़ाकर बोले,
मुझसे कुछ कहते तुझे लाज भी आई न कभी।

पहिली ही त्रुटि का भुगतमान पड़ा है अब तक,
तब से फिर 'भास्कर' ने आँख लड़ाई न कभी।

★

ग़ज़ल : १४०

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभाल यमाताल राजभा।
उर्दू का वजन : मफऊल फायलात मफाईल फायलुन।

प्यासों में प्यालों में है असंयम न पूछिये,
मदिरा हमारी कैसे हुई कम न पूछिये।

देकर हृदय भी आपको शब्दों में आपके,
कैसे हुआ मैं नर से नराधम न पूछिये।

सब प्राणों के ग्राहक हैं सभी हैं हृदय मरोड़,
इन छवियों में है कौन-सी उत्तम न पूछिये।

तिरछी-सी एक दृष्टि के हित प्राण तक दिये,
क्या - क्या किये हैं दास ने उद्यम न पूछिये।

यह पूर्ण चंद्र हास तो जन्मांग हो गया,
कब तक रहेगी याद यह पूनम न पूछिये।

होठों को चाब - चाब लिया सुनके मेरा नाम,
कैसे हँसी दबाई वह उद्यम न पूछिये।

मन से हमारे आपके मन तक है एक तार,
अब कैसे मन की ताड़ गये हम न पूछिये।

केवल सहारा आपकी बाँकी कटाक्ष का,
इतना समझिये प्रेम का आगम न पूछिये।

यह विश्व अपसरा भी हमैं अपना जानकर,
वह नाच नाचती है छमाछम न पूछिये।

घूँघट से ताक - झाँक हृदय तोड़े जाइये,
क्या करके छँट रहा है हृदय-तम न पूछिये।

स्वासों का उसाँसों का यह संयोग देखिये,
कैसे है काटी रात यह प्रियतम न पूछिये।

छूकर कपोल उनके न निद्रा उचाट दे,
हर साँस पै रहता है यही भ्रम न पूछिये।

जब चाहा 'भास्कर' ने तुम्हें देख ही लिया,
उसका तो स्वप्न पर भी है 'संमय' न पूछिये।

★

ग़ज़ल : १४१

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभाल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : मफऊल फायलात मफाईल फायलुन।

नेत्रों में खेलती हुई मन में उतर गई,
हा चंचला सुदृष्टि ! बुरा वार कर गई।

मेरी दशा जो मृत्यु ने देखी तो डर गई,
यह हाल है कि साँस चली और ठहर गई।

यह दृष्टि तेरी दृष्टि से मिलकर सुधर गई,
जिस ओर गई फूल या बनकर भ्रमर गई।

इक बारगी धड़क के हृदय शांत हो गया,
तुमने लगाया हाथ कि नाड़ी ठहर गई।

आँखों में दर्द देखके दृग - बाण रुक गये,
चढ़ती हुई भवों की वह धनुही उतर गई।

लट उसने खोली और पवन ने किया विहार,
मस्तिष्क में हमारे महक आके भर गई।

सौंदर्य तेरा देखके मग की थकान क्या
मन से हमारे प्राणों की ममता उतर गई।

सौंदर्य में प्रेमात्मा फिर से समाके आज,
अधिकार जन्म लेने का फिर सिद्ध कर गई।

तेरे विलंब करने पै अचरज नहीं मुझे,
लेकिन यह मृत्यु जाने कहाँ जाके मर गई।

दावाग्नि डाह सबको जलाकर प्रसन्न है,
दुख मुझको है कि आप नहीं जलके मर गई।

सौंदर्य की छटाओं कहाँ तक करूँ बखान,
जो 'भास्कर' को तार गई आप तर गई।

ग़ज़ल : १४२

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाताल यमाताल राजभा।
उर्दू का वजन : मफऊल मफाईल मफाईल फायलुन।

तुमको ही ज्ञात है न कुछ अब हमको ज्ञात है,
कैसे हुआ था प्रेम पुरानी - सी बात है।

मधु ढल रही उधर है इधर अश्रुपात है,
मधुबाले ! न्याय यह नहीं है, पक्षपात है।

अनुपम है, अलौकिक है, सुखद है, हठात् है,
उनकी हरएक बात यह कहिये कि बात है।

मेरे दृगों में तेज किसी का समा गया,
अब रात मेरी रात नहीं है प्रभात है।

उस भोले नेत्रवाले का हर अंग है कमल,
क्या लोना लोना श्याम सलोना-सा गात है।

अरुणोदय जल विहार को निकला है और साथ
भंवरों की और कमलों की पूरी बरात है।

जो कुछ हमारे मन में है, तेरे नखों पे है,
सौंदर्य ! तू सर्वज्ञ है सब तुझको ज्ञात है।

उनकी ही जीत होती है इस प्रेम - खेल में,
अपनी तो कुछ न पूछिये हर चाल मात है।

उन पर पड़ी जो दृष्टि तो कुछ सूझता नहीं,
संध्या है यह कि भोर है, दिन है कि रात है।

रस की फोहार से कोई कब तक बचाये प्राण,
चारों दिशा से रूप - छटा का प्रपात है।

क्या 'भास्कर' बतायें दरक जाता है हृदय,
उन चितवनों की मित्र ! बड़ी तीव्र घात है।

★

ग़ज़ल : १४३

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता ।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन फऊलुन ।

तेरे चरणों में मस्तक झुक गया है,
लगादे एक ठोकर और क्या है।

न समझे आज तक हम प्रेम क्या है,
विना सौंदर्य के जीवन वृथा है।

बहुत छलके तो वह अँगड़ा के बोले
कि मरनेवालों का विश्वास क्या है ?

तुम्हारे प्रेम के अतिरिक्त हमसे,
न कुछ होगा, न कुछ अब तक हुआ है।

स्वयं हम थम गये गलियों में तेरी,
हृदय तो जैसे - तैसे चल रहा है।

सभी को अपनी-अपनी धुन पड़ी है,
यहाँ पर कौन किसको पूछता है।

नहीं पहचान उसके स्वरो की, लेकिन
हृदय में मेरे वह ही बोलता है।

शपथ है तेरे रस - डूबे दृगों की,
न कुछ देखा है, न आगे देखना है।

तुम्हें सौंदर्य से रति 'भास्कर'जी,
बुढ़ापे में तुम्हें क्या हो गया है।

ग़ज़ल १४४

हिंदी की ध्वनि : यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर यमाता गुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

उचट जाता है मन दुख और पश्चात्ताप होता है,
नहीं जब उनसे दृग लड़ते तो जैसे पाप होता है।

विधाता कर्म और करता गये सब छोड़कर पृथ्वी,
कि अब है प्रेम की माया सब अपने आप होता है।

अगर सौंदर्य को देखें तो यह संसार हंसता है,
न देखें तो उधर सौंदर्य का अभिशाप होता है।

नहीं तुम करते तो इंगित तुम्हारे काम करते हैं,
मगर माथे हमारे जाती है जब पाप होता है।

कभी तो सामने आ जाय वह सौंदर्य हे भगवन!
हुआ क्या यदि मेरे मन में निरंतर जाप होता है।

रसिक जब मौन होता है तभी सौंदर्यवाले की
हृदय - वीणा के ऊपर प्रेम का आलाप होता है।

दृगों के चार होते ही वह छवि जब रूठ जाती है,
हृदय बलिहार होता है, हमें संताप होता है।

चरण - रज तेरी हमने भाल के ऊपर लगाई है,
वह प्राणी भी कोई प्राणी है जो बेछाप होता है।

बड़ा नामी रसिक तो 'भास्कर' संसार में वह है
कि जिससे बे किये प्रेम अर्चना का पाप होता है।

☆

ग़ज़ल १४५

हिंदी की ध्वनि : राजभागुर लयमाता लयमाता सलगं।
उर्दू का वज़न : फायलातुन फायेलातुन फयेलातुन फेलुन।

प्रेम में पहला चरण पहले पहल रखता हूँ,
आज से नाम भी अपना मैं विकल रखता हूँ।

रूपवालें की कृपा - कोर का बल रखता हूँ,
ठोकरों पर मैं सुकर्मों का भी फल रखता हूँ।

जो भी रखता हूँ मैं सौंदर्य - कृपा पर निर्भर,
वह ही पग पथ में अडिग और अटल रखता हूँ।

जितना तुम दृष्टि को लज्जा से अगम रखते हो,
उतना मैं मन को प्रतीक्षा से सरल रखता हूँ।

प्रेम के आदि का ले लेने दो आनन्द मुझे,
प्रेम - परिणाम को सहने का मैं बल रखता हूँ।

बाह्य आडम्बरों में रुचि तो नहीं है मेरी,
काले नेत्रों में मगर प्रीति धवल रखता हूँ।

जैसे खिलता है कमल चीर के रस की धारा,
आपकी कामना वैसी ही सफल रखता हूँ।

सारे रसिकों से पृथक् है मेरी वाणी रस की,
कुछ-न-कुछ बात नई, ढंग नवल रखता हूँ।

पड़ती है प्यास बुझानी बिना मद के बाले!
इसलिये नेत्र सदा अपने सजल रखता हूँ।

'भास्कर' मेरी भी कविता में भरा है जीवन,
मैं भी भावों का अलंकारों में तल रखता हूँ।

☆

ग़ज़ल : १४६

हिंदी की ध्वनि : राजभागुर जभानगुर सलगं ।
उर्दू का वज़न : फायलातुन मफायलुन फेलुन ।

दृष्टि फेरे हुए किनारे से,
नाव लड़ती रहेगी धारे से ।

जो दिया उसने उस सहारे से,
मिलने जाते हैं अपने प्यारे से ।

क्या हुआ जो तेरी गली में लोग
चोर डाले गये हैं आरे से ।

प्रेम करना तुम्हें सिखा देते,
होते सुन्दर जो हम तुम्हारे-से ।

सामने उसके लग गई चुप-सी,
कहते कुछ बन पड़ा न प्यारे से ।

अब यहाँ तक तो बात पहुँची है,
वह बुलाने लगे इशारे से ।

हम तो मझधार ही से खेलेंगे,
तुम बोलाया करो किनारे से ।

चोट खाई हृदय पे आकसमात,
आँख में नाचते हैं तारे-से ।

तुमसे तो लाख दर्पणों में हैं,
कम मिलेंगे मगर हमारे-से ।

जाओ, ऊधव, गली लगो अपनी,
हमने देखे बहुत तुम्हारे - से ।

कुछ न सूझा तो कहके हर गंगा,
'भास्कर' ढह पड़े कगारे - से ।

ग़ज़ल : १४७

हिंदी की ध्वनि : राजभागुर राजभागुर राजभागुर राजभा ।
उर्दू का वज़न : फायलातुन फायलातुन फायलातुन फायलुन ।

बहते आँसू की शपथ दिन में न है कुछ रात में,
प्रेम करने का सुखद संयोग है बरसात में ।

तारे डूबे - चन्द्रमा भागा वह छिटकी थी प्रभा,
वह पधारे जिस समय दिन हो गया था रात में ।

पूर्ण भाषण में तुम्हारे हाय ऊधव वह कहाँ,
स्वाद जो मिलता था मनमोहन की आधी बात में ।

प्रेम जीवन दिव्य दर्शन चक्षु नव जिह्वा नई,
जानें क्या-क्या मिलता है सौंदर्य के उतपात में ।

धूप में झिटका जो भीगे केशों को चपला ने आज,
तृप्ति बरसी सृष्टि पर अंबर से उलकापात में ।

एक उस सौंदर्यवाले की छटा को छोड़कर,
कौन देगा साथ इस नीरस अंधेरी रात में ।

इतना तो बतला दो इस स्वर्णिम यवनिका के उधर,
तुम अकेले हो कि जोड़ी है छिपी अज्ञात में।

यह सुकोमलता अरे भगवान ! हे परमात्मा,
गात नील। पड़ गया इक फूल के आघात में।

'भास्कर' यह फूल थोड़े ही हैं इनसे मन बचाओ,
चोर हैं सब और लगे हैं अपनी - अपनी घात में।

★

ग़ज़ल : १४८

हिंदी की ध्वनि : सलगं सलगं सलगं सलगं सलगं सलगं सलगं सलगं।
उर्दू का वज़न : फेलुन फेलुन फेलुन फेलुन फेलुन फेलुन फेलुन फेलुन।

चम्पा कुन्द चमेली देखा जूही देखा बेला देखा,
अंग अंग उस छवि का अनुपम रोम रोम अलबेला देखा।

नैया उलटी जाती थी तब माझी भी घबराया-सा था,
दुख की नद्दी की लहरों का ऐसा भी इक रेला देखा।

लड़ गईं बीच आँगन में आँखें और लड़ा कीं जैसे उस क्षण,
उसने हमें अकेला देखा हमने उसे अकेला देखा।

जिस-जिस दिशि वह रूप-लता जाती थी जग जाता था उधर,
मंत्र-मुग्ध से सब-के-सब थे सबको उसका चेला देखा।

काल-चक्र से कौन बचा है क्या इच्छा क्या कुनबा कोई,
अब सन्नाटा देख रहे हैं जब मेला था मेला देखा।

हम तो भिक्षुक उसके हैं जो बे माँगे दे देता है सब,
जग वालों के द्वारे हमने प्राय: बड़ा झमेला देखा।

तुम हमको बतलाओ 'भास्कर' इस जग का क्या तथ्य है पाया,
तुमने कण-कण छाना इसका सब कुछ जाना, झेला देखा।

ग़ज़ल : १४८

हिंदी की ध्वनि : यमातागुर यमातागुर यमातागुर यमातागुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

न आते पास तेरे यदि अलग रहना सरल होता,
तुझे ही घर बुला लेते जो इतना आत्मबल होता।

तेरा अंबर भी छू लेता जो रसते में सरल होता,
मरण जीवन पथिक का जो भी होता सब सफल होता।

मगर जीवन को क्या कहिये नहीं जिसका ठिकाना है,
प्रभू दर्शन तो निश्चित था न होता आज कल होता।

कदाचित तुम जो हँस देते तो मन मेरा न मुरझाता,
तुम्हारे मन के ऐसा यह भी इक मुकुलित कमल होता।

विकलता से उलझने को अभी तो मैं ही बैठा हूँ,
निमिष-भर को भी जीवन-प्राण तू कैसे विकल होता।

सिमट आतीं उसी में सारी संसृति की सभी निधियाँ,
मिलन के काल का विस्तार चाहे एक पल होता।

कृपा सौंदर्य की होती तो सुख होता बुढ़ापे में,
हृदय-वीणा की लहरी जो भी सुन लेता विकल होता ।

न फिरता बावलों की भाँति तेरा 'भास्कर' निशिदिन,
तुझे यदि देखता तो थम गया होता अचल होता ।

ग़ज़ल : १५०

हिंदी की ध्वनि : जभान सलगं जभान सलगं जभान सलगं जभान सलगं ।
उर्दू का वज़न : फऊलफेलुन फऊलफेलुन फऊलफेलुन फऊलफेलुन ।

हमें रुलाया उन्हें हँसाया क्षणिक भी आया अनंत आया,
जहाँ पे जैसी बहार देखी, वहाँ पे वैसा वसन्त आया ।

भ्रमर जलज ही में रात सोया कि छानकर दिग-दिगन्त आया,
जो आखों देखा वह कह रहा हूँ कमल खिला वह तुरन्त आया ।

युगों जगाने से ज्योति जागी तदपि यवनिका नहीं हटाई,
शलभ का लेकिन सुभाव देखो किरण को देखा तुरन्त देखा ।

खिला जो दीपक शिखा का यौवन यह वाक्य पूरा न कीजियेगा,
यही तो कहियेगा इसके आगे शलभ के जीवन का अंत आया ।

हृदय उमंगों से झूमता था पिपासा दृग से टपक रही थी,
पुकार लेकिन यही लगाई तुम्हारे द्वारे पे संत आया ।

सदा रहे हम सदा रहे तुम सदा रहा यह सुप्रेम बंधन,
बहक रहे हैं पुराण बकता न आदि पूछा न अंत आया ।

उड़ा-उड़ा के फटे बसन सब मदान्ध टोली में नृत्य करके,
तुम्हारा पागल भी कह रहा है वसन्त आया वसन्त आया ।

अनेकों बार इस समष्टि-भर में प्रभात में करवटें हैं बदलीं,
परन्तु मेरी - विरह निशा की निशाचरी का न अन्त आया ।

विरह-विपिन में अंगार लपटों का नग्न नाटक छिड़ा हुआ है,
जला के रख दी हमारी इच्छा बड़ा प्रभाकर वन्सत आया ।

कली चिटकने लगी उमँग कर सुमन बरसने लगे ललककर,
जहाँ हँसा वह स्वरूपवाला वहीं 'भास्कर' वसंत आया ।

ग़ज़ल : १५१

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाताल यमाताल राजभा ।
उर्दू का वज़न : मफ़ऊल मफाईल मफाईल फायलुन ।

दर्दीले प्रेम-गीत न गायें तो क्या करें,
अपनी व्यथा न उनको सुनायें तो क्या करें ।

दृग में समाके मन में समायें तो क्या करें,
फिर भी हमारे हाथ न आयें तो क्या करें ।

मधुबाले मधु से हम न नहायें तो क्या करें,
पीने से लाल डोरे न आयें तो क्या करें ।

सीधी ही दृष्टि वह जो लड़ायें तो क्या करें,
मुड़कर न देखें दायें या बायें तो क्या करें ।

रो - रोके आँख हम न बहायें तो क्या करें,
देखें उन्हें और देख न पायें तो क्या करें।

टूटा हुआ चषक है सुरा दूर, बाला दूर,
छाई हैं ऊदी - ऊदी घटायें तो क्या करें।

लज्जा वशीकरण का महामंत्र जानकर,
वह दृग न उठायें, न लड़ायें तो क्या करें।

मवहल समान रूप से दोनों ही हो चुके,
रूठें न वह औ, हम न मनायें तो क्या करें।

हैं चितवनों की डोर में बाँधे हुए हमें,
नाचें न जो वह नाच नचायें तो क्या करें।

अपने हैं, तेजवान हैं, सौंदर्यवान हैं,
वह 'भास्कर' जी हमको जलायें तो क्या करें।

ग़ज़ल : १५२

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाताल यमाताल राजभा।
उर्दू का वज़न : मफऊल मफाईल मफाईल फायलुन।

सौंदर्य और प्रेम की आराधना तो है,
कुछ भी न सही विश्व में यह भावना तो है।

यह प्रेम - सिंधु थाहना ही थाहना तो है,
उन चितवनों में डूबना ही डूबना तो है।

तेरा हृदय है धन्य तेरे नेत्र धन्य धन्य,
थोड़ी - सी इनमें मेरे लिये सान्त्वना तो है।

कैसे कहूँ कि मेरा हृदय स्वच्छ हो गया,
केवल तुम्हारे हेतु सही, कामना तो है।

नेत्रों में देख लीजिये मन क्यों टटोलिये,
इनमें भी वही रूप, वही कल्पना तो है।

छन - छन के आ रही है घटाओं के पार से,
शशि ओट में है उसकी, मगर ज्योत्स्ना तो है।

बलिहार जाऊँ नेत्र लड़ाने की बान पर
जग में हृदय - सुधार की संभावना तो है।

जिस आँच से तपता है यह त्रयलोक्य हे सखे,
मेरे हृदय में देख वही यातना तो है।

विरहाग्नि भी तेरी है चिताशायी 'भास्कर'
जल चैन से जल साथ में अर्धांगना तो है।

गजल : १५३

हिंदी की ध्वनि : ताराज यमाताल यमाताल राजभा।
उर्दू का वजन : मफऊल मफाईल मफाईल फायलुन।

प्राणों को लेके हलकी - सी चितवन प्रदान की,
मर्यादा फिर भी रखनी पड़ी उसके मान की।

दृग बंद करके देखने के हेतु मित्रवर,
कर डालो प्रेम छोड़ो कृपा ज्ञान - ध्यान की।

लेकिन न जोड़े जुड़ सके जीवन के दोनो छोर,
भगवान जानता है बड़ी खेंच - तान की।

मुझ पर ही यह कलंक नहीं जितने हैं यहाँ,
सब जोहते हैं दृष्टि उसी भाग्यवान की।

हम लेने - देने दोनो की विस्मृति में हैं महान,
लिखा नहीं जो पाई या जो वस्तु दान की।

उसके कैसी मधुर अलाप की कण-कण में गूँज उठी है,
गूँगों को घेरने लगी स्फूर्ति गान की।

तुम जानते हो प्रेम का सद्रूप 'भास्कर',
बस, एक यही बात कही तुमने ज्ञान की।

ग़ज़ल : १५४

हिंदी की ध्वनि : यमातारा यमातारा यमातारा यमातारा।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

नहीं भरते उसाँसें या हृदय थामा नहीं करते,
तुम्हारे प्रेम में बतलाओ ,तो हम क्या नहीं करते।

रुलाकर मुझको मेरे अश्रु तुम आँचल में लेते हो,
वह चाहे जो भी करते हो मगर अच्छा नहीं करते।

हमारे दुर्गुणों को वह भी तो दोहराया करते हैं,
हमारे सदगुणों का वह भी तो चरचा नहीं करते ।

हमारी प्रेम की प्रतिभा से वे दृग झेंप जाते हैं,
नहीं तो रूप मदमाते कभी लज्जा नहीं करते ।

चले जाओ न आओ फिर यह तो स्वीकार है हमको,
मगर परदा जो करते हो यही अच्छा नहीं करते ।

उठाकर सुख से देखो फिर पहन लो अपने केशों में,
हृदय इक फूल है यों पाँव से रौंदा नहीं करते ।

तुम्हीं हो सबसे सुन्दर, मान, लो यह ब्रह्म - वाणी है,
रसिक की बात पर सज्जन कभी शंका नहीं करते ।

पड़ा है एक से इक दानी-मानी विश्व में, लेकिन
तुम्हारे द्वार के अतिरिक्त हम भिक्षा नहीं करते ।

जो होना है, वह हो जाये, उसे मेरा निमंत्रण है,
रसिक जन प्रेम के परिणाम की चिंता नहीं करते ।

कोई हो देखनेवाला तो देखे उनको कण - कण में,
हमीं धोखे में हैं वह 'भास्कर' परदा नहीं करते ।

★

ग़ज़ल : १५५

हिंदी की ध्वनि : यमातारा यमातारा यमातारा यमातारा ।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन ।

किया करता था दर्शन छबियों का आँखों ही के बल पर,
सो वह भी हो गईं बलिहार उन नैनों के काजल पर ।

कमल है कीच में लेकिन किसी की दृष्टि के बल पर,
असंभव कृत्य धरती के किया करता है वह जल पर ।

उन्हें देखा तो विसमय हो गया, सोचा कि वह हैं या
कलाधर मोम को तजकर उतर आया धरातल पर ।

यह दुख के तप्त मैले अश्रु हैं तारे नहीं कोई,
इन्हें स्थान क्यों दें आप अपने स्वच्छ आँचल पर ।

दहकते अश्रु यह जलते हृदय को ठंडा करते हैं,
कलेजे से लगा लेना अगर रुक जायँ आँचल पर ।

अरे सौंदर्यवालों कर लो त्रासें जितना पौरुष है,
मगर सुख पा नहीं सकते उठाकर हाथ निर्बल पर ।

उनींदे नेत्रों में तेवरियों की झाँकियाँ मत हर,
कि जैसे हो रहा है बिजलियों का नृत्य बादल पर ।

अकड़ता फिरता हूँ चारों दिशा में बे प्रयोजन मैं,
कि अब तो जम गया निश्चय मेरा सौंदर्य-संबल पर ।

इधर संसार मेरा ध्वंस होता था उधर उनके
लगी थी नींद, डोरे उभरे आते थे दृगांचल पर ।

हृदय रौंदा लो अब तुम 'भास्कर' उस छवि के चरणों से,
तरस खाना नहीं अच्छा है इस भीषण महा खल पर।

ग़ज़ल : १५६

हिंदी की ध्वनि : यमातारा यमातारा यमातारा यमातारा।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

उठी चितवन किधर को रूप के मद से विकल होकर,
गिरेगी किसके ऊपर आज यह चपला चपल होकर।

उन्हें नींद आ गई अब धृष्टता है आगे कुछ कहना,
कठिनतम हो गईं कठिनाइयाँ मेरी सरल होकर।

न मदिरा की न शोणित की न जल की धार मधुबाले,
किसी का रूप रग-रग में प्रवाहित है तरल होकर।

किया हमने न आँखें चार उस सौंदर्यवालें से,
तो चितवन की परख में क्या किया हमने सफल होकर।

उठाये फिर न उट्ठूंगा किसी भी भाँति कोई से,
अगर बैठा किसी दिन राह में तेरी अटल होकर।

भगा देते हैं पास आया हुआ सौंदर्य हाथों से,
न जाने केश बदला लेते हैं कबका धवल होकर।

फिरा ली तू ने ही जब दृष्टि अपनी हमसे मधुबाले,
तो क्या आश्चर्य हमको रह गया अमृत गरल होकर।

तिरस्कृत हर ठिकाने से हुए तो अब यह निश्चित है,
दिखायेंगे किसी के प्रेम में हम अब सफल होकर।

यह भारतवर्ष तुम बिन 'भास्कर' सुना नहीं होगा,
रहोगे तुम यहाँ मरकर भी हिन्दी की ग़ज़ल होकर।

ग़ज़ल : १५७

हिंदी की ध्वनि : यमातागुर यमातागुर यमातागुर यमातागुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

तुम्हीं ने बन्द कीं आखें हम इतना जान लेते हैं,
हम अंधे ही सही स्पर्श तो पहिचान लेते हैं।

चढ़ाकर तेवरियाँ वह मुख पे घूँघट तान लेते हैं,
न जाने कैसे वे ललचाई चितवन जान लेते हैं।

उड़ाते हैं हँसी मेरी भी सबके सामने प्रायः,
मगर सन्नाटा जब होता है मेरी मान लेते हैं।

हठीले तो वह ऐसे हैं कि संसृत चाहे मिट जाये,
मगर वह करके रहते हैं जो मन में ठान लेते हैं।

यवनिका में ही बैठे-बैठे वे रसिकों को कसते हैं,
हृदय क्या, नेत्र क्या वह आत्मा तक छान लेते हैं।

इस आदर और शिष्टाचार से बिसमय यह होता है
कि हमको दान देते हैं कि हमसे दान लेते हैं।

बड़े भोले झलकते हैं वह जब यह कहके हँसते हैं,
सभी की बात सुनते हैं सभी की मान लेते हैं।

हृदय लेते हैं प्रायः संगठित वैभव प्रदर्शन से,
कि संसृत भर के मन की वह सभी कुछ जान लेते हैं।

रसिक का बावलापन स्रोत है वेदांत वाणी का,
उसी की मूर्खताओं से तो ज्ञानी ज्ञान लेते हैं।

उड़ें हम 'भास्कर' तैरें कि रेंगे या चलें घुटनों,
मगर हम जा पहुँचते हैं जहाँ की ठान लेते हैं।

*

ग़ज़ल : १५८

हिंदी की ध्वनि : यमातागुर यमातागुर यमातागुर यमातागुर।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन।

सुमन बरसाना दूभर है तो अंगारे उगल जाये,
वह नाहीं कह दे मुझसे तो भी मन मेरा बहल जाये।

हृदय उनका उन्हीं के रूप-यौवन पर मचल जाये,
पटक दें देखकर दर्पण उन्हें सौंदर्य खल जाये।

रँग उट्ठे प्रेम के रँग प्रेम के साँचे में ढल ज़ाये,
जो तुमको प्रेम हो जाये तो यह संसृत सँभल जाये।

हृदय मेरा है भावुक और वह सौंदर्य ज्योतिर्मय,
किसी दिन कौन जाने बे जलाये दीप जल जाये।

बड़ा आनन्द आता है जो चितवन चार होती है,
हृदय में लग के काँटा जैसे चुपके से निकल जाये।

हृदय को चीरकर रख लें दृगों को झाड़कर भर लें,
चुरा लें तेरी चितवन हम किसी दिन बस जो चल जाये।

हृदय मेरा भी प्राणी है तुम्हारे रूप प्रांगण का,
मगर मरजी तुम्हारी है अगर चाहो तो पल जाये।

लड़ाई आँख भी जिसने नहीं हमसे समक्ष उसके,
मिलन की बात ऊँची है बहुत संभव है टल जाये।

उसी नौरंग उपवन में वसंत आया है रच - रचकर,
वहीं पर 'भास्कर' जी सैल करने आजकल जाये।

*

ग़ज़ल : १५८

हिंदी की ध्वनि : जभान सलगं जभान सलगं जभान सलगं जभान सलगं।
उर्दू का वजन : फऊलफेलुन फऊलफेलुन फऊलफेलुन फऊलफेलुन।

अभी तो केवल लड़ीं हैं आँखें कोई समस्या गहन नहीं है,
मगर प्रतीक्षा बढ़ी है इतनी कि आँख लगना सहन नहीं है।

बुला के मुझको कहा हँसो अब रुदन तुम्हारा सहन नहीं है,
जहाँ तुम आये हो इस जगह तक बड़े बड़ों का गमन नहीं है।

नयन नयन से उलझ रहे हैं हृदय हृदय से सुलझ रहा है,
मगर यह विस्मय बना हुआ है कि जैसे उनसे मिलन नहीं है।

हमारे मुख की बनावटें ही निछावरें हैं मलीन छवि की,
जिसे कि रोना समझ रहे हो हँसी है प्रियवर रुदन नहीं है।

स्वरूप रस्किन छटा से रच-रच सुमन सुनन्दन लहर रहा है,
हृदय में मेरे वसन्त-रितु है चिता नहीं है हवन नहीं है।

गगन के वज्रों से क्या कठिन है जगत की विपदा से क्या है दुष्कर,
यह पूछो, लेकिन इधर न देखो तुम्हारी चितवन सहन नहीं है।

गली में उसकी न कोई बोले न दृष्टि भरकर उधर को देखे,
झुकाके सिर को उसासें भरिये कठोरता का चलन नहीं है।

युगल मिलन में धरा ही क्या है युगल विरह की बहार लूटें,
जिधर को चितवन नहीं तुम्हारी उधर हमारा भी मन नहीं है।

कृपणता कैसी यह रूपवाले निहाल कर दे जगत को अपने,
दृगों में तेरे भरी है वसुधा तदपि लुटाना सहन नहीं है।

किसे झुकाया है हमने मस्तक यह प्रश्न अनुचित है 'भास्कर'जी,
तुम्हें नहीं है उन्हें नहीं है किसे हमारा नमन नहीं है।

★

ग़ज़ल : १६०

हिंदी की ध्वनि : यमातागुर यमातागुर यमातागुर यमाता।
उर्दू का वज़न : मफाईलुन मफाईलुन मफाईलुन मफऊलुन।

हृदय में रखता हूँ सौंदर्य के प्रणय की बात,
किसी से कहता है कोई कभी हृदय की बात।

रसिक से, डाल के संकट, क्षमा के देके वचन,
स्वरूपवाले तो कहलाते हैं विनय की बात।

बताइये तो सही नर्क है कहाँ भगत मनहर,
छिड़ी कहाँ नहीं है आपके प्रणय की बात।

सुमन को लाख झकोरा छुड़ा न पाई सुमन,
बिगड़ के रह गई बनती हुई मलय की बात।

त्रिकाल प्रेम के पुरुषार्थ का ही किंकर है,
रसिक के सामने कुछ भी नहीं समय की बात।

तुम्हारे दृग में हँसी और हमारे गर्म आँसू,
इसी को कहते हैं मनहर समय-समय की बात।

स्वरूपवाला खेलाड़ी है जय उसी की है,
कहाँ अनाड़ी रसिक और कहाँ विजय की बात।

वही बिखरना मनाना वही दृगों की लड़न,
वही बिरह की समस्या वही प्रणय की बात।

दृगों से प्रेम - घटा टूटकर बरसती है,
हृदय में झूमकर उठती है जब प्रणय की बात।

किसी से प्रेम न कर बैठना कहीं देखो,
यही तो 'भास्कर' इस जग में है प्रलय की बात।

★

ग़ज़ल : १६१

हिंदी की ध्वनि : ताराज राजभाल यमाताल यमाता।
उर्दू का वज़न : मफऊल फायलात मफाईल फऊलुन।

कविता करायेगी यह लिखित हो के रहेगी,
छिप - छिपके छेड़ - छाड़ विदित हो के रहेगी।

यदि आँख - भर के देख दूँ तो मोम की तो क्या,
पत्थर की मूर्ति हो, तो द्रवित हो के रहेगी।

उन चितवनों से लड़के जो करती है पुण्य तो,
चितवन रसिक की दोष-रहित हो के रहेगी।

घुँघराली अलकों में जो यह संसार फँस गया,
तो इसकी व्यवस्था भी उचित हो के रहेगी।

चार आँखों के लड़ने की यह छोटी-सी तुच्छ बात,
पाकर समय अथाह अमित हो के रहेगी।

तुम रोग - रहित चाहते हो यह वसुंधरा,
यह प्रेम - महारोग - ग्रसित हो के रहेगी।

दर्पण विलासी ! मुख को बनाने की तेरी बान,
प्रतिबिंब के ऊपर भी घटित हो के रहेगी।

यह कामना कुरूप, कुटिल, क्रूर, कर्कशा,
सौंदर्य ने चाहा तो ललित हो के रहेगी।

खल जायगी यह प्रेम - कहानी हमारी मित्र,
भूलेगी नहीं, आत्मलिखित होके रहेगी।

तुमने हृदय लिया है तो यह उपाय भी ले लो,
मेरे तो पास अब यह दुखित हो के रहेगी।

काया का कौन गर्व यदपि है तो प्रेम का,
काया हो 'भास्कर'जी दलित हो के रहेगी।

★